मक्सिम गोर्की

दुश्मन

तीन अंकों का नाटक

अनुवादक : 'मधु'
चित्रकार : व्ला० नायदेन्को

МАКСИМ ГОРЬКИЙ
ВРАГИ
пьеса в трех действиях

पात्र-सूची

ज़ख़ार बार्दिन, उम्र पैतालीस साल।

पोलीना, उसकी पत्नी, उम्र क़रीब चालीस साल।

याकोव बार्दिन, उम्र चालीस साल।

तत्याना, उसकी पत्नी, उम्र अट्ठाईस साल, अभिनेत्री।

नाद्या, पोलीना की भाँजी, उम्र अठारह साल।

पेचेनेगोव, अवकाश-प्राप्त जनरल, जख़ार बार्दिन और याकोव बार्दिन का मामा।

मिख़ाईल स्क्रोबोतोव, उम्र चालीस साल, एक व्यापारी, ज़ख़ार बार्दिन और याकोव बार्दिन का हिस्सेदार।

क्लेओपात्रा, उसकी पत्नी, उम्र तीस साल।

निकोलाई स्क्रोबोतोव, मिख़ाईल स्क्रोबोतोव का भाई, उम्र पैंतीस साल, सरकारी वकील।

सिन्त्सोव, क्लर्क।

पोलोगी, क्लर्क।

कोन, पुराना फ़ौजी।

ग्रेकोव
लेव्शिन
यागोदिन } कामगार।
र्याब्त्सोव
अकीमोव

अग्राफ़ेना, घर की देख-भाल करनेवाली नौकरानी।

बोबोयेदोव, फ़ौजी पुलिस का कप्तान।

क्वाच, कारपोरल (फ़ौज का छोटा अधिकारी)।

फौजी लेफ़्टीनेन्ट।

पुलिस-अध्यक्ष।

पुलिसमैन।

फ़ौजी पुलिसवाले, सिपाही, कामगार, क्लर्क और नौकर-चाकर।

अंक पहला

बड़े बड़े और पुराने लाइम के पेड़ों से आच्छादित बगीचा। बगीचे के बीचोंबीच एक सफ़ेद सेनाई तम्बू। दायीं ओर वृक्षों के नीचे एक चबूतरा बना हुआ है और उसके सामने एक मेज़ है। बायीं ओर के वृक्षों के नीचे नाश्ते की लम्बी मेज़ लगी है। एक छोटे से समोवर में पानी उबल रहा है। मेज़ के चारों ओर खपची की कुर्सियाँ रखी हैं। अग्राफ़ेना कॉफ़ी तैयार कर रही है। कोन एक वृक्ष के नीचे खड़ा पाइप पीता हुआ पोलोगी से बातें कर रहा है।

पोलोगी (भद्दे और अटपटे संकेत करते हुए) : . . . बेशक, बेशक, तुम मुझसे बेहतर जानते हो। मेरी क्या पूछ है? बहुत ही मामूली आदमी हूँ मैं तो! मगर हर खीरा मैंने अपने हाथों से उगाया है। और अगर मेरी इजाजत के बिना कोई उसे चुराता है, तो उसे इसका जवाब देना ही होगा।

कोन (क्षुब्ध भाव से) : कोई तुमसे इजाज़त लेने से तो रहा!

पोलोगी (हाथ छाती पर रखते हुए): मगर सुनो! अगर कोई तुम्हारा माल चुरा लेता है, तो तुम्हें क़ानून की शरण में जाने का अधिकार तो प्राप्त है न?

कोन: हाँ हाँ, जाओ क़ानून की शरण में—तुम्हें मना ही कौन करता है! आज वे तुम्हारे खीरे ले गये, कल सिर ले जायेंगे... तुम बैठे रोते रहना क़ानून को!

पोलोगी: यह तो तुमने अजीब बात कही... अजीब ही नहीं, ख़तरनाक भी! तुम एक रिटायर फ़ौजी हो, सेंट-जार्ज का पदक लगाये हो और फिर तुम्हीं क़ानून की इस तरह खिल्ली उड़ाते हो!

कोन: दुनिया में क़ानून नाम की कोई चीज़ नहीं है। है तो सिर्फ़ हुक्म ही हुक्म। "बायें मुड़ो! आगे बढ़ो!" और बस, तुम चल देते हो। फिर जब हुक्म मिलता है—"ठहर जाओ!" तो तुम ठहर जाते हो।

अग्राफ़ेना: कोन! अच्छा हो, अगर तुम यह पाइप पीना बन्द कर दो। इसके धुएं से पत्ते बुरी तरह मुरझा जाते है...

पोलोगी: अगर उन लोगों ने खीरे इसलिए चुराये कि वे भूखे थे, तब तो मैं उन्हें माफ़ भी कर सकता हूँ... भूख तो इनसान को बड़े बड़े पाप करने के लिए मजबूर कर सकती है। यह कहना भी ग़लत न होगा कि बहुत सी नीचताओं की जड़ में, बहुत से जुर्मो की तह में यही पेट की आग होती है। इनसान जब भूखा है, तब तो ख़ैर...

कोन: तुम भूख की बात कर रहे हो, मगर देवता लोग तो इस मुसीबत से आज़ाद हैं। फिर भी शैतान को चैन न पड़ा। उसने भगवान् के ख़िलाफ़ अपना झण्डा खड़ा कर दिया था...

पोलोगी: **(ख़ुश होकर):** इसे तो मैं सिर्फ़ शरारत करना ही कहूँगा!..

(याकोव बार्दिन प्रवेश करता है। वह धीरे धीरे बोल रहा है, मानो अपने ही शब्द सुन रहा हो। पोलोगी झुककर प्रणाम करता है। कोन लापरवाही से फ़ौजी सलामी देता है)

याकोव: हलो! यहाँ खड़े क्या कर रहे हो?

पोलोगी : ज़ख़ार इवानोविच के पास एक तुच्छ सी प्रार्थना लेकर आया हूँ...

अग्राफ़ेना : प्रार्थना-व्रार्थना कुछ नहीं, हय शिकायत करने आया है। पिछली रात कारख़ाने के कुछ लोगों ने इसके खीरे चुरा लिये हैं।

याकोव : यह बात है?.. तब तो तुम्हें मेरे भाई को ज़रूर बनाना चाहिए...

पोलोगी : आपने ठीक फ़रमाया... मैं उन्हीके पास जा रहा हूँ।

कोन (चिढ़ते हुए) : मुझे तुम कहीं जाते-वाते नज़र नहीं आते। यहीं खड़े बड़बड़ाये जा रहे हो।

पोलोगी : बड़बड़ा रहा हूँ, तो तुम्हारा क्या ले रहा हूँ या कुछ ले रहा हूँ? अगर तुम कोई अख़बार वग़ैरह पढ़ते होते, तब भी कोई बात थी। तब भी तुम कह सकते थे कि मैं तुम्हें परेशान कर रहा हूँ।

याकोव : कोन, मैं तुमसे कोई बात करना चाहता हूँ...

कोन (याकोव की तरफ़ जाते हुए) : पोलोगी, तुम लालची कुत्ते हो... झगड़ालू और कानून के साले हो!

पोलोगी : बस, बस, अपनी ज़बान गन्दी मत करो... शिकायतें करने के लिए ही तो यह ज़बान मिली है...

अग्राफ़ेना : चुप रहो, चुप रहो, पोलोगी... तुम आदमी नहीं, मच्छर हो...

याकोव (कोन से) : यह यहाँ खड़ा-खड़ा क्या कर रहा है? जाता क्यों नहीं?..

पोलोगी (अग्राफ़ेना से) : अगर तुम्हें मेरी बातें कड़वी लगती हैं, बुरी लगती है, तो मैं अब चुप रहा करूँगा। **(वह वृक्षों को छूता हुआ धीरे धीरे बाहर चला जाता है)**

याकोव (व्यग्रता से): हाँ तो, कोन!.. लगता है, कल फिर मैंने किसी के दिल को ठेस पहुँचायी है।

कोन (मुस्कराकर): लगता तो ऐसा ही है।

याकोव (इधर-उधर टहलते हुए): हूँ... बड़ी अजीब बात है! जब मुझे चढ़ी होती है, तभी मैं लोगों की बेइज़्ज़ती क्यों करता हूँ?

कोन: कभी कभी लोग पीकर बेहतर इनसान बन जाते हैं। बिना पिये उनमें वह बात नहीं आती, शराब की लहर में वे बड़े दिलेर हो जाते हैं—किसी से भी डरते-दबते नहीं हैं। दूसरों की बात तो एक तरफ़, अपने को भी माफ़ नहीं करते... हमारी कम्पनी में एक झक्की होता था। वह जब बिना पिये होता, तो बेकार बक-बक करता, अफ़सरों के पास हमारी चुगलियाँ खाता और लोगों से लड़ाई-झगड़ा मोल लेता फिरता। जब पीकर झूमने लगता, तो एक भोले-भाले बच्चे की तरह चिल्लाता—"भाइयो! मैं भी तुम्हारे जैसा इनसान हूँ। मुझपर थूको, मेरे मुँह पर थूको, भाइयो!" और कुछ लोग सचमुच उसके मुँह पर थूकते भी।

याकोव: कल मैंने किसकी टोपी उछाली थी?

कोन: सरकारी वकील की। आपने उसे ख़रदिमाग़ और गधा कहा था। फिर आपने उससे यह भी कहा था कि डायरेक्टर की बीवी के ढेरों प्रेमी हैं।

याकोव: ज़रा ग़ौर करो... भला मुझे क्या लेना-देना था इस बात से? होते रहें उसके चाहे जितने भी प्रेमी!

कोन: बिल्कुल ठीक। और फिर...

याकोव: बस, बस, कोन! इतना ही काफ़ी है... कितने लोगों पर मैंने कीचड़ उछाला, मैं यह नहीं जानना चाहता... बुरा हो कम्बख़्त वोदका का। यह उसी की मेहरबानी है... (**मेज़ के पास जाकर बोतलों को घूरता है। फिर एक बड़े गिलास में शराब डालकर धीरे**

धीरे पीता है। अग्राफ़ेना उसे कनखियों से देखती हुई आह भरती है) तुम्हें मेरे लिए कुछ अफ़सोस होता है न?

अग्राफ़ेना: अफ़सोस ही नहीं, रहम भी आता है.. तुम सभी के साथ बड़ी सरलता से, बड़ा सीधा-सादा बर्ताव करते हो। कुलीन लोगों जैसी अकड़ तो तुम्हें छू ही नहीं गयी...

याकोव: मगर इस कोन को तो किसी पर रहम नहीं आता, यह तो बस फ़लसफ़ा छाँटा करता है। बुरे दिनों के काफ़ी झटके लगने के बाद ही इनसान की अक़्ल ठिकाने आती है। क्यों, ठीक है न, कोन? (**तम्बू में से जनरल चिल्लाता है**–"ए, कोन!") मेरे ख़्याल में तुम ज़माने के हाथों काफ़ी सताये गये हो, इसीलिए इतने समझदार हो गये हो।

कोन (जाते हुए): मेरी अक़्ल गुम करने के लिए जनरल साहब के दर्शन ही काफ़ी हैं...

जनरल (तम्बू से बाहर आकर): कोन, चलो नदी की तरफ़! ख़ूब मज़ा रहेगा।

(वे बगीचे में ग़ायब हो जाते हैं)

याकोव (कुर्सी में आगे-पीछे झूलते हुए): क्या मेरी बीवी अभी तक सो रही है?

अग्राफ़ेना: नहीं, वह तो तैर भी चुकी है।

याकोव: तो तुम्हें मुझपर रहम आता है,–ठीक है न?

अग्राफ़ेना: तुम्हें अपना इलाज करवाना चाहिए।

याकोव: अच्छा, दो घूँट कुगनाक के तो डाल दो।

अग्राफ़ेना: याकोव इवानोविच, मैं सोचती हूँ कि मुझे तुम्हें शराब न देनी चाहिए।

याकोव : क्यों न देनी चाहिए? दो घूँट शराब न पीने से तो मेरा कुछ भला होने से रहा।

(अग्राफ़ेना निःश्वास छोड़ते हुए कुगनाक का गिलास भर देती है। मिख़ाईल स्क्रोबोतोव ग़ुस्से में और चिढ़ा हुआ सा अन्दर आता है। वह घबराया घबराया सा अपनी नोकदार काली दाढ़ी खींचता है और हाथ में पकड़े हुए अपने टोप के साथ खिलवाड़ करता है)

मिख़ाईल : ज़खार इवानोविच जाग गया? शायद अभी नहीं? यह तो मुझे अपने आप ही समझ लेना चाहिए था! अच्छा तो लाओ... कुछ ठण्डा दूध है क्या? धन्यवाद। नमस्ते, याकोव इवानोविच!.. नयी ख़बर सुनी?.. वे शैतान के चर्खे अब इस बात पर अड़े हुए हैं कि मैं फ़ोरमैन दिच्कोव को गोली मार दूँ!.. वे धमकी देते हैं कि मेरे ऐसा **न** करने पर काम बन्द कर देंगे... बेड़ा ग़र्क़ हो इन शैतानों का...

याकोव : तो फिर सोच क्या रहे हो? मार दो उसे गोली।

मिख़ाईल : यह कह देना तो बड़ी आसान बात है। पर देखो न, बात दर असल दूसरी ही है! बात यह है कि इस तरह उनकी धमकियों के सामने सिर झुकाने से वे और भी सिर पर चढ़ जायेंगे। आज वे इस बात की माँग करते हैं कि मैं फ़ोरमैन को गोली मार दूँ, तो कल यह माँग करेंगे कि उनके मन-बहलाव के लिए मैं ख़ुद फाँसी के फँदे से झूल जाऊँ...

याकोव (धीरे धीरे) : तुम क्या समझते हो कि वे उस कल का इन्तज़ार करेंगे?

मिख़ाईल : तुम तो मज़ाक़ में बात उड़ा रहे हो! ज़रा वास्ता तो डालकर देखो इन शरीफ़ज़ादों से—पूरी फ़ौज की फ़ौज है! हज़ार के क़रीब! और फिर इनके दिमाग़ भी तो ठिकाने नहीं रहे। सभी तरह के लोगों ने इनके दिमाग़ बिगाड़ने में मदद दी है। उनमें तुम्हारे उदारमना भाई साहब भी शामिल हैं और वे घनचक्कर भी, जो इन्हें

भड़काने के लिए इश्तिहार लिखते हैं ... (**अपनी घड़ी पर नज़र डालता है**) दस बजनेवाले हैं। वे लोग दोपहर के खाने के बाद अपना तमाशा शुरू करनेवाले हैं ... याकोव इवानोविच, हक़ीक़त तो यह है कि मेरा छुट्टी पर जाना बहुत बुरा साबित हुआ है। तुम्हारे भाई ने तो सब कुछ चौपट कर डाला है ... उसने अपनी ढीली-ढाली नीति से मज़दूरों को बिल्कुल ही बिगाड़ दिया है। वे बिल्कुल ही हाथों से निकल गये हैं...

(**दायीं ओर से सिन्त्सोव आता है। उसकी उम्र लगभग तीस साल है। उसका चेहरा और व्यक्तित्व बड़ा शान्त और प्रभावशाली है**)

सिन्त्सोव : मिख़ाईल वसील्येविच, दफ़्तर में मज़दूरों के कुछ प्रतिनिधि आये हैं। वे कारख़ाने के मालिक से मिलने की माँग कर रहे हैं।

मिख़ाईल : माँग कर रहे हैं? मेहरबानी करके उन्हें जहन्नुम का रास्ता दिखा आओ! (**बायीं ओर से पोलीना आती है**) माफ़ कीजियेगा, पोलीना दि्मत्रीयेव्ना!

पोलीना (प्रसन्न मुद्रा में) : डाँटने-डपटने की तो तुम्हें आदत ही है। मगर इस वक़्त इसकी क्या ज़रूरत आ पड़ी?

मिख़ाईल : ये सर्वहारा ही कोई न कोई मुसीबत खड़ी किये रहते हैं! .. अब वे माँग करते हैं!.. पहले हाथ जोड़कर प्रार्थना करते थे...

पोलीना : मुझे यह तो कहना ही होगा कि तुम लोगों के साथ काफ़ी सख़्ती से पेश आते हो!

मिख़ाईल (हाथों से अटपटा सा संकेत करते हुए) : हुई न बात!

सिन्त्सोव : प्रतिनिधियों से क्या कहूँ?

मिख़ाईल : कहना क्या है, इन्तज़ार करने दो... तुम जाओ!

(**सिन्त्सोव धीरे धीरे बाहर जाता है**)

पोलीना : इस आदमी का चेहरा काफ़ी दिलचस्प है। क्या बहुत दिनों से हमारे पास काम कर रहा है?

मिख़ाईल : लगभग एक बरस से...

पोलीना : देखने में तो ख़ानदानी लगता है। कौन है यह?

मिख़ाईल (कंधे बिचकाकर) : चालीस रूबल मासिक पाता है। **(घड़ी पर नज़र डालता है, आह भरता है और इधर-उधर देखता है। वृक्ष के नीचे खड़े हुए पोलोगी पर नज़र जा पड़ता है)** तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मुझसे कुछ काम है क्या?

पोलोगी : नहीं, मिख़ाईल वसील्येविच। मैं तो ज़ख़ार इवानोविच से मिलने आया हूँ...

मिख़ाईल : क्या काम है?

पोलोगी : सम्पत्ति-अधिकारों के उल्लंघन से सम्बन्धित कुछ काम है...

मिख़ाईल (पोलीना से) : यह अभी कुछ समय से ही हमारे पास नौकर हुआ है। इसे बाग़बानी का शौक़ है। इसे इस बात का पक्का विश्वास है कि तमाम दुनिया ने इसके ख़िलाफ़ साज़िश कर रखी है। दुनिया की हर चीज़ से इसे ख़तरा है—सभी इसका बुरा करने पर कमर कसे है। हर चीज़ से इसे चिढ़ महसूस होती है—सूरज से, इंगलैण्ड से, नयी मशीनों से, मेंढकों से...

पोलोगी (मुस्कराते हुए) : माफ़ कीजियेगा, मेंढकों की टर्र-टर्र से तो सभी का नाक में दम हो जाता है...

मिख़ाईल : जाओ, जाओ, दफ़्तर में जाओ! यह तुम्हें क्या बुरी आदत है—काम-काज बीच में ही छोड़कर चले आते हो शिकायत करने? मैं यह बर्दाश्त नहीं करूँगा... चलते-फिरते नज़र आओ!

(पोलोगी झुककर प्रणाम करता है और बाहर चला जाता है। पोलीना मुस्कराती है और उसे लोर्नेट्टे[*] से देखती है)

---

[*] लोर्नेट्टे—एक कमानी का चश्मा।—सम्पा०

पौलीना : बहुत ही सख़्ती से पेश आते हो तुम तो! अच्छा-ख़ास। दिलचस्प आदमी है... मुझे ऐसा लगता है कि विदेशियों की तुलना में रूसी लोग अधिक मौलिक हैं।

मिख़ाईल : अगर तुम जंगली कहतीं, तो मैं तुम्हारी बात मान भी लेता। पन्द्रह बरस से मैं घास नहीं काट रहा हूँ—रात-दिन इन्हीं लोगों से वास्ता है... अब मैं इनकी रग-रग पहचानता हूं। महान् रूसी लोगों का जो रूप ढोंगी पादरी-लेखकों ने प्रस्तुत किया है, वह अब मै अच्छी तरह समझता हूँ।

पोलीना : पादरी-लेखकों ने?

मिख़ाईल : हाँ, हाँ, यही तुम्हारे चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्यूबोव, ज़्लातोव्रात्स्की, उस्पेन्स्की वग़ैरह... (**घड़ी पर नज़र डालता है**) ज़ख़ार इवानोविच तो बहुत ही देर लगा रहा है!

पोलीना : जानते हो, उन्हें क्यों देर हो रही है? तुम्हारे भाई के साथ पिछली रात की शतरंज की बाज़ी ख़त्म कर रहे हैं।

मिख़ाईल : और उधर वे लोग दोपहर के खाने के बाद काम बन्द करने की धमकी दे रहे हैं... मेरी बात पत्थर की लकीर समझना—इस रूस का कभी कुछ नही बन सकेगा! सदा यही बेढंगी चाल रहेगी। यह तो गड़बड़-घुटाले का देश है! काम करते तो लोगों को जैसे मौत आती है, यह तो इनके ख़ून में ही नहीं है। अनुशासन नाम की कोई चीज़ ये जानते ही नहीं... क़ानून को ये अंगूठा दिखाते हैं...

पोलीना : मगर ऐसा होना तो स्वाभाविक ही है! जिस देश में कोई क़ानून ही न हो, वहाँ क़ानून की इज़्ज़त ही क्या हो सकती है? यह हमारी आपस की बात है, हमारी सरकार...

मिख़ाईल : ओह, मैं किसी की सफ़ाई नहीं दे रहा हूँ! सरकार की भी नहीं। मिसाल के लिए अंग्रेज़ों को ले लो... (**ज़ख़ार बार्दिन और निकोलाई स्क्रोबोतोव अन्दर आते हैं**) किसी देश को बनाने के लिए

इससे अच्छा मसाला किसी दूसरी जगह नहीं मिल सकता। अंग्रेज़ लोग, सरकस के घोड़ों की तरह, क़ानून के इशारों पर नाचते हैं। क़ानून तो उनकी नस-नस में, उनकी हड्डियों में रच-रम गया है ... नमस्ते, ज़ख़ार इवानोविच! हलो; निकोलाई! तुम्हारी उदार नीति ने जो नया गुल खिलाया है, मैं उसी के बारे में तुम्हें बताने आया हूँ। मज़दूर इस बात की माँग कर रहे हैं कि मैं फ़ोरमैन दिच्कोव को गोली मार दूँ मेरे ऐसा न करने पर वे दोपहर के खाने के बाद हड़ताल करने की धमकी दे रहे हैं ... क्यों, कैसी रही?

ज़ख़ार (माथे पर हाथ फेरते हुए): हूँ... दिच्कोव?.. यह वही हज़रत है न, जो हर वक़्त घूँसे ताने रहता है और लड़कियों के पीछे चक्कर काटा करता है?.. उसे तो ख़ैर हमें गोली मारनी ही पड़ेगी! यह तो बड़ी वाजिब बात है।

मिख़ाईल (बिगड़ते हुए): हे भगवान्। तुम कभी संजीदा भी हो पाते हो? यह सवाल इन्साफ़ का नहीं, कारोबार का है। न्याय-अन्याय के फ़ैसले निकोलाई को करने दीजिये। मैं यह दोहराये बिना नहीं रह सकता कि तुम्हारी न्याय-भावना व्यापार के लिए घातक है।

ज़ख़ार: मगर यह हो ही कैसे सकता है? ये तो आत्म-विरोधी बातें हैं!

पोलीना: मेरे होते हुए भी आप लोग व्यापार का रोना ले बैठे... और सो भी सवेरे-सवेरे...

मिख़ाईल: माफ़ कीजियेगा, मगर मैं मजबूर हूँ... मामला एक किनारे होना चाहिए। छुट्टी पर जाने से पहले कारख़ाना इस तरह मेरी मुट्ठी में था। **(मुट्ठी भींचता है)** क्या मजाल किसी की, जो चूँ तक भी कर जाता! इतवार के दिन खेल-कूद होना चाहिए, पढ़ना-पढ़ाना होना चाहिए—आप जानती ही है कि मै कभी इन चीजों के हक़ में न था। आज के हमारे हालात में मैं उन्हें बेकार समझता हूँ... ज्ञान की

ज्योति पाकर अन्धेरे में भटकते हुए रूसी लोगों के मन जगमगा उठें, सो तो होता नहीं – केवल सुलगने और धुआँ छोड़ने लगते हैं ...

निकोलाई : हमेशा शान्ति से बातचीत करनी चाहिए।

मिख़ाईल (मुश्किल से अपने पर क़ाबू पाते हुए) : नेक सलाह के लिए शुक्रिया। नसीहत तो तुम्हारी अच्छी है, मगर दुर्भाग्यवश मैं इसपर अमल नहीं कर सकता! ज़ख़ार इवानोविच, जिस मज़बूत ढाँचे के निर्माण में मैंने आठ बरस लगाये, तुम्हारी छः महीने की ढीली-ढाली नीति ने उसकी नींव हिलाकर रख दी। वे मुझे सिर-आँखों पर बिठाते थे। मुझे अपना मालिक समझते थे... अब तो बात ही दूसरी है, एक नहीं, अब दो मालिक हैं – एक अच्छा, एक बुरा। तुम तो ख़ैर अच्छे हो ही...

ज़ख़ार (परेशान होते हुए) : मगर... देखो न... मेरी तो समझ में ही कुछ नहीं आ रहा।

पोलीना : यह तुमने बड़ी अजीब बात कही मिख़ाईल वसील्येविच!

मिख़ाईल : मैं ऐसा कहने के लिए मजबूर हो गया हूँ... तुमने मेरी स्थिति बुरी तरह बिगाड़ दी है – मुझे बिल्कुल उल्लू बनाकर रख दिया है! पिछली बार जब यही सवाल उठा, तो मैंने मज़दूरों से साफ़ साफ़ कह दिया था कि कारख़ाना बन्द कर दूँगा, मगर दिच्कोव को काम से नहीं हटाऊँगा... उन्होंने मेरे तेवर देखे, तो घुटने टेक दिये। अब शुक्र के दिन, ज़ख़ार इवानोविच, तुमने मज़दूर ग्रेकोव से यह कह दिया कि दिच्कोव बड़ा अक्खड़ और बेहूदा आदमी है, और यह कि तुम उसे गोली मार देना चाहते हो...

ज़ख़ार (समझाते हुए) : मगर, मेरे भाई, वह भी तो लोगों को तंग करता है, उनके नाक में दम किये रहता है – किसी को चपत जमा, तो किसी को घूँसा। यक़ीनन हम इसकी इजाज़त नहीं दे सकते! हम युरोपियन हैं, सभ्य लोग हैं!

मिख़ाईल : मगर सब से पहले हम कारख़ाने के मालिक हैं! हर छुट्टी के दिन मज़दूर एक दूसरे की पिटाई करते हैं, करते रहें, — हमारा इससे क्या वास्ता? इन मज़दूरों को अच्छे तौर-तरीक़े, अच्छे सलीक़े सिखाने का काम फ़िलहाल तो तुम्हें छोड़ देना होगा। इस वक़्त उनके प्रतिनिधि दफ़्तर में बैठे हुए हैं — वे दिच्कोव को निकाल बाहर करने की माँग करेंगे। तुम्हारा क्या करने का इरादा है?

ज़ख़ार : क्या तुम यह समझते हो कि दिच्कोव के बिना हमारा काम ही न चल सकेगा?

निकोलाई (रूखे ढंग से) : मेरे ख़्याल में यह सवाल सिर्फ़ दिच्कोव का नहीं, असूल का है।

मिख़ाईल : बिल्कुल! सवाल यह है कि कारख़ाने का मालिक कौन है — तुम, मैं या मज़दूर?

ज़ख़ार (भौचक्का) : मै यह समझता हूँ! मगर...

मिख़ाईल : अगर हम इस बार झुक गये, तो कल वे किस बात की माँग करेंगे, भगवान् ही जानता है। ये बड़े ढीठ और ज़िद्दी लोग हैं। पिछले छः महीनों से इतवार के दिन जो स्कूल लगाये जा रहे हैं और दूसरे काम हो रहे हैं, अब वे अपने रंग दिखाने लगे है — मुझे तो वे भूखे भेड़ियों की तरह घूरते हैं, इधर-उधर कुछ इश्तिहार भी दिखाई दे रहे हैं... इन से समाजवाद की बू आती है।

पोलीना : इस दूर-दराज़ जगह में समाजवाद की चर्चा तो बिल्कुल बेतुकी और अटपटी लग रही है.. सुनकर हँसी आती है, — क्यों, ठीक है न?

मिख़ाईल : सचमुच? श्रीमती पोलीना द्मित्रीयेव्ना, बच्चे जब तक बच्चे होते हैं, उनकी बातों से रस मिलता है, मजा आता है। मगर धीरे धीरे वे बड़े होते रहते हैं और फिर एक दिन अच्छे-ख़ासे शैतान के चर्खे बनकर सामने आ खड़े होते हैं...

ज़ख़ार : अच्छा, तुम क्या किया चाहते हो?

मिख़ाईल : मैं तो कारख़ाना बन्द किया चाहता हूँ। कुछ दिन इन्हें भूखे रहने दो, फिर ये अपने आप ठण्डे पड़ जायेंगे। (**याकोव उठता है, मेज़ के पास जाकर कुछ शराब पीता है और फिर धीरे धीरे वहाँ से चला जाता है**) जैसे ही हम कारख़ाना बन्द करेंगे कि औरतें सामने आ जायेंगी... वे रोना-चिल्लाना शुरू करेंगी। उनके आँसुओं की धारा में इन लोगों के सपने भी बह जायेंगे—देखते ही देखते इनके होश ठिकाने आ जायेंगे!..

पोलीना : यह तो बड़ी बेरहमी होगी!

मिख़ाईल : शायद आप ठीक कहती हैं। मगर ज़िन्दगी में यह सब कुछ करना ही पड़ता है।

ज़ख़ार : मगर... देखो न... ऐसा कड़ा क़दम... क्या ऐसा कड़ा क़दम उठाना लाज़िमी है?

मिख़ाईल : तुम कोई दूसरा रास्ता सुझा सकते हो?

ज़ख़ार : अगर मैं जाकर उनसे बातचीत करूँ, तो कैसा रहे?

मिख़ाईल : तुम तो ज़रूर उनके सामने झुक जाओगे और तब मेरा बिल्कुल कोई मुँह न रह जायेगा... तुम्हारी डाँवाँडोल नीति को, क्षमा करना, मैं तो सरासर अपनी बेइज़्ज़ती समझता हूँ! उससे जो घपला होता है, उसकी तो ख़ैर चर्चा ही बेकार है...

ज़ख़ार (जल्दी से) : मगर, मेरे दोस्त, मैं तुम्हारा विरोध ही कब कर रहा हूँ? मैं तो सिर्फ़ सोच-विचार कर रहा हूँ। तुम्हें यह तो समझने की कोशिश करनी चाहिए कि मैं उद्योगपति होने के बजाय ज़मींदार अधिक हूँ... मेरे लिए ये सभी बातें नयी और उलझी-उलझायी हैं... मैं तो यह चाहता हूँ कि जैसे भी हो सके, इन्साफ़ किया जाये... मज़दूरों की अपेक्षा किसान अधिक भले स्वभाव के और नम्र होते हैं... उनके साथ तो मेरी ख़ूब ही पटती है!.. मज़दूरों में भी कुछ दिलचस्प लोग

होते हैं, मगर कुल मिलाकर तुम्हारी बात सही है। ये लोग कुछ ज़्यादा ही हठी और ज़िद्दी हैं...

मिख़ाईल : ख़ास तौर पर तब से और भी अधिक ज़िद्दी हो गये हैं, जब से तुमने इन्हें सब्ज़ बाग़ दिखाने शुरू किये है...

ज़ख़ार : जैसे ही तुम गये, मैं इनमें कुछ बेचैनी महसूस करने लगा... कुछ गड़बड़ी भी हुई... हो सकता है कि मेरी असावधानी के कारण ही ऐसा हुआ हो... मगर जैसे-तैसे उन्हें शान्त तो करना ही था। अख़बारों में हमें खरी-खोटी सुनायी गयी... सच तो यह है कि हमारी ख़ूब ही ख़बर ली गयी थी...

मिख़ाईल (बेचैनी से) : इस वक़्त दस बजकर सत्रह मिनट हुए हैं। हमें एक न एक फ़ैसला कर लेना चाहिए। मामला अब काफ़ी तूल पकड़ चुका है—या तो कारख़ाना बन्द हो जाय, या फिर मैं फ़र्म से अलग हो जाता हूँ। कारख़ाना बन्द होने से हमारा कोई नुक़सान न होगा—मैंने सभी आवश्यक प्रबन्ध कर लिये हैं। जल्दी का सब माल तैयार है और गोदामों में और भी काफ़ी माल रखा है...

ज़ख़ार : हूँ। तो फ़ौरन ही इसका फ़ैसला होना चाहिए... ओह, हाँ, होना ही चाहिए! हाँ, तो तुम्हारा क्या ख़्याल है, निकोलाई वसील्येविच ?

निकोलाई : मैं तो अपने भाई से सहमत हूँ। अगर हम सभ्यता को महत्व देते हैं, तो हमें बड़ी कड़ाई से सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए।

ज़ख़ार : मतलब यह कि तुम भी कारख़ाना बन्द कर देने के हक़ में हो? बड़े दुख की बात है!.. प्यारे मिख़ाईल वसील्येविच, मुझसे नाराज़ मत होना... मैं कोई... दस मिनट में तुम्हें अपना जवाब दूँगा!.. यह ठीक रहेगा न ?

मिख़ाईल : हाँ, बिल्कुल ठीक रहेगा!

ज़ख़ार : पोलीना, ज़रा चलो तो मेरे साथ...

पोलीना (अपने पति के पीछे जाती हुई): हे भगवान्! यह सब क्या मुसीबत है!..

ज़खार: सदियों के लम्बे अर्से में किसान लोग कुलीनों की इज़्ज़त करना सीख गये हैं—यह चीज़ उनकी ज़िन्दगी का हिस्सा बन गयी है...

(वे दोनों बाहर जाते हैं)

मिख़ाईल (दाँत भींचकर): बुज़दिल! दक्षिण के किसानों की मार-काट के बाद भी वह यह बात कहता है! उल्लू न हो तो कही का!..

निकोलाई: ज़रा ग़ुस्से पर क़ाबू पाओ, मिख़ाईल! तुम इस तरह आपे से बाहर क्यों हो रहे हो?

मिख़ाईल: तुम आपे से बाहर होने की बात करते हो! मेरे तो तन-बदन में आग लगी हुई है! मैं कारख़ाने में जा रहा हूँ और—देखो! **(जेब से पिस्तौल निकालता है)** वे लोग अब मुझसे नफ़रत करते हैं—यह इसी पाजी की मेहरबानी है! मगर मैं हाथ पर हाथ धरके बैठा तो नही रह सकता। अगर मैं ऐसा करूँ, तो तुम्ही सब से पहले मुझे दोषी ठहराओगे। हमारी सारी पूँजी कारख़ाने में लगी हुई है। अगर मै किनारा कर लेता हूँ, तो यह गंजा सब कुछ मटियामेट कर डालेगा।

निकोलाई (शान्त भाव से): अगर तुम बढ़ा-चढ़ा नही रहे, तब तो यह सचमुच ही बहुत बुरी बात है।

सिन्त्सोव (प्रवेश करते हुए): मज़दूर आपको याद कर रहे हैं...

मिख़ाईल: मुझे याद कर रहे हैं? क्या चाहते हैं?

सिन्त्सोव: अफ़वाह फैली हुई है कि दोपहर के खाने के बाद कारख़ाना बन्द कर दिया जायेगा।

मिख़ाईल (अपने भाई से): सूना तुमने? उन्हें यह कैसे मालूम हुआ?

निकोलाई: शायद याकोव इवानोविच ने बताया होगा।

मिख़ाईल : क्या मुसीबत है! (**वह चिढ़कर सिन्त्सोव की ओर देखता है। अपना गुस्सा दबा नहीं पाता**) तुम क्यों इतने परेशान हो, सिन्त्सोव? तुम्हें क्या पड़ी है? यहाँ आते हो, सवालों की बौछार करते हो...

सिन्त्सोव : मुझे तो मुनीम ने आपके पास भेजा है।

मिख़ाईल : उसने भेजा है, – उसी ने भेजा है न? इस तरह टुकुर-टुकुर देखने और दाँत निपोरने की यह बुरी आदत तुम्हें कहाँ से पड़ी? तुम्हारी बाछें किसलिए खिल रही हैं?..

सिन्त्सोव : मेरे ख़्याल में यह मेरा ज़ाती मामला है।

मिख़ाईल : मैं यह नहीं मानता... देखो, अब फिर कभी ऐसा मत करना, अधिक सम्मान से बात करना... सुना तुमने? (**सिन्त्सोव उसे घूरता है**) अब खड़े किसलिए हो?

तत्याना (दायीं ओर से आती है) : ओह, डायरेक्टर साहब... वही सदा की सी हड़बड़ी? (**सिन्त्सोव को सम्बोधित करते हुए**) हलो, मात्वेई निकोलायेविच!

सिन्त्सोव (उत्साह से) : नमस्ते! कहिये, कैसा हाल-चाल है? थक गयी हैं न?

तत्याना : नहीं, ज़रा भी तो नही। डाँड़ हिला हिलाकर बाँहें ज़रूर कुछ थक गयी हैं... तुम क्या दफ़्तर की तरफ़ जा रहे हो? चलो, मैं फाटक तक तुम्हारे साथ चलती हूँ। जानते हो, मैं तुम्हें क्या बताना चाहती हूँ?

सिन्त्सोव : शायद नहीं।

तत्याना (सिन्त्सोव के साथ साथ जाते हुए) : कल तुमने बहुत सी समझदारी की बातें की थीं। मगर तुम बहुत भावुक हो गये थे और दूसरे तुम अपने लक्ष्य को निशाना बना बनाकर तीर चलाते थे... जितना कम भावुक होकर बात की जाती है, प्रभाव उतना ही अधिक पड़ता है... (**उनकी बातचीत सुनाई नहीं देती**)

मिख़ाईल : क्यों, कैसी रही? गुस्ताख़ी करने के लिए अभी अभी मैंने जिस कर्मचारी को झाड़ा-फटकारा, वही मेरे ही सामने याकोव की बीवी से घुल-मिलकर बातें कर रहा है... एक शराबी है और दूसरी अभिनेत्री... ख़ूब जोड़ी मिली है! शैतान ही जानता है कि ये लोग यहाँ आये क्यों!..

निकोलाई : यह भी अजीब औरत है। खूबसूरत है, बनी-ठनी रहती है, मन को लुभाती भी है—और फिर भी ऐसा लगता है कि उस दो टके के आदमी से इश्क़ करती है। इश्क़ तो निराला है, मगर पागलपन से भरा हुआ।

मिख़ाईल (व्यंग्य से) : इसे ही तो कहते हैं प्रजातन्त्रवादी होना। गाँव-गँवई की किसी अध्यापिका की बेटी है। कहती है कि साधारण लोगों की ओर वह बरबस खिंच जाती है... बेड़ा ग़र्क़ हो इनका! काश मैंने इन देहातियों से वास्ता ही न डाला होता!..

निकोलाई : मेरे ख़्याल में तो तुम्हें शिकायत न करनी चाहिए। इस कारोबार में चलती तो तुम्हारी ही है।

मिख़ाईल : अभी तक नहीं, मगर चलेगी ज़रूर!..

निकोलाई : मेरा ख़्याल है कि इस औरत पर बहुत जल्दी डोरे डाले जा सकते हैं... बड़ी गर्म तबीयत की लगती है।

मिख़ाईल : वह हमारा फ़राख़ बादशाह—फिर जाकर विस्तर में पड़ रहा होगा? नहीं, नहीं, मैं तुम्हें कहे देता हूँ, यह रूस हमेशा ऐसे ही रहेगा, कभी किसी किनारे नहीं लग सकेगा!.. यहाँ सभी लोग दिवास्वप्न देखा करते हैं, बाँवरे बाँवरे से, बहके बहके से इधर-उधर घूमा करते हैं। ज़िन्दगी में किसको क्या करना है, कोई भी तो यह नहीं जानता... जहाँ तक सरकार का सम्बन्ध है, वह तो ऊपर से नीचे तक ईर्ष्या की आग में जलनेवाले लोगों से भरी पड़ी है... वे लोग न तो कुछ समझते है, न ही कुछ करना-धरना जानते हैं...

तत्याना (लौटकर): तो क्या तुम भी चिल्ला रहे हो?.. न जाने क्यों यहाँ सभी लोग चिल्लाने लगे हैं...

अग्राफ़ेना: मिख़ाईल वसील्येविच, ज़ख़ार इवानोविच आपको याद कर रहे हैं।

मिख़ाईल: आख़िर उसे मेरा ध्यान आ ही गया! **(बाहर जाता है)**

तत्याना (मेज़ के पास बैठते हुए): वह इतना परेशान क्यों है?

निकोलाई: यह जानना शायद तुम्हारे लिए दिलचस्प न होगा।

तत्याना (शान्त भाव से): तुम्हारे भाई को देखकर तो मुझे एक पुलिसमैन की याद आ जाती है। कोस्त्रोमा में वह हमारे थियेटर में अक्सर ड्यूटी पर रहता था... लम्बा और पतला सा, फूली फूली आँखों वाला।

निकोलाई: मगर इसका मेरे भाई से क्या सम्बन्ध है? इन दोनों में समानता तो कुछ भी नहीं।

तत्याना: मैं शारीरिक समानता की बात नहीं कर रही हूँ... यह पुलिसवाला भी हमेशा हड़बड़ाया रहता था। चलना तो जानता ही न था, हमेशा भागता था। सिगरेट पीने के बजाय, निगलता था। जीने की तो जैसे उसे फ़ुरसत ही न थी। चौबीसों घण्टे कही न कहीं भागता-दौड़ता और लुढ़कता-पुढ़कता रहता था... मगर कहाँ, यह वह ख़ुद भी न जानता था।

निकोलाई: क्या सचमुच ही वह यह न जानता था?

तत्याना: मुझे पूरा विश्वास है कि वह यह न जानता था। जब किसी आदमी के सामने एक निश्चित ध्येय होता है, तो वह बड़े आराम से उसकी पूर्ति का यत्न करता है। मगर वह तो हर वक़्त भगदड़ मचाये रहता था। उसकी भगदड़ भी अजीब क़िस्म की थी। ऐसा लगता था कि जैसे कोई डण्डा लेकर उसका पीछा कर रहा है। अपनी इस

हड़बड़ी में वह ख़ुद भी ठोकर खाता था और दूसरों का रास्ता भी रोकता था। वह लालची न था—मेरा मतलब, जिस अर्थ में लालची शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह वैसा न था... वह तो अपने सभी कामों से छुटकारा पाने के लिये परेशान रहता था। रिश्वत लेने का काम भी वह इसी तरह जल्दी जल्दी करता था। वास्तव में वह रिश्वत लेता नही था—लोगों से रुपये छीनता था और जल्दबाज़ी में धन्यवाद तक देना भूल जाता था... जानते हो, अन्त में उसका हुआ क्या? एक घोड़ागाड़ी के नीचे आकर दूसरी दुनिया में पहुँच गया।

निकोलाई : तो तुम यह कहना चाहती हो कि मेरा भाई बेकार ही दौड़-धूप करता रहता है?

तत्याना : तो बस यही मतलब निकाला तुमने मेरी बात का?.. ख़ैर, मै तो यह कहना नहीं चाहती थी। मेरा मतलब सिर्फ़ इतना था कि तुम्हारे भाई को देखकर मुझे वह पुलिसमैन याद आ जाता है...

निकोलाई : इसमें तारीफ़ की तो कोई बात नहीं।

तत्याना : तुम्हारे भाई की तारीफ़ करने का तो मेरा कोई इरादा भी नहीं था...

निकोलाई : लोगों को अपने जाल में फाँसने का तुम्हारा तरीक़ा भी निराला है।

तत्याना : सचमुच ?

निकोलाई : मगर सो भी कोई ख़ास दिलचस्प नहीं है।

तत्याना (शान्त भाव से) : तुम्हारे साथ कोई औरत दिलचस्पी से पेश आ भी सकती है?

निकोलाई : चलो, अब हटाओ भी!

पोलीना (अन्दर आती है) : आज हर चीज़ गड़बड़ हुई जा रही है। लगता है कि न तो कोई ढंग से सोया है और अब न कोई नाश्ता ही कर रहा है... नाद्या सुबह ही सुबह क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना के साथ

ख़ुमियाँ इकट्ठी करने के लिए जंगलों में चली गयी है... मैंने कल उसे मना भी किया था... हे भगवान्! मुसीबत ही मुसीबत नज़र आ रही है!

तत्याना : तुम बहुत ज़्यादा खाती हो ...

पोलीना : बात करने का यह कौनसा ढंग है, तत्याना? बड़ा ही अजीब रवैया है तुम्हारा लोगों से ...

तत्याना : सचमुच?

पोलीना : जब इनसान के कंधों पर कोई ज़िम्मेवारी न हो, जब उसे कुछ करना-धरना न हो, तब वह तुम्हारी तरह चटखारे भरकर बातें कर सकता है! लेकिन अगर एक हज़ार के क़रीब लोग दाने-पानी के लिए तुमपर निर्भर होते... तब बात ही दूसरी होती!

तत्याना : तो बन्द कर दो उनका दाना-पानी, करने दो उन्हें मन-मर्ज़ी... सौंप दो उन्हें ही सब कुछ—कारख़ाना, ज़मीन,—और फिर गुज़ारो आराम की ज़िन्दगी।

निकोलाई (सिगरेट जलाते हुए) : किस नाटक का वार्तालाप है यह?

पोलीना : मैं नहीं जानती कि तुम ऐसी बातें क्यों करती हो, तत्याना? ज़रा जाकर तो देखो कि ज़ख़ार किस क़दर परेशान है... मज़दूरों की अक़्ल ठिकाने आने तक हमने कारख़ाना बन्द करने का फ़ैसला किया है। मगर ज़रा कल्पना तो करो कि लोगों को कितनी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा! सैंकड़ों लोग बेकार हो जायेंगे। उनके बालबच्चे हैं... उफ़, इसकी कल्पना ही बड़ी भयानक है!

तत्याना : अगर यह इतनी भयानक बात है, तो तुम लोग ऐसा कर ही क्यों रहे हो?.. किसलिए अपने को यातना का शिकार बना रहे हो?

पोलीना : ओह, तत्याना, तुम कैसी कलेजा-फूँक बातें करती हो! अगर हम कारख़ाना बन्द नहीं करते हैं, तो मज़दूर हड़ताल कर देंगे—और यह इससे भी बुरा होगा।

तत्याना : क्या बुरा होगा ?

पोलीना : सब कुछ बुरा होगा... किसी हालत में भी उनकी सभी माँगें स्वीकार नहीं की जा सकतीं। और वास्तव में वे उनकी मांगें भी तो नहीं हैं। ऐसे ही कुछ समाजवादियों ने उनके दिमाग़ में अटपटी बातें भर दी हैं। और वे लोग हैं कि यूँ ही चिल्लाते फिरते हैं... (**जोश में आकर**) मेरी तो समझ में ही यह बात नहीं आती! विदेशों में समाजवाद की अपनी एक जगह है। समाजवादी खुले आम सब काम करते हैं... मगर इस रूस का, तो बाबा आदम ही निराला है। ये लोग मज़दूरों को कोनों में ले जाकर कानाफूसी करते रहते हैं। वे यह भी भूल जाते हैं कि तानाशाही में समाजवाद की कोई जगह ही नहीं हो सकती!.. हमें समाजवाद की नहीं, विधान की ज़रूरत है... तुम्हारा क्या ख़्याल है, निकोलाई वसील्येविच ?

निकोलाई (थोड़ा हँसकर) : मेरा आपसे थोड़ा मतभेद है। समाजवाद एक ख़तरनाक चीज़ है। उस देश में तो इसकी ख़ूब ही बन आयेगी, जहाँ लोगों का अपना स्वतन्त्र दृष्टिकोण... मेरा मतलब यह कि जहाँ लोगों का अपना कोई नसली फ़लसफ़ा नहीं है; जहाँ हर चीज़ इधर-उधर से उधार ली गयी है... हम लोग तो जिधर झुकते हैं, झुकते ही चले जाते हैं। अतिवादी हैं... यही हमारी कमज़ोरी है।

पोलीना : ओह, यह तो तुमने बिल्कुल ठीक कहा है! हम लोग अतिवादी हैं।

तत्याना (उठते हुए) : ख़ास तौर पर तुम और तुम्हारे पति! और यह सरकारी वकील साहब...

पोलीना : इस बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है, तत्याना, जख़ार को हमारे इलाक़े में 'लाल' समझा जाता है ?

तत्याना (इधर-उधर टहलते हुए): मेरे ख़्याल में वह तो सिर्फ़ शर्म से ही लाल होना जानता है, सो भी कभी कभी...

पोलीना : तत्याना ! यह तुम्हें हो क्या गया है ?..

तत्याना : क्यों, क्या मैंने तुम्हें नाराज़ कर दिया है ? मेरा यह उद्देश्य न था... तुम लोगों की ज़िन्दगी तो मुझे शौक़िया अभिनेताओं जैसी लगती है। ग़लत लोगों को ग़लत पार्ट दे दिये गये हैं, प्रतिभा नाम की कोई चीज़ किसी को छू तक भी नहीं पायी, हर कोई उखड़ा उखड़ा सा अभिनय करता है... और नाटक का कोई सिर-पैर ही समझ में नहीं आता...

निकोलाई : तुम्हारी बात मे कुछ सच्चाई तो ज़रूर है। नाटक ऊवा देनेवाला है, इस बात की शिकायत हर कोई कर रहा है !

तत्याना : इसके लिए हम ख़ुद ही तो ज़िम्मेदार हैं। मंच के नौकर-चाकर और छोटे-मोटे अभिनय करनेवाले यह बात समझने लगे हैं ... किसी दिन ये लोग हमें धकेलकर एक तरफ़ कर देंगे...

(जनरल और कोन प्रवेश करते हैं)

निकोलाई : क्या तुम राई का पहाड़ नही बना रही हो ?

जनरल (पुकारते हुए) : पोलीना ! जनरल के लिए कुछ दूध भेज दो ! देखना, वर्फ़ जैसा ठण्डा हो !.. **(निकोलाई से):** हलो, क़ानूनी कफ़न !.. मुझे अपना हाथ तो चूमने दो, मेरी सुन्दर भाँजी ! कोन, अपना पाठ सुनाओ – फ़ौजी किसे कहते हैं ?

कोन (ऊब से): जो अपने अफ़सर के इशारों पर नाचना जाने, हुज़ूर!

जनरल : अगर अफ़सर यह चाहे कि वह मछली बन जाये, तो ?

कोन : मछली ही क्या, फ़ौजी में तो हर चीज़ बनने की क्षमता होनी चाहिए...

तत्याना : प्यारे मामा जी, अभी कल ही तो आपने इस नाटक से हमारा मन बहलाया था... क्या हर रोज़ ही इसका दोहराया जाना लाज़िमी है ?

पोलीना (आह भरकर): नदी से घर लौटने पर हर दिन।

जनरल: हाँ, सचमुच हर दिन! और हर रोज़ नया नाटक! इस मसख़रे को सवाल भी ख़ुद ही तैयार करने चाहिएँ और जवाब भी।

तत्याना: कोन, तुम्हें इसमें मज़ा आता है?

कोन: जनरल को मज़ा आता है।

तत्याना: और तुम्हें?

जनरल: इसे भी मज़ा आता है...

कोन: मै समझता हूँ कि सरकस के मसख़रे के खेल करने की तो मेरी उम्र नहीं रही... मगर यदि रोटी खानी है, तो सभी तरह के नाच नाचने ही पड़ेंगे...

जनरल: अरे ओ, शैतान बुड्ढे! घूमो दूसरी तरफ़! चलो आगे!..

तत्याना: इस बेचारे बूढ़े का मज़ाक़ उड़ा उड़ाकर क्या कभी तुम्हारा मन नही भरता?

जनरल: बूढ़ा तो मैं भी हूँ! और तुमसे तो ऊब भी उठता हूँ... अभिनेत्री को तो ख़ासा दिलचस्प होना चाहिए, मगर तुम्हें तो यह बात छू तक नहीं गयी।

पोलीना: मामा जी, आप जानते हैं कि...

जनरल: मैं कुछ नही जानता-वानता...

पोलीना: हम कारख़ाना बन्द कर रहे हैं...

जनरल: क्या? इसमें तुम्हारी ही भलाई है! कम से कम भोंपुओं से तो जान बचेगी! सुबह सुबह जब हमें मीठी और प्यारी नीद आती है, तभी ख़लल डालनेवाला भोंपू करता है—ऊ-ऊ-ऊ! नेक ख़्याल है, कर दो बन्द!..

मिख़ाईल (जल्दी से अन्दर आते हुए): निकोलाई, जरा सुनो तो! **(उसे एक तरफ़ ले जाता है)** कारख़ाना तो बन्द कर दिया गया, मगर मेरे ख़्याल में हमें आवश्यक प्रबन्ध कर लेने चाहिएँ। हो सकता है, कोई

ज़रूरत पड़ ही जाये... उप-राज्यपाल को एक तार दे दो, संक्षिप्त रूप से उसे सारी स्थिति भी बता दो और लिख दो कि कुछ फ़ौजी भेज दे... नीचे मेरा नाम लिख देना।

निकोलाई : वह तो मेरा भी दोस्त है।

मिख़ाईल : मैं जाकर उन प्रतिनिधियों को जहन्नुम में भेजता हूँ!... तार का किसी से भी ज़िक्र मत करना—वक़्त आने पर मैं ख़ुद ही उन्हें बता दूँगा... तुम तो नही करोगे न, इसकी चर्चा?

निकोलाई : नहीं, मैं तो इसकी चर्चा नहीं करूँगा।

मिख़ाईल : अपनी मन-मर्ज़ी करने में बड़ा मज़ा आता है! उम्र में तो मै तुमसे बड़ा हूँ, मगर ज़िन्दादिली के नाते छोटा। क्यों, तुम्हारा क्या ख़्याल है?

निकोलाई : अगर मेरा ख़्याल पूछते हो, तो मैं तो इसे तुम्हारी ज़िन्दादिली नहीं, बल्कि दिल की कमज़ोरी कहूँगा...

मिख़ाईल (व्यंग्य से) : यह दिल की कमज़ोरी है या कुछ और, तुम्हें इसका पता लग जायेगा! तुम ख़ुद अपनी आँखों से देख लोगे! **(हँसता हुआ बाहर जाता है)**

पोलीना : निकोलाई वसील्येविच, तो उन्होंने कारख़ाना बन्द करने का फ़ैसला कर लिया?

निकोलाई (बाहर जाते हुए) : लगता तो ऐसा ही है!

पोलीना : हे भगवान्!

जनरल : क्या करने का फ़ैसला कर लिया है उन्होंने?

पोलीना : कारख़ाना बन्द करने का...

जनरल : ओह, तो यह बात है! .. कोन!

कोन : हाज़िर हूँ, सरकार!

जनरल : बंसियाँ और नाव!

कोन : सब कुछ तैयार है।

जनरल : मैं तो चल दिया मछलियों से दिल बहलाने – इनसानों की बक-बक से तो यही बेहतर है... (**हँसता है**) ख़ूब कहा, क्यों? (**नाद्या भागती हुई अन्दर आती है**) आह, मेरी प्यारी तितली!.. क्या मामला है?

नाद्या (खुश होते हुए) : हम लोग तो बहादुरी का एक कारनामा कर आयी हैं! (**पीछे घूमकर पुकारती है**) ग्रेकोव! कृपया इधर आ जाओ! क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना, इसे जाने मत देना! मौसी, जैसे ही हम जंगलों से बाहर आ रही थीं कि अचानक ही तीन मज़दूरों ने हमें आ घेरा। वे पिये हुए थे।

पोलीना : अभी अभी यहाँ ही! मैंने तो तुम्हें चेतावनी भी दी...

क्लेओपात्रा (पीछे पीछे ग्रेकोव आता है) : इससे ज़्यादा दुख की भी कोई बात हो सकती है!

नाद्या : दुख की इसमें कौनसी बात है? ख़ूब मज़ा रहा!.. तीन मज़दूर थे, मौसी... तीनों ने हमें झुककर नमस्कार किया, मुस्कराये और बोले – "नमस्ते, प्यारी महिलाओ!"

क्लेओपात्रा : मैं तो ज़रूर ही अपने पति से कहूँगी कि उनकी छुट्टी कर दे...

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : वह क्यों?

जनरल : यह कौन है ... ए... यह कलमुँहा?

नाद्या : नाना जी, इसी ने तो हमें उनसे बचाया है। क्या आप इतना भी नहीं समझ सकते?

जनरल : नहीं, मैं नही समझ सकता!

क्लेओपात्रा : तुम्हारा बताने का ढंग भी तो अजीब है। कोई समझ ही क्या सकता है?

नाद्या : जैसे हुआ था, मै तो वैसे ही बता रही हूँ!

पोलीना : तुम्हारी बात का तो कुछ सिर-पैर ही पता नही चल रहा, नाद्या!

नाद्या : इसलिए कि आप लोग मुझे बार बार टोकते जा रहे हैं! .. हाँ, तो वे लोग हमारे पास आये और कहने लगे – "आओ, तो हम मिलकर एक गाना गायें, – गायें न?.."

पोलीना : यह तो सरासर गुस्ताख़ी है!

नाद्या : नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है! "हमने सुना है कि आप बहुत अच्छा गाती हैं," उन्होंने कहा। "बेशक यह ठीक है कि हम लोग थोड़ी सी पिये हुए हैं, मगर पीकर ही हम लोग कुछ ठीक रहते हैं," उन्होंने कहा। और, मौसी, उनकी यह बात है भी सच! आम तौर पर वे जैसे बुझे बुझे से रहते हैं, पी लेने के बाद वैसे दिखाई नहीं देते...

क्लेओपात्रा : यह तो हमारी ख़ुशक़िस्मती ही समझो कि यह नौजवान ...

नाद्या : तुम रहने दो! मैं तुमसे ज़्यादा अच्छी तरह सुना रही हूँ! क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना उन्हें डाँटने-डपटने लगी... और तुम्हें यह करना न चाहिए था, सच कहती हूँ! इसकी बिल्कुल ज़रूरत न थी!.. और तब उनमें से एक, लम्बा और पतला सा...

क्लेओपात्रा (बिगड़ते हुए) : मै जानती हूँ उसे, वह कौन है!

नाद्या : तो उसने क्लेओपात्रा का हाथ थाम लिया और इस तरह दर्द भरी आवाज़ में कहा – "आप तो बड़ी ही प्यारी और सभ्य महिला हैं। सूरत देखते ही मन खिल उठता है, फिर यह डाँट-डपट किसलिए? क्या हमने किसी तरह आपका दिल दुखाया है?" उसने ये शब्द बड़े ही अच्छे ढंग से कहे... लगता था कि जैसे उसके दिल की गहराई से निकल रहे हों!.. मगर तभी उनमें से एक, जो बड़ा अक्खड़ सा था, बोला – "क्यों सिर खपा रहे हो इनसे? ये तो जैसे कुछ समझ सकती हैं! इनसान नहीं, दरिन्दे हैं, ये तो दरिन्दे!.." उसने हमें दरिन्दे बताया – इसे और मुझे! **(हँसती है)**

तत्याना (दुष्टतापूर्ण मुस्कान से): लगता है कि तुम्हें यह उपाधि बहुत पसन्द आयी है।

पोलीना: मैंने तुम्हें क्या कहा था, नाद्या? .. अगर तुम अच्छी-बुरी सभी जगह मुँह उठाकर चल दोगी, तो...

ग्रेकोव (नाद्या से): मै अब जा सकता हूँ?

नाद्या: ओह, नहीं, कृपया अभी नहीं जाओ! एक प्याला चाय तो पिओगे न? चाय नहीं, तो दूध? कुछ न कुछ तो ज़रूर ही पीना होगा।

(जनरल हँसता है, क्लेओपात्रा कंधे बिचकाती है, तत्याना ग्रेकोव की तरफ़ देखकर धीरे धीरे गुनगुनाती है, पोलीना सिर झुकाकर अपना ध्यान उन्हीं चमचों पर केन्द्रित कर देती है, जिन्हें वह साफ़ कर रही है)

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए): नहीं, धन्यवाद! मुझे कुछ भी नहीं चाहिए।

नाद्या (जोर देते हुए): शर्माओ नहीं!.. सच कहती हूँ, ये सभी बहुत भले लोग हैं!

पोलीना (डाँटते हुए): नाद्या!

नाद्या (ग्रेकोव से): अभी मत जाओ! अभी तो मैंने अपनी बात भी पूरी नहीं की...

क्लेओपात्रा (बिगड़ते हुए): बताने के लिए और रह ही क्या गया है, इतना ही तो – ठीक मौक़े पर यह नौजवान वहाँ आ पहुँचा और इसने अपने शराबी दोस्तों से कहा कि हमें परेशान न करें... मैंने इससे कहा कि हमें घर छोड़ आये, बस...

नाद्या: ओह, कमाल है तुम्हारा सुनाने का ढंग भी! अगर बात इसी तरह हुई होती... तो इसमें बिल्कुल मज़ा न आया होता!

जनरल : अच्छा, यह बताओ कि अब हमें इसके बारे में करना क्या है?

नाद्या (ग्रेकोव से) : बैठ जाओ! मौसी, तुम इसे बैठने के लिए क्यों नहीं कहती? और तुम सभी लोग रोनी सूरत क्यों बनाये बैठे हो?

पोलीना (जहाँ बैठी है, वहीं से ग्रेकोव को सम्बोधित करते हुए) : नवयुवक, मैं तुम्हारा बहुत आभार मानती हूँ...

ग्रेकोव : इसकी क्या ज़रूरत है?

पोलीना (अधिक रूखेपन से) : इन युवतियों की रक्षा करके तुमने बहुत नेक काम किया है।

ग्रेकोव (शान्त भाव से) : इनकी रक्षा का तो सवाल ही नहीं था... इनसे बुरा बर्ताव तो कोई भी नहीं किया चाहता था।

नाद्या : मौसी! यह तुम कैसी बात कह रही हो!

पोलीना : अपने से बड़ों को सिखाने की कोशिश मत करो...

नाद्या : बेशक ऐसी तो कोई बात नहीं कि किसी ने हमारी रक्षा की हो! इसने तो सिर्फ़ इतना कहा था – "इन्हें परेशान नहीं करो, साथियो! ऐसा करना अच्छा नहीं लगता!" इसे देखकर वे बहुत ख़ुश हुए, चिल्लाकर कहने लगे – "हमारे साथ चलो, ग्रेकोव, तुम बहुत ही समझदार आदमी हो!" और, मौसी, यह बात है भी सही... माफ़ करना, ग्रेकोव, मगर हक़ीक़त तो हक़ीक़त ही रहेगी!..

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : मुझे तो यह सब कुछ बड़ा अजीब अजीब सा लग रहा है, बड़ी झेंप महसूस हो रही है...

नाद्या : सच? मैं भी ऐसा नहीं चाहती थी। इसके लिए मैं नहीं, ये लोग ज़िम्मेदार हैं, ग्रेकोव!

पोलीना : नाद्या!.. मैं यह तुम्हारी बहकी बहकी बातें सहन नहीं कर सकती... तुम अपना मज़ाक़ उड़वा रही हो... बस, अब काफ़ी हो चुका!

नाद्या (गर्म होकर): अगर मै मज़ाक़ करने के लायक़ हूँ, तो तुम लोग भी हँसो! उल्लुओं की तरह टुकुर-टुकुर मेरा मुँह क्या ताक रहे हो? शुरू करो हँसना!

क्लेओपात्रा: राई का पहाड़ बनाने की कला तो कोई नाद्या से सीखे! और वह यह काम करती भी ख़ूब शोर मचाकर है। मगर इस समय, एक अजनबी के सामने तो यह बहुत भद्दा लग रहा है... वह भी इसपर हँस रहा है।

नाद्या (ग्रेकोव से): क्या तुम मुझपर हँस रहे हो?

ग्रेकोव (सरलता से): बिल्कुल नहीं। मैं तो आपकी प्रशंसा कर रहा हूँ...

पोलीना (व्यग्र होकर): क्या? मामा जी...

क्लेओपात्रा (ज़रा हँसकर): यह हुई न असली बात!

जनरल: बस, बस, काफ़ी हो चुका! लो, यह लो और नौ दो ग्यारह हो जाओ...

ग्रेकोव (मुड़ते हुए): धन्यवाद... मगर इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।

नाद्या (हाथों से मुँह ढाँपकर): ओह! यह आपने क्या किया!

जनरल (ग्रेकोव को रोकते हुए): जरा सुनो तो! मैं तुम्हें दस रूबल दे रहा हूँ...

ग्रेकोव (शान्त भाव से): तो क्या करूँ?

(घड़ी भर के लिए सब चुप हो जाते है)

जनरल (हतप्रभ सा): ए... ए... ज़रा यह तो बताओ कि तुम हो कौन?

ग्रेकोव: एक मज़दूर।

जनरल: लुहार?

ग्रेकोव : नहीं, फ़िटर।

जनरल (कड़ाई से) : वह तो एक ही बात है! तुम यें रूवल ले क्यों नहीं लेते?

ग्रेकोव : इसलिए कि मुझे इसकी ज़रूरत नही है।

जनरल (खीझकर) : बिल्कुल बकवास! तुम्हें ज़रूरत किस चीज़ की है?

ग्रेकोव : किसी भी चीज़ की नहीं।

जनरल : शायद तुम्हें ज़रूरत है इस लड़की की? क्यों?

(जनरल हँसता है। सभी हतप्रभ से हो जाते हैं)

नाद्या : ओह!.. ज़रा सोचिये तो, यह आप क्या कर रहे हैं!

पोलीना : मामा जी...

ग्रेकोव (बड़े शान्त भाव से, जनरल से) : आपको उम्र क्या है?

जनरल (हैरान होकर) : क्या? मैं?.. मेरी उम्र?

ग्रेकोव (उसी लहजे में) : हाँ! क्या उम्र है आपकी?

जनरल (इधर-उधर देखते हुए) : मैं... मेरी... यही कोई इकसठ... तुम्हें क्या लेना-देना है मेरी उम्र से?

ग्रेकोव (जाते हुए) : उम्र तो बहुत हो गयी, कुछ अक़्ल भी ज़्यादा होनी चाहिए थी।

जनरल : क्या?.. अक़्ल भी ज़्यादा होनी चाहिए थी?.. मेरी अक़्ल?..

नाद्या (ग्रेकोव के पीछे भागते हुए) : देखो... देखो, तुम इनकी बातों का बुरा न मानना! इनका नहीं, यह तो बुढ़ापे का दोष है। ये तो सचमुच ही बहुत भले लोग हैं। मैं क़सम खाकर कहती हूँ!

जनरल : यह सब नाटक क्या है?

ग्रेकोव : आप बेकार परेशान न हों... इनसे और उम्मीद ही क्या हो सकती है!

नाद्या : यह सब गर्मी की मेहरबानी है ... सभी के मूड गड़बड़ हुए पड़े हैं... फिर मैंने अपना क़िस्सा भी तो बहुत बुरी तरह सुनाया है।

ग्रेकोव (मुस्कराते हुए) : आप चाहे कैसे भी क्यों न सुनातीं, इनपर तो कुछ असर न होना था, न हुआ।

(वे ग़ायब हो जाते हैं)

जनरल (व्यग्र होते हुए) : उसकी यह मजाल!

तत्याना : आपका कोई मतलब नहीं था उसे रूबल पेश करने का!

पोलीना : ओह, नाद्या... कैसी अजीब लड़की है यह नाद्या!

क्लेओपात्रा : ज़रा इसकी हिम्मत तो देखो! तुम बरदाश्त करती हो, तो करो उस बददिमाग़ स्पेनी छोकरे को! मैं तो निश्चित ही अपने पति से कहूँगी कि उसे...

जनरल : वह है क्या... कुत्ते का पिल्ला ही तो!

पोलीना : नाद्या तो अच्छी-ख़ासी मुसीबत है!.. देखो तो, कैसे मुंह उठाकर चली गयी उसके साथ... वह तो मुझे इसी तरह परेशान किये रहती है!

क्लेओपात्रा : तुम्हारे ये समाजवादी दिन पर दिन ज़्यादा गुस्ताख़ होते जा रहे हैं...

पोलीना : तुम्हें यह वहम कैसे हुआ कि वह समाजवादी है?

क्लेओपात्रा : इतना तो मैं समझ ही सकती हूँ! भली क़िस्म के सभी मज़दूर समाजवादी हैं।

जनरल : मैं ज़खार से कहूँगा... कि इस बदतमीज़ छोकरे का कान पकड़कर कारख़ाने से बाहर निकाल दे!

तत्याना : कारख़ाना तो बन्द है।

जनरल : फिर भी कान से पकड़कर निकालना तो चाहिए ही!

पोलीना : तत्याना! जाओ, जाकर नाद्या को बुला लाओ... मेरी रानी बहन हो न! उससे कहना कि मैं बहुत बेचैन हूँ...

(तत्याना जाती है)

जनरल : नाली का कीड़ा! पूछता है—"तुम्हारी उम्र?" यह मजाल!

क्लेओपात्रा : उन पियक्कड़ों की गुस्ताख़ी की ज़रा हद तो देखो—उन्होंने हमपर सीटियाँ बजायीं... और तुम लोग हो कि उन्हें पढ़ा पढ़ाकर उनके दिमाग़ और ख़राब करने पर तुले हुए हो।

पोलीना : ज़रा ख़्याल करो!.. अभी बृहस्पति के दिन मुझे गांव में जाना था। अचानक ही मैंने किसी को अपने पीछे सीटियाँ बजाते सुना। मुझपर भी सीटियाँ बजाते हैं। मेरी बेइज़्ज़ती की बात तो छोड़ो—अगर घोड़े बिदक जाते, तो क्या होता!

क्लेओपात्रा (बड़े अभिमान से) : ज़ख़ार इवानोविच ही इसके लिए बहुत हद तक ज़िम्मेदार हैं!.. वह तो अपने और मज़दूरों के बीच कोई भेद ही नहीं करते। मेरे पति को भी तो यही अच्छा नहीं लगता...

पोलीना : बहुत ही नर्मदिल जो हैं... वह हर किसी से नर्मी से पेश आना चाहते हैं! उनका ख़्याल है कि साधारण लोगों से बनाकर रखने में दोनों तरफ़ की भलाई है... किसानों के मामले में तो उनका ख़्याल ठीक है... वे ज़मीन किराये पर ले लेते हैं, किराया देते रहते हैं और सब ठीक-ठाक चलता रहता है। मगर ये... **(तत्याना और नाद्या आती हैं)** नाद्या! रानी बिटिया! क्या तुम इतना भी नहीं समझ सकतीं कि यह कितनी अटपटी...

नाद्या (गुस्से में आकर) : मैंने कुछ अटपटा नहीं किया, आपका व्यवहार अटपटा था! आपका! गर्मी ने आप सब का मिज़ाज बिगाड़ दिया है—आप बेकार गुस्से में आ जाते हैं, खीझ उठते हैं। आप कुछ

भी तो नहीं समझते!.. जहाँ तक आपका सम्बन्ध है, नाना जी... ओह, प्यारे नाना जी, कैसी बेवक़ूफ़ी की बातें कीं आपने!..

जनरल (भड़ककर): मैंने? मै बेवक़ूफ़? क्या फिर भी मुझे यह सुनना होगा?

नाद्या: आपने यह क्यों कहा था... क्यों कहीं थी आपने मुझसे शादी करने की बात? शर्म नहीं आयी आपको?

जनरल: मुझे शर्म नहीं आती? बस, बस, अब तो हद हो गयी! आज के लिए तो यह काफ़ी है, बहुत काफ़ी है! **(पूरे ज़ोर से चिल्लाता हुआ बाहर जाता है)** कोन! तुमपर शैतान की मार! कहाँ जा मरे हो तुम कम्बख़्त?! अरे ओ गधे, ओ पाजी!

नाद्या: और तुम, मौसी!.. तुम कहो तो! तुम विदेशों में घूमा करती हो, राजनैतिक विषयों पर लम्बे लम्बे भाषण झाड़ा करती हो!.. तुमने उसे बैठने तक के लिए नहीं कहा, चाय तक के लिए नहीं पूछा!..

पोलीना (उछलकर खड़ी हो जाती है और चमचा नीचे फेंक देती है): बस, अब और बरदाश्त नहीं हो सकता!.. तुम्हें कुछ होश भी है, तुम क्या कह रही हो?..

नाद्या: और तुम... तुम, क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना!.. रास्ते भर तो उसकी लल्लो-चप्पो करती रहीं, पर जैसे ही घर पहुँचीं कि आँखें बदल...

क्लेओपात्रा: तो तुम क्या आशा करती थीं मुझसे, उसका मुँह चूमती? मगर मुझे अफ़सोस है कि उसका मुँह गन्दा था। हाँ, यह तो बताओ, मुझे डाँटने-डपटने का अधिकार तुम्हें किसने दिया? देखती हो, पोलीना द्मित्रीयेव्ना? यह है तुम्हारे प्रजातन्त्रवाद का—या क्या कहते हैं उसे?—तुम्हारे मानवतावाद का फल!.. और यह सारी मुसीबत सहन करनी पड़ती है मेरे पति को... मगर याद रखना, तुम लोग भी इससे बच न सकोगे, तुम्हें भी इसका फल चखना होगा।

पोलीना : मैं माफ़ी चाहती हूँ, क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना, नाद्या के इस बुरे बर्ताव के लिए माफ़ी...

क्लेओपात्रा (जाते हुए) : सो तो बिल्कुल बेकार है। सिर्फ़ नाद्या का ही तो सवाल नहीं है... ऐसा वातावरण पैदा करने के लिए तुम सभी लोग ज़िम्मेदार हो!

पोलीना : नाद्या! जब तुम्हारी माँ दम तोड़ रही थी और जब उसने तुम्हारी देख-रेख का भार मुझे सौंपा था, तो...

नाद्या : तुम मेरी माँ की चर्चा मत करो! उसके बारे में तुम हमेशा ही ग़लत बातें किया करती हो!

पोलीना (हैरान होकर) : नाद्या! तुम बीमार हो क्या?.. ज़रा सोचो तो, कह क्या रही हो! तुम्हारी माँ मेरी बहन थी, मैं उसे तुमसे बेहतर जानती हूँ...

नाद्या (आँसू रोक नहीं पाती) : तुम कुछ नहीं जानतीं! ग़रीब ग़रीब होते हैं, अमीर अमीर। उनके बीच कुछ भी तो एक जैसा नहीं होता... मेरी माँ ग़रीब मगर भली थी... तुम ग़रीब लोगों का दिल नहीं पहचानतीं!.. उनकी बात तो दूर, तुम तो मौसी तत्याना को भी नही समझतीं..

पोलीना : नाद्या! मैं मजबूर हूँ तुम्हें यह कहने के लिए कि तुम यहां से चली जाओ! फ़ौरन से पेश्तर चली जाओ!

नाद्या (जाते हुए) : अच्छा, तो मैं चली जाती हूँ!.. मगर यह कहे बिना नहीं रह सकती कि मैंने जो कुछ कहा है, ठीक वही है! मैं सही हूँ और तुम ग़लत!

पोलीना : हे भगवान्!.. अच्छी-भली स्वस्थ लड़की है... न जाने इसे अचानक ही यह क्या दौरा सा पड़ गया है! बिल्कुल हिस्टीरिया का सा दौरा! माफ़ करना, तत्याना, मगर मुझे यह कहना ही पड़ रहा है कि तुम इसे बुरी तरह बिगाड़ रही हो... तुम इससे सभी तरह की

बातें कर लेती हो, गोया कि वह काफ़ी समझदार हो चुकी हो, उसका विकास हो चुका हो... तुम इसे हमारे कर्मचारियों में ले जाती हो... हमारे दफ़्तर के लोगों में, अजीब अजीब से उन मज़दूरों में... तुम तो समझती ही हो कि यह बहुत भद्दी बात है! और फिर ये नावों के सैर-सपाटे...

तत्याना : बात को इस तरह दिल से मत लगाओ... कुछ पी-पिलाकर तबीयत शान्त करो! ख़ैर यह बात तो माननी ही होगी कि उस मज़दूर से तुम ढंग से पेश नहीं आयीं! अगर तुम उसे बैठने के लिए कह देतीं, तो कुर्सी का कुछ बिगड़ थोड़े ही जाता।

पोलीना : तुम सब ग़लत हो... कोई भी मेरे मत्थे यह दोष नहीं मढ़ सकता कि मैं मज़दूरों के साथ बुरा बर्ताव करती हूँ। मगर मैं, मेरी प्यारी, यह ज़रूर चाहती हूँ कि हर चीज़ सीमा में होनी चाहिए!..

तत्याना : तुम चाहे जो भी कहती रहो, मगर मैं तो उसे कहीं भी अपने साथ नहीं ले जाती। जहाँ भी जाती है, वह अपनी मर्ज़ी से जाती है... उसे मना करना मैं ज़रूरी नहीं समझती।

पोलीना : अपनी मर्ज़ी से जाती है! जैसे कि वह अपना भला-बुरा पहचान सकती है!

(याकोव थोड़ी सी पिये हुए धीरे धीरे अन्दर आता है)

याकोव (बैठते हुए) : कारख़ाने में भारी गड़बड़ होनेवाली है...

पोलीना (जैसे तंग आयी हुई हो) : अच्छा, अच्छा, रहने दो, याकोव इवानोविच!..

याकोव : मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ। भारी गड़बड़ होनेवाली है। हो सकता है वे लोग कारख़ाने में आग लगा दें... हम सब को ख़रगोशों की तरह भून डालें।

तत्याना (कुछ परेशान होते हुए) : आज इतने सबेरे ही पी आये लगते हो...

याकोव : इस वक़्त तक तो मैं हर रोज़ ही पी लिया करता हूँ... अभी अभी मैंने क्लेओपात्रा को देखा... बड़ी कमीनी औरत है! इसलिए नहीं कि उसके बेशुमार चाहनेवाले है... बल्कि इसलिए कि उसके सीने में दिल की जगह एक ज़हरीला और बूढ़ा कुत्ता बैठा है...

पोलीना (उठते हुए) : हर चीज़ मज़े में चल रही थी और फिर अचानक ही... (**निरुद्देश्य बगीचे में इधर-उधर घूमती है**)

याकोव : खुजली का मारा हुआ और कमीना कुत्ता। वह कुत्ता बड़ा तो नहीं, मगर लालची है। वह उसके दिल में बैठा गुर्राया करता है... वह सब कुछ हड़प चुका है, मगर अभी भी जीभ लपलपा रहा है... क्या चाहता है, यह वह नहीं जानता... इसीलिए बुरी तरह बेचैन रहता है...

तत्याना : चुप, याकोव!.. तुम्हारा भाई आ रहा है।

याकोव : मेरी बला से! मुझे क्या परवाह पड़ी है उसकी? तत्याना, मै यह अच्छी तरह समझता हूँ कि अब मैं प्यार करने लायक़ नहीं रहा... और इससे मेरे दिल को बड़ी ठेस लगती है। सचमुच बड़ी ठेस लगती है... मगर इससे क्या? मैं तो तुम्हें प्यार कर ही सकता हूँ, करता हूँ...

तत्याना : ज़रा जाकर ताज़ा दम हो लो... नहा-धो लो...

ज़खार (अन्दर आते हुए) : क्या कारख़ाना बन्द करने की घोषणा कर दी गयी है?

तत्याना : मुझे तो मालूम नहीं।

याकोव : नहीं, अभी उन्होंने घोषणा तो नहीं की। मगर मज़दूर यह जान जरूर गये है।

ज़खार : यह कैसे? किसने उन्हें बताया?

याकोव : मैंने। मै उन्हें बता आया हूँ।

पोलीना (पास जाकर) : तुमने ऐसा क्यों किया?

याकोव (कंधे बिचकाकर) : बस, ऐसे ही बता आया... उनके लिए यह दिलचस्पी की बात है। मैं उन्हें सब कुछ बता देता हूँ... जो कुछ भी वे जानना चाहते हैं, सभी कुछ बता देता हूँ। मेरे ख़्याल में वे मुझे पसन्द करते हैं। उन्हें यह देखकर ख़ुशी होती है कि उनके मालिक का भाई शराबी है। इससे उन्हें बराबरी का एहसास होता है।

ज़ख़ार : हुँ... याकोव, तुम अक्सर कारख़ाने में जाते हो... जी सदक़े जाओ, मुझे इसमें कोई एतराज़ नहीं!.. मगर मिख़ाईल वसील्येविच का कहना है कि मज़दूरों से बातचीत करते वक़्त तुम कभी कभी प्रबन्ध-व्यवस्था की आलोचना करते हो...

याकोव : यह झूठ है। प्रबन्ध-व्यवस्था या अव्यवस्था—मैं तो इस बारे में बिल्कुल कोरा हूँ।

ज़ख़ार : वह तो यह भी कहता है कि कभी कभी तुम अपने साथ वोदका भी ले जाते हो...

याकोव : यह झूठ है। वोदका मैं साथ नहीं ले जाता हूँ, मँगवा लेता हूँ, और सो भी कभी कभी नहीं, हमेशा ही। अगर मैं उन्हें वोदका न पिलाऊँ, तो वे मेरी जूती बराबर भी परवाह न करें!

ज़ख़ार : मगर, याकोव, ज़रा ख़ुद ही सोच कर देखो—आख़िर तुम कारख़ाने के मालिक के भाई हो...

याकोव : मेरे दुर्भाग्य का बस यहीं तो अन्त नही हो जाता है...

ज़ख़ार (चिढ़कर) : अच्छा, तो मैं अब और कुछ नहीं कहूँगा! कुछ भी नहीं कहूँगा! न जाने क्यों सारा ज़माना ही मेरा दुश्मन हो गया है ...

पोलीना : आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। अभी थोड़ी ही देर पहले नाद्या भी बहुत कुछ कह रही थी—काश आपने वह सब कुछ सुना होता!

पोलोगी (दौड़ता हुआ अन्दर आता है) : मैं यह सूचना देने आया हूँ कि उन्होंने .. कि उन्होंने डायरेक्टर... डायरेक्टर को मार डाला है...

ज़खार : क्या ?!

पोलीना तुमने... क्या कहा तुमने ?

पोलोगी: जान से ही मार डाला... वह गिरकर ढेर हो गया...

ज़खार : किसने... गोली किसने चलायी ?

पोलोगी : मज़दूरों ने...

पोलीना : किसी ने उन्हें पकड़ा ?

ज़खार : वहाँ कोई डाक्टर है ?

पोलोगी : मुझे मालूम नहीं...

पोलीना : याकोव इवानोविच !.. जल्दी से वहाँ जाओ तो !

याकोव (मजबूरी का संकेत करते हुए) : कहाँ ?

पोलीना : यह सब हुआ कैसे ?

पोलोगी : डायरेक्टर साहब गुस्से में थे... उन्होंने एक मज़दूर के पेट में लात दे मारी...

याकोव : वे लोग यहीं आ रहे हैं ...

(गड़बड़ी। निकोलाई और लेव्शिन – अधेड़ उम्र का गंजे सिर का मज़दूर–मिख़ाईल स्क्रोबोतोव की बाँह में बाँह डाले अन्दर आते हैं। कई मज़दूर और दफ़्तर के कर्मचारी उनके साथ हैं)

मिख़ाईल (थकी सी आवाज़ में) : मुझे छोड़ दो... मुझे लिटा दो...

निकोलाई : तुमने गोली चलानेवाले को देखा ?

मिख़ाईल : मैं अब और अधिक... और अधिक बात नहीं कर सकता...

निकोलाई (ज़ोर देकर) : तुमने गोली चलानेवाले को देखा ?

मिख़ाईल : तुम मुझे परेशान कर रहे हो... कोई लाल सिर वाला था... मुझे लिटा दो... कोई लाल सिर वाला था...

(वे उसे चबूतरे पर लेटा देते हैं)

निकोलाई (पुलिसमैन से) : सुना तुमने? कोई लाल सिर वाला था...

. **पुलिसमैन :** जी हुज़ूर, सुन लिया मैंने!..

मिख़ाईल : कोई भी क्यों न हो, अब इससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता है?..

लेव्शिन (निकोलाई से) : क्या यह ज़्यादा अच्छा नहीं होगा कि अभी कुछ देर इन्हें परेशान न किया जाये?..

निकोलाई : तुम चुप रहो! डाक्टर कहाँ है?.. मैं तुम लोगों से पूछ रहा हूँ, डाक्टर कहाँ है?

(सभी लोग फुसफुसाने और बेकार ही इधर-उधर हिलने-डुलने लगते हैं)

मिख़ाईल : चिल्लाओ नहीं.. हाय दर्द... मुझे आराम करने दो!..

लेव्शिन : हाँ, हाँ, यह ठीक है। थोड़ी देर आराम कीजिये, मिख़ाईल वसील्येविच! आह! हमारी इस ज़िन्दगी में बस पैसा ही प्रधान है! सब इसी की माया है... पैसा ही हमारी ज़िन्दगी है, पैसा ही मौत है...

निकोलाई : पुलिसमैन! जिन लोगों का यहाँ कोई सरोकार नहीं, उनसे कहो कि चले जायें।

पुलिसमैन (धीरे से): जाओ, भाइयो, जाओ यहाँ से! यहाँ कोई तमाशा नहीं हो रहा है...

याख़ार (धीरे से) : डाक्टर कहाँ है?

निकोलाई : मिख़ाईल!.. मिख़ाईल!.. (**अपने भाई पर झुक जाता है। बाक़ी लोग भी ऐसा ही करते हैं**) मुझे लगता है ... कि खेल ख़त्म हो चुका....

ज़खार : ऐसा कभी नही हो सकता! वह तो सिर्फ़ बेहोश हुआ है।

निकोलाई (धीरे धीरे) : नहीं, सब कुछ ख़त्म हो चुका। खेल ख़त्म हो चुका। तुम समझते हो न इन शब्दों का मतलब, जख़ार इवानोविच?..

ज़खार : मगर... मगर हो सकता है, तुम्हें ग़लती हो रही हो!

निकोलाई : मुझे ग़लती नहीं हो रही। इसके लिए तुम्हीं ज़िम्मेदार हो—तुम्हीं!

ज़खार (व्यग्र होकर) : मैं?

तत्याना : यह तो सरासर बेरहमी है.. बिल्कुल बेहूदा बात है!

निकोलाई (बिगड़ते हुए) : हां, तुम—तुम ज़िम्मेदार हो!..

पुलिस-अध्यक्ष (तेज़ी से अन्दर आते हुए) : डायरेक्टर साहब कहाँ हैं? क्या वह बुरी तरह घायल हुए हैं?

लेव्शिन : ख़त्म भी हो चुके। वह कभी दूसरों का दम ख़ुश्क करने की धुन में रहते थे, अब ज़रा देखिये तो उन्हें...

निकोलाई (पुलिस-अध्यक्ष से) : जैसे-तैसे उन्होंने हमें इतना ज़रूर बता दिया है कि गोली चलानेवाले का सिर लाल था...

पुलिस-अध्यक्ष : लाल सिर वाला?

निकोलाई : हाँ... आपको फ़ौरन ही कुछ करना चाहिए!

पुलिस-अध्यक्ष (पुलिसमैन से) : सभी लाल सिर वाले इकट्ठे कर लो!

पुलिसमैन : जो हुक्म, हुज़ूर!

पुलिस-अध्यक्ष : देखना, एक भी न बचने पाये!

(**पुलिसमैन बाहर जाता है**)

क्लेओपात्रा (दौड़कर अन्दर आते हुए): वह कहाँ है?.. मिख़ाईल!.. क्या बात है ... क्या वह बेहोश हो गया है? निकोलाई वसील्येविच... क्या वह बेहोश हो गया है? **(निकोलाई दूसरी तरफ़ मुँह मोड़ लेता है)** क्या वह चल बसा? चल बसा क्या?

लेव्शिन: अब वह ख़ामोश है... पिस्तौल दिखा दिखाकर उन्हें डराता था, मगर ख़ुद ही उसका निशाना बन गया।

निकोलाई (गुस्से में, धीरे से): निकल जाओ यहाँ से! **(पुलिस-अध्यक्ष से)** इसे बाहर ले जाओ!

क्लेओपात्रा: डाक्टर कहाँ है?.. डाक्टर क्या कहता है?

पुलिस-अध्यक्ष (लेव्शिन से, धीरे से): ए तुम, जाओ यहाँ से!

लेव्शिन (धीरे से): जा रहा हूँ। धक्के देने की ज़रूरत नहीं है।

क्लेओपात्रा (धीरे से): तो क्या इन्होंने इसे मार डाला?

पोलीना (क्लेओपात्रा से): मेरी प्यारी बहन...

क्लेओपात्रा (धीरे से, मगर चिढ़कर): मुझे हाथ मत लगाओ! तुम्हीं इस मुसीबत की जड़ हो... तुम्हीं!

ज़ख़ार (दुख भरी आवाज में): मैं जानता हूँ... कि तुम्हें भारी धक्का लगा है... मगर... मगर... तुम ऐसी बातें क्यों कह रही हो?

पोलीना (आँसू भरकर): ओह, मेरी प्यारी बहन, ज़रा सोचो तो सही, यह तुम कह क्या रही हो!..

तत्याना (पोलीना से): बेहतर यही है कि तुम यहाँ से बाहर चली जाओ... डाक्टर कहाँ है?

क्लेओपात्रा: बुरा हो कम्बख़्त तुम्हारी नर्मी का! यह उसी की मेहरबानी है!

निकोलाई (रूखेपन से): चलो हटाओ, क्लेओपात्रा! तुम्हें यह बात दोहराने की ज़रूरत नहीं है—ज़ख़ार इवानोविच से उसका अपराध छिपा थोड़े ही है...

ज़ख़ार (दुखी होकर) : मगर... मगर मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा! तुम लोग कह क्या रहे हो? मेरे मुँह पर कालिख कैसे पोत रहे हो?

पोलीना : यह तो बड़ी भयानक बात है!.. सरासर जुल्म है!

क्लेओपात्रा : तुम इसे जुल्म करना कहती हो? तुम्हीं लोगों ने तो उसके ख़िलाफ़ मज़दूरों को भड़काया था, तुम्हीं ने तो उसकी इज़्ज़त ख़ाक में मिलायी थी... वे उससे ख़ौफ़ खाते थे, उसे देखते ही उनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी... और अब... अब उन्होंने उसे मार डाला... इसके लिए तुम्हीं ज़िम्मेदार हो! तुम्हीं ख़ूनी हो! तुम्हारे ही हाथ रँगे हैं मेरे पति के ख़ून से!..

निकोलाई : बस, बस, काफ़ी हो चुका... चिल्लाना ठीक नहीं!

क्लेओपात्रा (पोलीना से): रो रही हो? ठीक है! रोओ, ख़ूब रोओ! रो रोकर आँसुओं के रास्ते बहा डालो उसका ख़ून!..

पुलिसमैन (मंच पर आते हुए) : हुज़ूर!..

पुलिस-अध्यक्ष : शी!

पुसिलमैन : लाल सिर वाले सभी इकट्ठे कर लिये गये हैं!

(पीछे की ओर जनरल दिखाई देता है। कोन उसके आगे आगे है। जनरल उसे धकेलता जाता है और ज़ोर ज़ोर से हँसता है)

निकोलाई : शी!.. श...

क्लेओपात्रा : अच्छा, हत्यारो!

परदा गिरता है

अंक दूसरा

चाँद ख़ूब चमक रहा है। बगीचे में बड़ी बड़ी परछाइयाँ दिखाई दे रही हैं। मेज़ पर डबल रोटी, खीरे, अण्डे और बीयर की बोतलें अस्त-व्यस्त दशा में पड़ी हैं। लालटेनों में मोमबत्तियाँ जल रही हैं। अग्राफ़ेना बर्तन धो रही है। यागोदिन हाथ में छड़ी लिये बैठा है और सिगरेट पी रहा है। बायीं ओर तत्याना, नाद्या और लेव्शिन खड़े हैं। सभी लोग फुसफुसाकर बातचीत कर रहे हैं। वातावरण में तनाव है, जैसे कि लोग किसी घटना की पूर्वाशा में हों।

लेव्शिन (नाद्या से): इनसानी ज़िन्दगी की हर चीज़ चाँदी के इशारे पर चलती है, कुमारी जी! आपका भोला-भाला मन इसीलिए तो दुखी है ... सभी को रुपये ने अपने जाल में फँसा रखा है—सभी को, सिवाय आपके। इसीलिए आपका यहाँ निबाह नहीं होता। रुपये की खनक सभी को एक ही सन्देसा देती है—"जैसे अपने से प्यार करते हो, वैसे ही मुझसे भी करो..." मगर आप भी इसी में शामिल हों, सो बात नहीं। पंछी तो पंछी होता है—न बोता है, न काटता है।

यागोदिन (अग्राफ़ेना से): लेव्शिन अब तो अपने से बड़े लोगों को अक़्ल सिखाने लगा है ... ज़रा देखो तो इस भोले बूढ़े बुद्धू को!

अग्राफ़ेना: तो इसमें क्या बुरा है? वह इन्हें सच्चाई ही तो बतलाता है। थोड़ी सच्चाई जान लेने से इनका कुछ न बिगड़ेगा।

नाद्या : काफ़ी मुश्किल ज़िन्दगी है तुम्हारी, लेव्शिन?

लेव्शिन : नहीं, कुछ बहुत तो नहीं। बच्चा तो मेरा कोई है नहीं। सिर्फ़ एक औरत है—यानी मेरी बीवी, और बस। बच्चे तो सभी मर चुके हैं।

नाद्या : मौसी तत्याना! अब घर में मुर्दा पड़ा होता है, तो लोग कानाफूसी क्यों करते हैं? खुलकर बात क्यों नहीं करते?..

तत्याना : मुझे इसका कारण मालूम नहीं।

लेव्शिन (मुस्कराते हुए): इसलिए कि मरनेवाले के प्रति हम सभी अपराधी होते हैं, कुमारी जी! हर तरह से अपराधी होते हैं...

नाद्या : मगर हमेशा तो ऐसा नहीं होता कि मरनेवाले... कि मरनेवाले की हत्या ही की जाती है... मगर लोग तो सदा खुसुर-फुसुर करते हैं...

लेव्शिन : हम सभी की हत्या करते हैं कुमारी जी! किसी का तन गोलियों से छलनी करते हैं, तो किसी का बोली-तानों के तीरों से। हम अपनी करतूतों से सभी की जान लेते हैं। हम लोगों को आकाश से उतारकर पाताल में फेंक देते हैं और हम एक आह तक नहीं भरते हैं... मगर किसी को मौत की गोद में सुलाकर हमें अपने जुर्म का एहसास होने लगता है। तब हमें मरनेवाले के लिए अफ़सोस होता है, शर्म के मारे हमारा सिर झुक जाता है और हमारे अन्दर डर की आँधी सी उठ खड़ी होती है... क्योंकि, जैसे कि आप जानती ही हैं, हम लोग भी तो उसी रास्ते पर ही धकेले जा रहे हैं, हम लोग भी तो तेज़ी से क़ब्र की तरफ़ बढ़ रहे हैं!

नाद्या : यह तो बड़ी भयानक बात है!

लेव्शिन : आप बिल्कुल परेशान न हों! आज इसकी चर्चा भयानक है, कल भूली-बिसरी, बीती बात हो जायेगी। लोग फिर वही रेल-पेल शुरू कर देंगे... जब कोई दम तोड़कर ढेर हो जाता है, तो थोड़ी देर

के लिए सभी अपने होंठ सी लेते हैं और शर्म से सिर झुका लेते हैं... फिर वे एक गहरी-लम्बी आह भरकर वही अपने पुराने रंग-ढंग अपना लेते हैं!.. अज्ञानता के शिकार जो हैं ये लोग! मगर आपको शर्म से आँखें नीची न करनी चाहिएँ, कुमारी जी। मुर्दे आपको परेशान न करेंगे। आप तो उनके सामने भी ख़ूब ऊँचा बोल सकती हैं...

तत्याना : तुम्हारा क्या ख़्याल है, लेव्शिन, हम लोग किस तरह अपनी ज़िन्दगी बदल सकते हैं?..

लेव्शिन (रहस्यपूर्ण ढंग से) : इस रुपये से छुट्टी पानी होगी... इसे दफ़ना देना होगा! इसके ख़त्म होते ही हम लोग सोचेंगे – किसलिए की जाये धक्कम-पेल? क्यों बनाया जाये लोगों को दुश्मन?

तत्याना : तो बस, इतने से ही काम चल जायेगा?

लेव्शिन : शुरू में तो इतना ही काफ़ी है!..

तत्याना : नाद्या! कुछ देर बगीचे में घूमने का मन है?

नाद्या (सोचते हुए) : हाँ, घूमा जा सकता है...

(वे बगीचे में दूर तक जाकर ग़ायब हो जाती हैं। लेव्शिन मेज़ की तरफ़ चला जाता है। तम्बू के नज़दीक जनरल, कोन और पोलोगी दिखाई देते हैं)

यागोदिन : तुम तो बालू में से तेल निकालने की कोशिश कर रहे हो, लेव्शिन... बड़े भोलेराम हो!

लेव्शिन : सो क्यों?

यागोदिन : बेकार मत्था पच्ची किया करते हो इन लोगों के साथ... जैसे कि ये कुछ समझनेवाली सूरतें हैं! तुम्हारी बातें मज़दूरों के दिलों में घर कर सकती हैं, मगर कुलीनों पर इनका कुछ असर-वसर नहीं होने का...

लेव्शिनः यह कुमारी बहुत भली, बहुत अच्छी है। ग्रेकोव ने मुझे इसके बारे में बताया था...

अग्राफ़ेना : चाय का एक और गिलास लोगे क्या?

लेव्शिन : मिल जाये, तो कुछ हर्ज नहीं।

(विराम। फिर जनरल की आवाज़ सुनाई देती है। वृक्षों के बीच से नाद्या और तत्याना की सफ़ेद पोशाकों की झलक मिलती रहती है)

जनरल : या फिर एक रस्सी लेकर सड़क के बीच फैलाकर खड़ा हो जाया जाये... सो भी इस तरह कि किसी को दिखाई न दे... जब कोई राहगीर उसे पार करने लगे, तो अचानक ही—औंधा हो जाये!

पोलोगी : किसी को इस तरह औंधा होते देखकर बड़ा मजा आता है, हुज़ूर!

यागोदिन : सुना तुमने?

लेव्शिन : अच्छी तरह सुन रहा हूँ...

कोन : मगर आज तो हम ऐसी बात नहीं कर सकते। घर में मुर्दा पड़ा हुआ है। घर में मुर्दा पड़ा हो और हम हँसी-ठिठोली करें, यह तो अच्छा नहीं लगता।

जनरल : मुझे पाठ पढ़ाने की कोशिश मत करो! जब तुम मरोगे, तो मैं नाचूँगा...

(तत्याना और नाद्या मेज के पास आती हैं)

लेव्शिन : बूढ़े पर सनक सवार है!

अग्राफ़ेना (घर की तरफ़ जाते हुए): हमेशा कोई न कोई उत्पात मचाये रहता है...

तत्याना (मेज़ के पास बैठते हुए): यह तो बताओ, लेव्शिन, क्या तुम समाजवादी हो?

लेव्शिन (सरल भाव से): मैं? नहीं तो। मैं और तिमोफ़ेई–हम तो बुनाई का काम करते हैं। जुलाहे हैं, जुलाहे ...

तत्याना: तुम किसी समाजवादी को जानते हो? उनके बारे में कुछ सुना है तुमने?

लेव्शिन: हाँ, उनके बारे में सुना तो है हमने... हम जानते तो किसी को नहीं, मगर ज़िक्र उनका ज़रूर सुना है!

तत्याना: दफ़्तर में वह जो सिन्त्सोव काम करता है, तुम उसे जानते हो?

लेव्शिन: हाँ, हाँ, उसे तो हम जानते हैं। दफ़्तर के सभी लोगों को जानते हैं।

तत्याना: कभी उससे बातचीत हुई?

यागोदिन (बेचैन होते हुए): उससे हमारी क्या बातचीत हो सकती थी? वह ऊपर काम करता है, हम नीचे। अगर हमें दफ़्तर में कोई काम होता है, तो वह हमें यह बता देता है कि डायरेक्टर क्या चाहता है ... बस, इतना ही तो! उसके बारे में हम और कुछ नहीं जानते।

नाद्या: लेव्शिन, ऐसा लगता है, जैसे कि तुम हमसे डरते हो। डरो नहीं, हमें सचमुच बहुत ज़्यादा दिलचस्पी है...

लेव्शिन: हम भला क्यों डरने लगें? कोई ग़लती तो की नहीं हमने। उन्होंने हमें बुलाया कि यहाँ आकर शोर-शराबा बन्द रखें। इसीलिए हम चले आये। वहाँ नीचे तो लोग ग़ुस्से से पागल हुए जा रहे हैं। वे तो क़समें खा रहे हैं कि कारख़ाने को आग लगा देंगे और सब कुछ तहस-नहस कर डालेंगे–सिवाय राख के यहाँ कुछ भी बाक़ी न छोड़ेंगे। हमें ऐसी शरारत पसन्द नहीं। आग भला किसलिए लगायी जाये?.. जलाया-फूँका क्यों जाये? इसमें तो कोई तुक नहीं है। हमने

ख़ुद अपने हाथों इन्हें बनाया है। हमारे बाप-दादा ने इनपर मेहनत की है ... किसलिए हम इसे जलाकर ख़त्म करें?

तत्याना : हम यह पूछ-पाछ तुम्हारा कुछ बिगाड़ने के लिए नहीं कर रही हैं। मै आशा करती हूँ कि तुम ऐसा नहीं सोचते हो।

यागोदिन : आप भला ऐसा करेंगी ही क्यों? हम तो ख़ुद किसी का कुछ भी बुरा नहीं किया चाहते!

लेव्शिन : हम जो सोचते हैं, वह तो यह है—लोगों ने जो कुछ अपने हाथों से बनाया है, वह सब कुछ पावन है, पवित्र है। इनसान के ख़ून-पसीने का हमें सम्मान करना चाहिए, उसे जला-फूँककर ख़त्म न करना चाहिए। लोगों के दिल काले हैं। लपटें देखकर उन्हें मज़ा आता है। बुरी तरह पसन्द है उन्हें यह खिलवाड़। यह एक हक़ीक़त है कि मरनेवाला हम लोगों के लिए एक अच्छी-ख़ासी मुसीबत था। हम लोगों में भगवान् का डर पैदा करने के लिए वह हर वक़्त पिस्तौल दिखाता रहता था।

नाद्या : मेरे मौसा क्या कुछ बेहतर हैं?

यागोदिन : ज़ख़ार इवानोविच?

नाद्या : हाँ! क्या वह कुछ अधिक दयालु हैं? या वह भी... उसी तरह निर्मम और कठोर हैं?

लेव्शिन : सो तो हम नहीं कहेंगे...

यागोदिन (उदास होकर :) मुझे तो ये सभी एक ही थैली के चट्टे-बट्टे दिखाई देते हैं—सख़्त हों या नर्म। हैं सभी एक जैसे...

लेव्शिन (नम्रता से) : मालिक तो मालिक है—पत्थरदिल हो या मोमदिल। तन किसी का भी क्यों न हो, बीमारी सब के लिए समान है...

यागोदिन (ऊबकर) : ज़ख़ार इवानोविच नर्मदिल आदमी हैं...

नाद्या : तुम्हारा मतलब है कि स्क्रोबोतोव से बेहतर हैं?

यागोदिन (धीरे से) : यह मत भूलिये कि डायरेक्टर मर चुका है। अब उसकी चर्चा...

लेव्शिन : कुमारी जी, आपके मौसा भले आदमी हैं... लेकिन इसी से हमारा कुछ विशेष भला नहीं होता।

तत्याना (चिढ़कर) : चलो चलें, नाद्या... देखती नहीं कि ये हमारी बात समझना ही नहीं चाहते?

नाद्या (धीरे से) : हाँ, चलो...

(वे दोनों चुपचाप वहाँ से चली जाती हैं। लेव्शिन उन्हें जाते हुए देखता है और फिर यागोदिन की तरफ़ देखता है। वे दोनों मुस्कराते हैं)

यागोदिन : परेशान कर डालती हैं, – क्यों, ठीक है न?

लेव्शिन : सुना तुमने? बहुत दिलचस्पी है इन्हें हममें!..

यागोदिन : शायद ये सोचती होंगी कि हम कुछ बक देंगे।

लेव्शिन। मेरा तो अब भी यही ख़्याल है कि कुमारी भली लड़की है... बुरी बात सिर्फ़ इतनी है कि अमीर है!

यागोदिन : बेहतर यही होगा कि हम मात्वेई निकोलायेविच से सब कुछ कह दें... उसे बता दें कि श्रीमती तत्याना हमसे कुछ उगलवाना चाहती थीं...

लेव्शिन : हम उसे बतायेंगे। और ग्रेकोव को भी।

यागोदिन : जाने नीचे क्या हालचाल है। मेरे ख़्याल में तो मालिकों को झुकना पड़ेगा...

लेव्शिन : सो तो वे झुक ही जायेंगे। मगर कुछ ही अर्से बाद फिर से फँदा कसने लगेंगे।

यागोदिन : हाँ, कसकर हमारे दम-खम ख़त्म करन की कोशिश करेंगे...

लेव्शिन : उह-हुँ।

यागोदिन : हुँ... मज़े से सोया कैसे जाये!

लेव्शिन : अभी सोने की बात मत करो... जनरल आ रहा है।

(जनरल आता है। पोलोगी आदरपूर्वक उसके पीछे पीछे आता है। उनके पीछे कोन दिखाई देता है। अचानक ही पोलोगी जनरल का हाथ पकड़ लेता है)

जनरल : क्या बात है?

पोलोगी : यह देखिये, गड्ढा है! इस में पाँव मत डाल दीजियेगा...

जनरल : ओह... मेज़ पर यह सब क्या है? कैसी गड़बड़ मची हुई है! तुम्हीं ने खाया है इस मेज़ पर?

यागोदिन : जी, हुज़ूर!.. हमने और कुमारी जी ने।

जनरल : तो तुम लोग हमारी तरफ़ से रखवाली कर रहे हो?

यागोदिन : जी, सरकार!.. हम पहरे पर हैं।

जनरल : अच्छी बात है! मैं राज्यपाल से तुम्हारी चर्चा करूँगा। कितने हो तुम लोग यहाँ?

लेव्शिन : हम दो हैं।

जनरल : उल्लू! मुझे दो तक गिनती आती है... तुम लोग कुल कितने हो?

यागोदिन : तीस के क़रीब।

जनरल : हाथियारबन्द हो?

लेव्शिन (यागोदिन से) : तिमोफ़ेई, कहाँ है वह, जो पिस्तौल थी तुम्हारे पास?

यागोदिन : यह रही।

जनरल : इसे घोड़े से मत पकड़ो... बेड़ा ग़र्क़ हो इनका! कोन, इन पाजियों को पिस्तौल पकड़नी सिखाओ। **(लेव्शिन से)** तुम्हारे पास पिस्तौल है?

लेव्शिन : मेरे पास तो नहीं है!

जनरल : अगर बागी अन्दर घुस आयें, तो तुम गोली चलाओगे ?

लेव्शिन : वे आयेंगे ही नहीं, सरकार... उनका ऐसा कोई इरादा नहीं है, यों ही ज़रा सी देर के लिए भड़क उठे थे।

जनरल : लेकिन अगर घुस आये, तो ?

लेव्शिन : बात यह है कि वे लोग जल-भुन गये थे... कारख़ाना बन्द किये जाने के फ़ैसले से... कुछ के तो बाल-बच्चे हैं...

जनरल : यह तुम बेकार की क्या बक-बक लगाये हो ? मै पूछ रहा हूँ कि गोली चलाओगे या नहीं ?

लेव्शिन : हम तो तैयार हैं, जनाब... चलायेंगे क्यों नहीं ? मुसीबत सिर्फ़ इतनी है कि हमें चलाने का ढंग नहीं आता। और दूसरे गोली चलाने के लिए हमारे पास है ही क्या ? कोई बन्दूक होती... या फिर कोई तोप होती, तो भी बात थी।

जनरल : कोन ! इधर आओ, इन्हें पिस्तौल चलानी सिखाओ... उधर नदी की तरफ़ चले जाओ...

कोन (उदास भाव से) : हुज़ूर, इजाज़त हो, तो मैं यह कहना चाहूँगा कि अब अन्धेरा हो चुका है। अगर हमने निशानेबाज़ी शुरू कर दी, तो लोगों के दम ख़ुश्क हो जायेंगे। वे यह देखने चले आयेंगे कि मामला क्या है। मगर बाक़ी, जैसे आप कहें। मेरे लिए तो सब बराबर है।

जनरल : अच्छा, ठीक है। कल ही सही !

लेव्शिन : कल तो सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। कल तो वह कारख़ाना ही खोल देंगे...

जनरल : कौन खोल देगा कारख़ाना ?

लेव्शिन : ज़ख़ार इवानोविच। वह मज़दूरों से बातचीत कर रहे हैं ...

जनरल : बेड़ा ग़र्क़ ! अगर मेरी चलती, तो मैं सदा सदा के लिए बन्द कर देता इस कारख़ाने को ! सुबह ही सुबह ये जो जानलेवा भोंपू बजते हैं, उनका तो हमेशा के लिए क़िस्सा ख़त्म हो जाता !..

यागोदिन : इनके कुछ देर से बजने में तो हमें भी कोई आपत्ति न होगी।

जनरल : और मैं तुम्हें अच्छी तरह भूखों भी मारता! तुम्हारे दंगे-फ़साद भी ख़त्म हो जाते!

लेव्शिन : आप इसे दंगा-फ़साद कहते हैं?

जनरल : चुप रहो! यहाँ खड़े खड़े क्या कर रहे हो? जाओ, जाकर बाड़ के गिर्द चक्कर लगाओ... अगर कोई रेंगकर ऊपर आने की कोशिश करे, तो देखते ही गोली मार देना... ज़िम्मेदारी मेरी होगी!

लेव्शिन : चलो, तिमोफ़ेई। ले चलो अपनी पिस्तौल।

जनरल (उनके पीछे बड़बड़ाते हुए) : पिस्तौल!.. गधे न हों कहीं के! देखकर भी पिस्तौल चलानी नहीं आती उन्हें!..

पोलोगी : हुज़ूर, मैं आपकी सेवा में यह निवेदन करना चाहता हूँ कि साधारण लोग आम तौर पर गँवार और जंगली होते हैं... मेरा उदाहरण ही ले लीजिये – मेरा अपना बगीचा है, मैं वहाँ अपने हाथों से सब्ज़ियाँ उगाता हूँ...

जनरल : बड़ी तारीफ़ की बात है!

पोलोगी : मैं अपना सारा ख़ाली वक़्त इसी काम में लगा देता हूँ...

जनरल : ख़ैर, काम तो सभी को करना ही चाहिए!

(तत्याना और नाद्या आती हैं)

तत्याना (दूर से) : आप इस तरह चिल्ला क्यों रहे हैं?

जनरल : उफ़! कैसे हैं ये लोग! **(पोलोगी से)** हाँ, तो फिर!

पोलोगी : मगर हर रात ये मज़दूर लोग मेरी मेहनत पर हाथ साफ़ कर जाते हैं...

जनरल : उड़ा ले जाते हैं, यही कहा न तुमने?

पोलोगी : बिल्कुल! मैं क़ानून की शरण में जा चुका हूँ, क़ानून की दुहाई दे चुका हूँ, मगर बेकार। हमारे इलाक़े में क़ानून के ठेकेदार हैं जनाब पुलिस-अध्यक्ष, और वह लोगों की ज़रूरतों की बाल भर भी परवाह नहीं करते हैं...

तत्याना (पोलोगी से) : तुम यह भारी-भरकम और ऊटपटाँग भाषा क्यों बोलते हो?

पोलोगी (घबराकर) : सचमुच? मैं माफ़ी चाहता हूँ, मगर करूँ तो क्या?.. तीन बरस तक स्कूल में पढ़ाई की और हर रोज़ अख़बार पढ़ा करता हूँ...

तत्याना (मुस्कराते हुए) : ओह, तो यह मामला है!..

नाद्या : तुम भी बड़े मज़ेदार आदमी हो, पोलोगी!

पोलोगी : मैं भी आपकी ख़ुशी में ख़ुश हूँ! हर आदमी को दिलचस्प बनने की कोशिश करनी ही चाहिए...

जनरल : तुम मछलियाँ पकड़ना तो पसन्द करते हो न?

पोलोगी : कभी कोशिश नहीं की, जनाब!

जनरल (कंधे बिचकाकर): अजीब जवाब है!

तत्याना : किस चीज़ की कोशिश नहीं की... मछलियाँ पकड़ने की या किसी को पसन्द करने की?

पोलोगी (संकोच से) : मछलियाँ पकड़ने की।

तत्याना : और पसन्द करने की?

पोलोगी : वह तो करके देख चुका हूँ।

तत्याना : शादी हुई है?

पोलोगी : शादी के सुख के तो मैं सपने ही देखा करता हूँ... मगर क्योंकि सिर्फ़ पच्चीस रूबल महीना पाता हूँ, (**निकोलाई और क्लेओपात्रा जल्दी से अन्दर आते हैं**) इसलिए ऐसी ग़लती करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

निकोलाई (ग़ुस्से में) : बिल्कुल अजीब बात है! बिल्कुल अन्धेरगर्दी है!

क्लेश्रोपात्रा : उसने यह किया कैसे! उसकी यह मजाल कैसे हुई!..

जनरल : मामला क्या है?

क्लेश्रोपात्रा (चिल्लाते हुए) : मामला यह है कि वह–जो है तुम्हारा भाँजा–वह बड़ा ही दब्बू है! उसने बलवाइयों को–मेरे पति के हत्यारों की–सभी माँगें मान ली है!

नाद्या (धीरे से) : मगर वे सभी तो हत्यारे नहीं हैं।

क्लेश्रोपात्रा : वह मेरे पति की लाश का मज़ाक़ उड़ा रहा है ... वह मेरी खिल्ली उड़ा रहा है! ज़रा ख़्याल तो करो–इन हत्यारों ने जिसकी हत्या की, अभी तक उसकी लाश भी नहीं दफ़नायी गयी और तुम्हारे भाँजे ने उन्हीं के लिए कारख़ाने के फाटक खोल देने का फ़ैसला भी सुना दिया! यही कारख़ाना बन्द करने के कारण उन बदमाशों ने मेरे पति की हत्या की थी!

नाद्या : मगर मौसा को डर है कि वे आग लगाकर सब कुछ भस्म कर डालेंगे...

क्लेश्रोपात्रा : तुम बच्ची हो... तुम्हें बड़ों की बातों में दख़ल न देना चाहिए।

निकोलाई : उस छोकरे के भाषण का तो ख़्याल करो!.. खुले तौर पर समाजवादी प्रचार था...

क्लेश्रोपात्रा : कोई क्लर्क है उनका अगुआ। वही उन्हें सलाह-मशविरा देता है ... ज़रा मजाल तो देखो उसकी! कहता है कि मरनेवाले ने ही लोगों को भड़काया था, इसीलिए जुर्म की नौबत आयी!..

निकोलाई (नोटबुक में कुछ लिखते हुए) : उसपर मुझे शक होता है। ज़रूर कोई दूसरा ही आदमी है–वह मामूली क्लर्क नहीं हो सकता...

तत्याना : सिन्त्सोव की चर्चा कर रहे हो क्या तुम ?

निकोलाई : हाँ।

क्लेग्रोपात्रा : मुझे तो ऐसा महसूस होता है, जैसे कि किसी ने मेरे मुँह पर थूक दिया है ...

पोलोगी (निकोलाई से) : मुझे यह निवेदन करने की इजाज़त दीजिये कि मिस्टर सिन्त्सोव ग्रख़बार पढ़ते हुए राजनैतिक विषयों की ख़ूब लम्बी-चौड़ी चर्चा किया करता है। मालिकों से तो वह ख़ार खाये हुए है, हमेशा उनकी शिकायतें, उनकी बदनामी करता रहता है ...

तत्याना (निकोलाई से) : तुम्हें चुग़लियाँ सुनना पसन्द है ?

निकोलाई (चुनौती देते हुए) : हाँ, पसन्द है!.. तुम क्या मुझे शर्मिन्दा किया चाहती हो ?

तत्याना : मेरे ख़्याल में मिस्टर पोलोगी का यहाँ कोई काम नहीं है ...

पोलोगी (घबराकर) : मैं माफ़ी चाहता हूँ... ग्रभी जा रहा हूँ **(जल्दी से बाहर चला जाता है)**

क्लेग्रोपात्रा : लो, वह ग्रा गया... मैं तो इसे देख भी नहीं सकती ! मुझे तो इसकी सूरत से चिढ़ है ! **(झटपट बाहर चली जाती है)**

नाद्या : यह सब हो क्या रहा है ?

जनरल : कुछ भी होता रहे, मेरे लिए सब बराबर है। मैं ग्रब काफ़ी बूढ़ा हो चुका हूँ। मेरी कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती उस ख़ून-ख़राबे में, दंगे-फ़साद में!.. ग्राराम के लिए मुझे यहाँ बुलाने से पहले ज़ख़ार को इन सभी बातों का ख़्याल कर लेना चाहिए था... **(ज़ख़ार पास ग्रा जाता है। वह उत्तेजित, मगर ख़ुश है। निकोलाई को देखकर वह ठिठक जाता है ग्रौर घबराकर ऐनक ठीक करने लगता है)** सुनो तो, मेरे प्यारे भाँजे... समझते भी हो कि तुमने क्या गड़बड़ कर डाली है ?

ज़खार : ज़रा रुक जाइये, मामा जी... निकोलाई वसील्येविच !

निकोलाई : हाँ-आँ...

ज़खार : मज़दूर लोग बुरी तरह आपे से बाहर हो रहे थे... मुझे लगा कि वे सब कुछ तहस-नहस कर डालेंगे... और इसलिए... इसलिए मैंने उनकी बात मान ली कि कारख़ाना बन्द नहीं किया जायेगा। दिच्कोव के बारे में उनकी माँग भी मैंने स्वीकार कर ली है... मगर उनकी ये माँगें मैंने इस शर्त पर मंजूर की हैं कि वे अपराधी को हमें सौंप देंगे। वे मुजरिम की तलाश कर रहे हैं...

निकोलाई (रूखेपन से) : उनसे कह दो कि तकलीफ़ न करें। हत्यारे का तो हम उनकी मदद के बिना भी पता चला लेंगे।

ज़खार : मैं तो यही बेहतर समझता हूँ कि वे ख़ुद ही तलाश करके उसे हमारे हवाले कर दें... यह ज़्यादा अच्छा रहेगा... कल दोपहर के खाने के बाद कारख़ाना चालू हो जायेगा—हमने यह मान लिया है...

निकोलाई : 'हम' से तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?

ज़खार : 'हम' से ?.. मैंने...

निकोलाई : आह... सूचना देने के लिए धन्यवाद... मगर मैं यह महसूस करता हूँ कि मेरे भाई की मौत के बाद मुझे और उसकी बीवी को उसकी जगह मिलनी चाहिए। यक़ीनन तुम्हें हम दोनों की सलाह लेनी चाहिए थी—ख़ुद मुख़्तार न बन बैठना चाहिए था...

ज़खार : मगर मैंने तुम्हें बुलाया तो था ! सिन्त्सोव तुम्हें बुलाने जो गया था... तुमने ख़ुद ही तो इन्कार कर दिया था...

निकोलाई : भाई की मौत के दिन मुझसे कारोबार की बात करने की आशा करना तो सरासर ज़्यादती थी !

ज़खार : मगर कारख़ाने में तो तुम गये ही थे !

निकोलाई : गया था उनके भाषण सुनने... इससे किसी को क्या ?

ज़खार : मगर तुम असलियत जानने की कोशिश क्यों नहीं करते ? अब मालूम हुआ है कि तुम्हारे भाई ने नगर के अफ़सरों को तार दिया था... फ़ौजी भेजने के लिए। उनका जवाब भी आ गया है कि वे कल सुबह पहुँच जायेंगे...

जनरल : अहा। फ़ौजी आयेंगे। यह हुई न काम की बात ! फ़ौजियों के आते ही सब बक-बक ख़त्म हो जायेगी !

निकोलाई : यह बहुत अक़्लमन्दी का काम किया गया है...

ज़खार : मुझे यक़ीन नहीं होता ! फ़ौजी आने से मज़दूर और भी अधिक भड़केंगे... अगर हम कल कारख़ाना नहीं चलाते हैं, तो भगवान् ही जानता है कि वे लोग क्या करेंगे, क्या नहीं करेंगे ! मैं समझता हूँ कि मैंने ठीक क़दम उठाया है... कम से कम ख़ून-ख़रावा तो न होगा...

निकोलाई : मेरा ख़्याल तुमसे बिल्कुल उलटा है... मैं समझता हूँ कि तुम्हें उन... उन लोगों की हर बात न माननी चाहिए थी – और कुछ नहीं, तो कम से कम मरनेवाले की इज़्ज़त का ही थोड़ा ध्यान कर लेना चाहिए था...

ज़खार : मगर तुम यह क्यों नहीं समझते कि इसके और भी बुरे नतीजे हो सकते थे ?

निकोलाई : मेरी बला से !

ज़खार : यह ठीक है... मगर मैं क्या करता ? मुझे तो मज़दूरों के साथ ही रहना है ! और अगर उनका ख़ून बहाया जायेगा... तो... तो क्या वे कारख़ाने की ईंट से ईंट न बजा देंगे !

निकोलाई : मुझे विश्वास नहीं होता।

जनरल : मै भी यही सोचता हूँ।

ज़खार (दुखी होकर) : तो लोग मुझे ही दोषी समझते हो ?

निकोलाई : हाँ, मैं तो यही समझता हूँ !

ज़ख़ार (निष्कपट भाव से) : बेकार एक दूसरे से दुश्मनी मोल लेने का क्या फ़ायदा ? मै तो सिर्फ़ एक बात चाहता हूँ . . . सिर्फ़ यह चाहता हूँ कि – जैसे भी हो सके – दंगे-फ़साद से, ख़ून-ख़राबे से बचा जाये। ऐसा करना बहुत सम्भव भी है। मै ख़ून की नदी बहती देखना नहीं चाहता । क्या शान्त रहकर ढंग से जीवन बिताना सचमुच ही असम्भव है ? तुम मुझसे घृणा करते हो और मजदूर अविश्वास . . . मैं वही करना चाहता हूँ, जो उचित हो . . . सिर्फ़ वही, जो ठीक हो !

जनरल : उचित क्या है, यह कौन जानता है ? यह तो एक शब्द भी नहीं, वर्णों का समूह है . . . उ – उल्लू, च – चोर, त – तलवार . . . मगर व्यापार है . . . क्यों, है न यही बात ?

नाद्या (आँसू भरकर) : आप चुप रहिये, नाना जी ! इनकी बातों पर कुछ ध्यान न दें, मौसा जी . . . यह कुछ भी समझते-बूझते नहीं ! . . निकोलाई वसील्येविच, आप समझते क्यों नहीं यह बात ? आप इतने समझदार हैं . . . आप क्यों नहीं विश्वास करते मौसा पर ?

निकोलाई : मुझे अफ़सोस है, मगर मैं जा रहा हूँ, ज़ख़ार इवानोविच। कारोबारी मामलों में बच्चों का दख़ल देना मुझे क़तई पसन्द नहीं है . . . (**चला जाता है**)

ज़ख़ार : देखा तुमने, नाद्या ? . .

नाद्या (ज़ख़ार का हाथ थामते हुए) : इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता . . . असली चीज़ तो है मज़दूरों का सन्तुष्ट किया जाना . . . वे हमसे कहीं ज़्यादा हैं, कितनी अधिक संख्या है उनकी ! . .

ज़ख़ार : ज़रा रुक जाओ . . . मैं तुमसे बहुत नाराज़ हूँ, नाद्या . . . बहुत ही नाराज़ हूँ !

जनरल : और मैं भी !

ज़ख़ार : तुम्हें मज़दूरों के साथ हमदर्दी है . . . इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं – तुम्हारी उम्र ही ऐसी है। मगर, प्यारी बेटी, तुम्हें बहक न

जाना चाहिए, अपना संतुलन न खो बैठना चाहिए! आज सुबह तुम उसे—उस ग्रेकोव को—अपने साथ ले आयीं... मैं उसे जानता हूँ। अच्छा समझदार नौजवान है। मगर उसके लिए तुम्हें अपनी मौसी से तो अच्छा-ख़ासा नाटक न करना चाहिए था।

जनरल: हाँ, हाँ, कहते जाओ! अच्छी तरह तबीयत साफ़ करो इसकी!

नाद्या: मगर यह सब हुआ कैसे, सो तो आप जानते ही नहीं...

ज़खार: जितना तुम जानती हो, मैं उससे कही ज़्यादा जानता हूँ। यह तुम यक़ीन रखो! हमारे लोग बड़े गँवार और उजड्ड हैं... तुम्हारे उंगली पकड़ाते ही वे पंजा पकड़ लेंगे...

तत्याना (धीरे से): वैसे ही, जैसे कि डूबता हुआ आदमी तिनका पकड़ता है।

ज़खार: वे जानवरों की तरह लालची हैं। हमें उनकी आदत न बिगाड़नी चाहिए, हमें उन्हें सभ्य बनाना चाहिए... हाँ, उन्हें इनसान बनाना चाहिए। मेहरबानी करके इस बात पर विचार करना।

जनरल: तुम कह चुके, अब मेरी वारी है। अरी ओ लोमड़ी! मेरे साथ तो तुम अजीब बुरे ढंग से पेश आती हो—शैतान ही जानता होगा इसका कारण तो! मैं तुम्हें यह याद दिलाना चाहता हूँ कि मेरी उम्र तक पहुँचते पहुँचते अभी तुम्हें चालीस बरस लगेंगे, अभी चालीस बरस लगेंगे तुम्हें मेरे बराबर होते... तभी तुम इस तरह बात करना मुझसे। अब यह याद रखना। कोन!

कोन (पेड़ों के बीच से): यह रहा, सरकार!

जनरल: वह कहाँ गया... क्या नाम है उसका?.. वह पेचकस।

कोन: पेचकस कौनसा?

जनरल: वह... मैं उसका नाम भूल गया... वह दुबला-पतला... फिसलना सा..

कोन : ओह, पोलोगी! मालूम नहीं।

जनरल (तम्बू की तरफ़ जाते हुए) : उसे तलाश करो!

(जख़ार सिर झुकाये हुए इधर-उधर टहलता है और अपने रूमाल से ऐनक का शीशा साफ़ करता है। नाद्या विचारों में डूबी हुई कुर्सी पर बैठी है। तत्याना खड़ी खड़ी उन्हें देखती है)

तत्याना : हत्यारे का पता चल गया?

जख़ार : वे कहते हैं कि उन्हें मालूम नहीं है, मगर उन्होंने पता लगाने का वचन दिया है... वे जानते तो ख़ैर सब कुछ हैं। मेरे ख़्याल में... **(वह इधर-उधर देखता और धीमी आवाज़ में कहता है)** मेरे ख़्याल में तो यह सब उनकी मिली-जुली बात है, चाल है... साज़िश है! यह सच है कि स्क्रोबोतोव ने उन्हें भड़काया—वह हमेशा बढ़ता ही जाता था... ताक़त का नशा उसके लिए एक बीमारी बन चुका था.. और इसलिए उन्होंने इसे मार भी डाला... है न बड़ी भयानक बात? बाट बड़ी मामूली सी लगती है, मगर बड़ी भयानक है! फिर भी वे बिना किसी झिझक के, बड़े विश्वास के साथ इस तरह आँखों में आँखें डालकर देखते हैं, गोया कि उन्होंने कुछ किया ही नहीं है... बात बड़ी मामूली सी होती हुई भी दिल दहलानेवाली है!

तत्याना : सुना है कि स्क्रोबोतोव गोली चलाने ही वाला था, जब किसी ने उसके हाथ से पिस्तौल छीन ली और...

जख़ार : इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? गोली तो उन लोगों ने चलायी... स्क्रोबोतोव ने नहीं...

नाद्या : आप बैठ क्यों नहीं जाते?

जख़ार : उसने फ़ौज क्यों बुलायी? वे जैसे और चीज़ें मालूम कर लेते हैं, उन्होंने यह भी मालूम कर लिया! इससे उसकी मौत और भी जल्दी आ गयी। मुझे तो ख़ैर कारख़ाना चलाना ही पड़ा... न चालू करता,

तो मेरे सम्बन्ध भी बिगड़ जाते, सो भी बहुत देर तक के लिए। आज के ज़माने में मज़दूरों से ज़्यादा नर्मी से पेश आना चाहिए, उनसे अच्छा बर्ताव करना चाहिए... जाने क्या अन्त हो, क्या न हो? आज के ज़माने में समझदार आदमियों को यही चाहिए कि साधारण लोगों से बनाकर रखें, उन्हें अपना दोस्त बना लें... (**मंच पर लेव्शिन दिखाई देता है**) कौन है वहाँ?

लेव्शिन: हम हैं... पहरा दे रहे हैं।

ज़खार: हाँ तो, लेव्शिन, एक आदमी की जान लेकर अब तो ठण्ड पड़ गयी तुम लोगों को? हो गये न शान्त?

लेव्शिन: हम लोग तो कभी भी गर्म नहीं होते... हमेशा शान्त रहते हैं, ज़खार इवानोविच।

ज़खार (भर्त्सना करते हुए): सो तो तुम रहते ही हो। लोगों की हत्या भी शान्त रहकर ही करते हो, क्यों?... क्यों... हाँ... मैंने सुना है कि तुम कुछ नये नये विचारों का प्रचार करते फिर रहे हो कि रुपया-पैसा सब बेकार है, मालिकों और अफ़सरों की कोई ज़रूरत नहीं है, इत्यादि... लेव तोल्स्तोई अगर ऐसी बातें करें, तो माफ़ किया जा सकता है... मेरा मतलब, बात कुछ समझ में आती है... मगर, मेरे दोस्त, तुम्हारा इस चक्कर में पड़ना बेकार है! कुछ नहीं मिले-मिलायेगा इन ऊटपटाँग बातों से।

(तत्याना और नाद्या दायीं तरफ़ से बाहर चली जाती हैं। वहाँ से सिन्त्सोव और याकोव की आवाज़ें सुनाई देती हैं। वृक्षों के पीछे से यागोदिन सामने आता है)

लेव्शिन (शान्त भाव से): कौनसी ख़ास बातें की हैं मैंने? मैंने भी जीवन को कुछ देखा-समझा है, कुछ सोचा-विचारा है और जो मैं ठीक समझता हूँ, वही कहता हूँ...

ज़ख़ार : मालिक दरिन्दे नहीं होते, तुम्हें यह बात समझ लेनी चाहिए... वास्तव में ही मैं कोई बुरा आदमी नही हूँ, हमेशा तुम लोगों की मदद करने के लिए तैयार रहता हूँ। जो कुछ सही है, मैं वही करना चाहता हूँ...

लेव्शिन (आह भरकर) : अपने पैरों पर भला कौन कुल्हाड़ी मारना चाहेगा ?

ज़ख़ार : मगर तुम लोग समझते क्यों नहीं ? मैं अपनी नहीं, तुम्हारी बात कर रहा हूँ ! जो कुछ तुम्हारे लिए सही है, मैं वही करना चाहता हूँ।

लेव्शिन : बेशक सो तो हम लोग समझते ही हैं ...

ज़ख़ार (ग़ौर से उसे देखते हुए) : नहीं, तुम ग़लत कह रहे हो। तुम ऐसा नहीं समझते। कैसे अजीब लोग हो तुम ! कभी ख़ून के प्यासे दरिन्दे बन जाते हो, तो कभी नन्हे नन्हे बच्चों से भोले-भाले और मासूम ...

(ज़ख़ार बाहर जाता है। लेव्शिन छड़ी का सहारा लेकर खड़ा रहता है और ज़ख़ार को जाते देखता है)

यागोदिन : एक और उपदेश पिला गया क्या ?

लेव्शिन : वह आदमी नही, पुतला है... सही मानों में पुतला... जाने, कहना क्या चाहता है ? वह सिर्फ़ अपने आपको ही समझ सकता है, किसी दूसरे को नही...

यागोदिन : कहता है कि वह सिर्फ़ इन्साफ़ किया चाहता है...

लेव्शिन : यही तो बात है !

यागोदिन : आओ चलें... वे लोग आ रहे हैं !..

(लेव्शिन और यागोदिन दूर बगीचे में चले जाते हैं। तत्याना, नाद्या, याकोव और सिन्त्सोव मंच पर दिखाई देते हैं)

नाद्या : हम लोग यों ही बेकार ही चक्कर पर चक्कर काटे जा रहे हैं ... गोया कि सपने में घूम रहे हों।

तत्याना : तुम कुछ खाना पसन्द करोगे, मात्वेई निकोलायेविच ?

सिन्त्सोव : अगर चाय का एक गिलास मिल जाये, तो अच्छा रहे ... आज मै इतना अधिक बोला हूँ कि गला दर्द करने लगा है।

नाद्या : तुम्हें किसी चीज से डर नहीं लगता ?

सिन्त्सोव (मेज़ के गिर्द बैठते हुए) : मुझे ? नहीं, मुझे किसी चीज़ से डर नहीं लगता।

नाद्या : ख़ैर, मुझे तो लगता है !.. सभी कुछ बुरी तरह गड़बड़-घुटाला हो गया है ... मेरी समझ में नहीं आता कि कौन ठीक है, कौन ग़लत।

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए) : सब कुछ सुलझ जायेगा। सोचने से मत घबराओ ... निडर होकर सोचो और हर चीज़ की तह तक पहुँचने की कोशिश करो !.. कुछ मिलाकर डरने की कोई बात नही है।

तत्याना : तो तुम्हारे ख़्याल में क्या मामला ठण्डा पड़ चुका है ?

सिन्त्सोव : हाँ। मज़दूरों की तो जीत ही कभी-कभार होती है। और फिर मामूली सी जीत होते ही वे सन्तुष्ट भी बहुत जल्द हो जाते हैं ...

नाद्या : तुम्हें अच्छे लगते है ये मज़दूर लोग ?

सिन्त्सोव : तुम अच्छे लगने की बात कह रही हो। एक जमाने से मैं तो इन्हीं के साथ रह रहा हूँ, मैं तो इन्हें ख़ूब ही पहचानता हूँ, इनकी ताक़त को भी अच्छी तरह जानता हूँ ... मुझे इनकी समझ-बूझ पर भी पूरा भरोसा है ...

तत्याना : इस बात का भी भरोसा है कि भविष्य इन्हीं के हाथों में है ?

सिन्त्सोव : हाँ, इस बात का भी विश्वास है मुझे।

नाद्या : भविष्य ... क्या है भविष्य के गर्भ में ?

तत्याना (मुस्कराते हुए) : बड़े चालाक हैं तुम्हारे ये सर्वहारा-वर्ग के लोग! मैंने और नाद्या ने उनसे बातचीत करने की कोशिश की... मगर वे बड़े तरीक़े से टाल गये...

नाद्या : हमें वह अच्छा नहीं लगा। बूढ़े ने हमसे यों बचते बचते बातचीत की, गोया कि हम कोई जासूस या ऐसे ही दूसरे कुछ हों! मगर एक और साथी है इनका... ग्रेकोव... वह इस ढंग से पेश नहीं आता है। बूढ़ा तो इस तरह मुस्कराता रहता है, मानो हमपर तरस खा रहा हो, जैसे कि हम रोगी हों, बीमार हों! ..

तत्याना : शराब पीनी बन्द करो, याकोव! मैं तुम्हें इस तरह पीते नहीं देख सकती।

याकोव : तो तुम क्या चाहती हो? क्या करना चाहिए मुझे?

सिन्त्सोव : तो क्या शराब पीने के सिवा कोई दूसरा काम ही नहीं रहा?

याकोव : व्यापार और उससे सम्बन्धित सभी चीज़ों से मुझे नफ़रत है... सख़्त नफ़रत है। बात यह है कि मेरा सम्बन्ध तीसरी श्रेणी के लोगों से है...

सिन्त्सोव : किससे सम्बन्ध है तुम्हारा?

याकोव : तीसरी श्रेणी के लोगों से! लोगों को तीन श्रेणियों में बाँटा जाता है—पहली श्रेणी में वे लोग आते हैं, जो उम्र भर काम करते हैं, दूसरी श्रेणी में वे, जो रुपया जोड़ते हैं, तीसरी श्रेणी में वे आते है, जो रोटी कमाने के फेर में ही नहीं पड़ते—वे इसे बेकार और फ़ज़ूल समझते हैं!—ये लोग रुपया भी नहीं जोड़ सकते, क्योंकि यह पागलपन है, उनकी शान के ख़िलाफ़ है। तीसरी श्रेणी के इन्हीं लोगों में से मैं हूँ। बदमाश, उठाईगीरे, धर्म-भिक्षु, भिखमंगे और दुनिया के दूसरे निखट्टू इसी श्रेणी के लोग हैं।

नाद्या : आप ऐसी ऊबा देनेवाली बातें क्यों करते हैं, मौसा? आप तो बिल्कुल ऐसे नहीं हैं! बड़े नर्मदिल, बड़े मेहरबान हैं।

याकोव : दूसरे शब्दों में न किसी काम का हूँ, न काज का। यह तो मैंने स्कूल के दिनों में ही जान लिया था। बड़े होने से पहले ही लोग इन तीन श्रेणियों में बँट जाते हैं ...

तत्याना : नाद्या ने ठीक ही कहा है कि तुम ऊबा देनेवाली बातें करते हो, याकोव ...

याकोव : मैं उसकी बात से सहमत हूँ। मात्वेई निकोलायेविच, ज़िन्दगी की कोई शक्ल, कोई सूरत होती है?

सिन्त्सोव : हो सकती है ...

याकोव : इसकी सूरत होती है। इसका चेहरा हमेशा सदा बहार, सदा जवान रहता है। अभी कुछ ही वक़्त पहले तक ज़िन्दगी मेरे प्रति उदासीन थी। मगर अब दूसरी शक्ल हर वक़्त मेरे सामने बनी रहती है ... वह हर समय मुझसे पूछती रहती है—"तुम हो कौन? किधर मुँह उठाये जा रहे हो?" **(किसी कारणवश वह भयभीत सा हो उठता है। जब मुस्कराने की कोशिश करता है, तो उसके होंठ काँपते हैं, उसकी सूरत बिगड़ जाती है और मुद्रा कारुणिक हो जाती है)**

तत्याना : ओह्, हटाओ भी, याकोव!.. लो, सरकारी वकील आ रहा है... उसके सामने तुम ऐसी बातें मत करना।

याकोव : बहुत बेहतर।

नाद्या (धीरे से) : सभी किसी न किसी दुर्भाग्य की आशंका कर रहे हैं... ये लोग मुझे मजदूरों से मिलने-जुलने क्यों नहीं देते? यह क्या हिमाकत है!

निकोलाई (पास आकर) : चाय का एक गिलास मिल सकता है?

तत्याना : मिल सकता है।

(कुछ क्षणों तक हर कोई चुपचाप बैठा रहता है। निकोलाई खड़ा खड़ा चाय के प्याले में चमचा हिलाता रहता है)

नाद्या : मैं यह जानना चाहती हूँ कि मज़दूर मौसा पर विश्वास क्यों नहीं करते, और आम तौर पर...

निकोलाई (दुखी होकर) : ये लोग उन्ही पर भरोसा करते हैं, जो यह भाषण देते हैं–"दुनिया के मज़दूरो, एक हो!.." उनपर तो ये ख़ूब विश्वास कर लेते हैं!

नाद्या (धीरे से और कंधे बिचकाकर) : तमाम देशों के मज़दूरों को खुले तौर पर एक हो जाने का नारा जब मैं सुनती हूँ... तो मुझे लगता है, जैसे कि हमारे जैसे लोगों की किसी को ज़रूरत ही न हो...

निकोलाई (जोश में आकर) : बिल्कुल ठीक! हर सभ्य आदमी को ऐसा ही समझना चाहिए... और मेरा ख़्याल है कि जल्द ही एक दूसरा नारा सुनाई देगा–"तमाम दुनिया के सभ्य लोगो, एक हो जाओ!" अब यह नारा लगाने का वक़्त आ गया है! बिल्कुल वक़्त आ गया है! ये जंगली और वहशी लोग हज़ारों बरसों की सभ्यता को तहस-नहस करने, पैरों तले रौंद डालने की कोशिश में हैं। तेज़ी से आगे बढ़े आ रहे हैं; लपलपाती और ललचायी हुई ज़बान लेकर...

याकोव : इनकी आत्मायें इनके पेट में बसती हैं, इनके चिपके हुए भूखे पेटों में... इनके ये पेट देखकर ही जाम की तरफ़ हाथ बढ़ जाता है। **(बीयर का एक गिलास ढालता है)**

निकोलाई : लोगों की भीड़ बढ़ी आ रही है लालच की शिकार होकर, एक ही इच्छा से एकता के सूत्र में बँधती हुई–हड़प जाने, निगल जाने की इच्छा से प्रेरित होकर!

तत्याना (सोचते हुए) : भीड़! जहाँ देखो, वहीं लोगों की भीड़ दिखाई देती है–थियेटरों में, गिरजाघरों में...

निकोलाई : फिर ये लोग कर भी क्या सकते हैं? बरबादी, सिर्फ़ बरबादी... और यह भी पत्थर की लकीर समझ लेना कि बरबादी

यहाँ ज़्यादा बुरी तरह होगी, हम रूसी लोगों के बीच दूसरों की अपेक्षा कहीं अधिक भयानक रूप लेगी...

तत्याना: इन मज़दूरों के बारे में जब यह सुनती हूँ कि वे प्रगतिशील हैं, तो मुझे हमेशा ही बड़ा अजीब सा लगता है! यह मेरी समझ के बाहर की बात है...

निकोलाई: और तुम कहो तो, मिस्टर सिन्त्सोव, तुम्हारा क्या ख़्याल है? .. सोचता हूँ कि तुम तो मुझसे सहमत नहीं होगे...

सिन्त्सोव (शान्त भाव से): नहीं, मैं तो सहमत नहीं हूँ।

नाद्या: मौसी तत्याना, तुम्हें याद है न, पैसे के बारे में उस बूढ़े ने क्या कहा था? क्या सादगी थी उसके अन्दाज़ में!

निकोलाई: तुम हमसे सहमत क्यों नहीं, मिस्टर सिन्त्सोव?

सिन्त्सोव: क्योंकि मेरा सोचने का ढंग तुम्हारे ढंग से अलग है।

निकोलाई: बहुत वाजिब जवाब है! मगर शायद तुम हमारे साथ विचारों का आदान-प्रदान करना पसन्द करोगे?

सिन्त्सोव: मैं इसकी ज़रूरत नहीं समझता।

निकोलाई: बहुत अफ़सोस की बात है! जब हम फिर मिलेंगे, तो मुझे आशा है कि तुम्हारा रवैया बदला हुआ होगा। याकोव इवानोविच, अगर ज़्यादती न समझो, तो मुझे घर तक छोड़ आओ! मेरा तो बहुत ही बुरा हाल है– नसें जैसे फटी जा रही हैं...

याकोव (मुश्किल से उठते हुए): बड़ी ख़ुशी से। बड़ी ख़ुशी से...

(वे बाहर जाते हैं)

तत्याना: यह सरकारी वकील तो बड़ा ही नीच और कमीना है। इसकी तो किसी भी बात से सहमत होना मुश्किल है।

नाद्या (उठते हुए): तो फिर सहमत होती क्यों हो?

सिन्त्सोव (हँसते हुए) : हाँ, तो तुम सहमत होती क्यों हो, तत्याना पाव्लोव्ना ?

तत्याना : इसलिए कि हमारे विचार एक जैसे हैं ...

सिन्त्सोव (तत्याना से) : तुम सोचती तो उसी की तरह हो, मगर महसूस दूसरी तरह करती हो। तुम समझना-जानना चाहती हो, मगर वह ऐसा नहीं चाहता... समझने-समझाने की उसे ज़रूरत क्या है!

तत्याना : शायद बड़ा ही ज़ालिम आदमी है वह।

सिन्त्सोव : सो तो वह है ही। शहर में वह राजनैतिक मुक़दमों की पैरवी करता है। बहुत ही बुरा रवैया होता है उसका बन्दियों से।

तत्याना : हाँ, मैंने कहा, तुम्हारे बारे में भी उसने अपनी नोटबुक में कुछ लिखा था।

सिन्त्सोव (मुस्कराकर) : ज़रूर लिखा होगा। उसनें पोलोगी से बातचीत की थी... वह कभी कोई मौक़ा हाथ से नहीं जाने देता!.. तत्याना पाव्लोव्ना, मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है ...

तत्याना : मैं जो भी कर सकती हूँ, ख़ुशी से करूँगी!

सिन्त्सोव : धन्यवाद। मेरे ख़्याल में फ़ौजी बुला लिये गये हैं ...

तत्याना : हाँ।

सिन्त्सोव : इसका मतलब है कि घरों की तलाशी ली जायेगी... मेरी कुछ चीज़ें तुम अपने पास छिपा सकोगी ?

तत्याना : तुम्हारे ख़्याल में क्या वे तुम्हारे मकान की तलाशी लेंगे ?

सिन्त्सोव : बेशक लेंगे।

तत्याना : हो सकता, वे तुम्हें गिरफ़्तार भी कर लें ?

सिन्त्सोव : ऐसा तो मैं नहीं सोचता। गिरफ़्तार वे मुझे क्यों करेंगे ?.. इसलिए कि मैं भाषण देता हूँ ? ज़ख़ार इवानोविच जानते हैं कि मैं अपने सभी भाषणों में मज़दूरों से अनुशासन में रहने को कहता हूँ ...

तत्याना : और तुम्हारा अतीत?.. क्या पहले सब कुछ ठीक-ठाक है?

सिन्त्सोव : अतीत तो मेरा है ही नहीं... तुम मेरी मदद कर सकोगी क्या? मैं तुम्हें कष्ट तो न देता... अगर यह ख़्याल न होता कि जो इन चीज़ों को छिपा सकते हैं, कल लाज़िमी तौर पर उनकी भी तलाशी ली जायेगी। **(धीरे से हँसता है)**

तत्याना (घबराकर) : मैं तो साफ़ साफ़ बात करना चाहती हूँ... इस घर में मेरी जो स्थिति है, उसके अनुसार मैं अपने कमरे का जैसे चाहूँ, वैसे इस्तेमाल नही कर सकती...

सिन्त्सोव : मतलब यह कि तुम इन्हें रख नहीं सकती? ख़ैर, तब...

तत्याना : कृपया नाराज़ न होना!

सिन्त्सोव : ओह, नहीं! तुम क्यों इन्कार कर रही हो, यह तो आसानी से समझा जा सकता है...

तत्याना : मगर ठहरो, मैं नाद्या से पूछती हूँ...

(बाहर जाती है। सिन्त्सोव उसे बाहर जाते देखता है और मेज़ पर हाथ से ताल देता है। किसी के फूँक फूँककर क़दम रखने की आवाज़ सुनाई देती है)

सिन्त्सोव (धीरे से) : कौन है?

ग्रेकोव : मैं हूँ। क्या तुम अकेले ही हो?

सिन्त्सोव : हाँ, मगर आस-पास बहुत से लोग हैं... कारख़ाने की नयी ख़बर क्या है?

ग्रेकोव (ज़रा हँसकर) : यह तो तुम्हें मालूम ही है कि उन्होंने गोली चलानेवाले को ढूंढकर सौंप देना मंज़ूर कर लिया है। ढूढ हो रही है।

कुछ लोग शोर मचा रहे हैं कि "समाजवादियों ने उसकी हत्या की है!"—वे, जो अपना पिण्ड छुड़ाने की फ़िक्र में हैं।

सिन्त्सोव : तुम्हें मालूम है, हत्या करनेवाला है कौन?

ग्रेकोव : अकीमोव।

सिन्त्सोव : सचमुच?.. इसकी तो मुझे आशा न थी! वह तो भला और समझदार आदमी है...

ग्रेकोव : गर्म मिज़ाज है। अपने को पेश करना चाहता है... उसकी बीवी है, एक बच्चा है... और दूसरा आने को तैयार है... अभी अभी मैंने लेव्शिन से बातचीत की थी। वह तो बिल्कुल ऊटपटाँग बातें करता है—कहता है कि अकीमोव की जगह कोई दूसरा, कम ज़रूरी आदमी पेश कर देना चाहिए...

सिन्त्सोव : वह अजीब जानवर है... मगर यह सुनकर मुझे अफ़सोस बहुत है! **(विराम)** ग्रेकोव, तुम्हें सभी कुछ ज़मीन में ही दफ़नाना होगा... दूसरी तो कोई जगह है नहीं छिपाने के लिए।

ग्रेकोव : जगह तो मैंने तलाश कर ली है। तार-बाबू सब कुछ रखने को तैयार हो गया है। मगर तुम्हारे लिए यहाँ से खिसक जाना ही बेहतर है, मात्वेई निकोलायेविच!

सिन्त्सोव : मै कहीं नहीं जाऊँगा।

ग्रेकोव : वे तुम्हें गिरफ़्तार कर लेंगे।

सिन्त्सोव : कर लेने दो! मेरे खिसक जाने से मज़दूरों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

ग्रेकोव : यह तो सही है... मगर तुम्हारा ख़्याल करके मुझे अफ़सोस होता है...

सिन्त्सोव : बिल्कुल बेकार की बात है। अफ़सोस होना चाहिए तो सिर्फ़ अकीमोव के लिए।

ग्रेकोव : ग्रौर हम किसी तरह भी उसकी मदद नहीं कर सकते! वह ग्रपने को पेश करना चाहता है... बड़ा ग्रजीब सा लग रहा है तुम्हें मालिकों की मिल्कियत के रक्षक के रूप में देखना!

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए): मजबूरी जो ठहरी! मेरे ख़्याल में, मेरे साथी तो सो रहे हैं?

ग्रेकोव : नहीं, बातचीत कर रहे हैं। रात बड़ी सुहावनी है!

सिन्त्सोव : मैं भी ख़ुशी से तुम्हारे साथ चलता... मगर मुझ तो यहीं इन्तज़ार करना ही चाहिए... शायद वे तुम्हें भी गिरफ़्तार करेंगे।

ग्रेकोव : तो ठीक है, इकट्ठे ही जेल काटेंगे! मैं चल दिया। **(बाहर जाता है)**

सिन्त्सोव : नमस्ते। **(तत्याना ग्राती है)** तत्याना पाव्लोव्ना, तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं। मैंने सब इन्तज़ाम कर लिया है। नमस्ते!

तत्याना : मुझे बहुत ही ग्रफ़सोस है...

सिन्त्सोव : नमस्ते!

(बाहर जाता है। तत्याना चुपचाप इधर-उधर टहलती है, ग्राँखें जूते की नोक पर गड़ी रहती है। याकोव ग्राता है)

याकोव : तुम सोती क्यों नहीं?

तत्याना : मन नहीं करता। मै तो यहाँ से जाने की सोच रही हूँ...

याकोव : हुँ। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मेरे तो जाने के लिए भी कोई जगह नहीं... सभी सीमायें, सभी देश पार कर ग्राया हूँ।

तत्याना : यहाँ तो दिल डूबता सा रहता है। हर चीज़ घूमती रहती है ग्रौर मेरा सिर चक्कर खाने लगता है। मुझे झूठ बोलने के लिए मजबूर होना पड़ता है ग्रौर यह मैं बरदाश्त नहीं कर सकती।

याकोव : सच है... झूठ बोलना तुम सहन नहीं कर सकतीं... यह मेरा दुर्भाग्य है... मेरी बदक़िस्मती है...

तत्याना (अपने आपसे): और मैंने अभी अभी झूठ बोला है। बेशक नाद्या उन चीज़ों को छिपाने के लिए तैयार हो जाती... मगर मुझे क्या अधिकार है उसे उस राह पर डालने का?

याकोव: यह तुम किस बात की चर्चा कर रही हो?

तत्याना: किसी ख़ास बात की नहीं... कैसी अजीब स्थिति है... कल तक हर चीज़ साफ़ और सीधी-सादी लग रही थी। मेरा ख़्याल था कि मै अपनी मंज़िल पहचानती हूँ...

याकोव (धीरे से): मन-मौजी पेशे के प्रतिभाशाली पियक्कड़ों, सुन्दर बदमाशों, निट्ठल्लों, और ऐसे दूसरे लोगों में दुनियावालों की अब दिलचस्पी नहीं रही!.. जब तक हम हर दिन की ज़िन्दगी की ऊब मिटाते रहे, लोग हमारी तरफ़ खिंचे रहे... मगर अब तो ज़िन्दगी दिन पर दिन अधिक नाटकीय होती जा रही है... लोग हमपर आवाज़ें कसने लगे हैं—"ओ मसख़रो, ओ मौजियो, मंच से अलग हो जाओ!.." मगर मंच—वह तो तुम्हारा क्षेत्र है, तत्याना!

तत्याना (बेचैनी से): मेरा क्षेत्र?.. हाँ, कभी वह भी वक़्त था... तब मैं सोचती थी कि मैं मंच की हूँ... मेरे पाँव अच्छी तरह जमे हुए हैं... मैं काफ़ी ऊपर उठ सकती हूँ... (**ज़ोर देकर, दुखी होते हुए**) जब लोग बिना किसी उत्साह के चुपचाप मेरी ओर देखते हैं, तो मुझे गहरी चोट लगती है, शर्म से मेरा सिर झुक जाता है। मुझे लगता है, मानो वे कह रहे हैं—"हम सब कुछ जानते हैं। ये सब पुराने और बीते क़िस्से हैं!" उनकी बात सुनकर मेरा दिल बैठ जाता है... मैं उनके दिलों पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकती, उनकी भावनाओं के सागर में ज्वार नहीं ला सकती!.. मैं ख़ुशी और डर से काँप काँप जाना चाहती हूँ, मैं आग, जोश और नफ़रत से भरे शब्द बोलना चाहती हूँ... मैं ऐसे शब्द बोलना चाहती हूँ, जो छुरी की तरह तेज़ हों, अंगारों की तरह दहकते हों... मैं जी भरकर इन्हें लोगों के सामने बिखरा देना

चाहती हूँ—झुलस देना चाहती हूँ उन्हें!.. उन्हें चिल्लाते, शोर मचाते और भागते देखना चाहती हूँ... मगर ऐसे शब्द ही नहीं हैं। फिर मैं दूसरे शब्दों की ढाल बढ़ाकर इन शब्दों को रोक दूँगी। ये शब्द ख़ूबसूरत होंगे, फूलों की तरह ख़ूबसूरत—आशा, प्यार और ख़ुशी से भरे!.. वे आँसू बहायेंगे... और मैं भी.. प्यारे प्यारे आँसू बहाऊँगी!.. वे वाह वाह कर उठेंगे, मुझे फूलों से लाद देंगे... हवा में उछालेंगे... घड़ी भर के लिए मेरी मुट्ठी में होंगे... घड़ी भर के लिए मुझे ज़िन्दा होने का एहसास हो सकेगा... घड़ी भर के लिए मुझे ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी का अनुमान हो सकेगा! मगर जो लोगों में प्राण फूंक सकें, वे शब्द ही नहीं रहे।

याकोव: हम सभी घड़ी भर के लिए जीने का ढंग जानते हैं...

तत्याना: दुनिया की सभी सर्वोत्तम वस्तुयें घड़ी भर के लिए ही होती हैं। मैं किस बुरी तरह लोगों को दूसरे ही रूप में देखना चाहती हूँ—अधिक उत्साह से भरे देखना चाहती हूँ। और ज़िन्दगी की शक्ल भी बदली हुई देखना चाहती हूँ—गड़बड़झाले से मुक्त ... जिस शक्ल में मैं ज़िन्दगी को देखना चाहती हूँ, उसमें कला सभी के लिए और हमेशा ही अनिवार्य होनी चाहिए! ताकि उसमें मेरे लिए जगह बनी रहे... **(याकोव आँखें फाड़ फाड़कर अन्धेरे में घूरता है)** तुम इतनी ज़्यादा क्यों पीते हो? तुमने अपने को ख़त्म कर लिया है... कभी तुम अच्छे ख़ूबसूरत आदमी थे...

याकोव: भूल जाओ अब यह बात ...

तत्याना: मेरे दिल पर क्या गुज़रती है, क्या तुम इतना भी नहीं समझ सकते?

याकोव (भयपूर्ण मुद्रा बनाकर): चाहे मैं कितनी भी क्यों न पिये रहूँ, समझता सब कुछ हूँ... यही तो मेरा दुर्भाग्य है! मेरा दिमाग़ है कि कम्बख़्त अपनी एक ही अभिशापित चाल से, एक ही गति से चलता

रहता है... चौबीसों घण्टे उसी तरह काम करता रहता है! और हर समय मेरी आँखों के सामने एक घिनौना, चौड़ा और गन्दा, धूल भरा चेहरा उभरता रहता है—मोटी मोटी और भयानक आँखों वाला चेहरा। वह पूछता रहता है—"कहो?" बस, सिर्फ़ एक शब्द—"कहो?"

पोलीना (भागती हुई अन्दर आती है) : तत्याना!.. जल्दी से इधर आओ, तत्याना... ज़रा उसे चलकर देखो—क्लेओपात्रा को... वह तो पागल हो गयी है! सभी की बेइज़्ज़ती करती फिर रही है... शायद तुम ही उसका दिमाग़ ठिकाने ला सको...

तत्याना (दुखी होकर) : अपने पचड़ों से, मुझे तो अलग ही रहने दो! तुम लोग अगर चाहो, तो एक दूसरे को हड़प भी सकते हो, मगर दूसरों के आड़े मत आते फिरो!

पोलीना (चौंककर) : तत्याना!.. यह तुम्हें हो क्या गया है? यह तुम क्या कह रही हो?

तत्याना : तुम किस चक्कर में हो? क्या चाहती हो?

पोलीना : ज़रा उसे देखो तो... वह आ रही है!

ज़खार (मंच से बाहर) : चुप रहो, मै तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ।

क्लेओपात्रा (मंच से बाहर ही) : मुझे नहीं... मेरी हाज़िरी में तुम्हें चुप रहना चाहिए!..

पोलीना : वह यहीं चिल्लाना शुरू कर देगी... ये गँवार भी यहीं चारों ओर घूम रहे हैं... यह बड़ी भद्दी बात है, तत्याना! कृपया...

ज़खार (अन्दर आते हुए) : मुझे लगता है कि मेरी दिमाग़ चल निकलेगा!

क्लेओपात्रा (उसका पीछा करते हुए) : तुम मुझसे दूर भागकर नहीं जा सकते, तुम्हें सुननी होगी मेरी बात, ज़रूर ही सुननी होगी!.. तुम्हें मज़दूरों से इज़्ज़त करवानी थी, इसीलिए तुमने उन्हें सिर चढ़ाया!

तुमने इस तरह एक इनसानी ज़िन्दगी को उनके सामने फेंक दिया, जैसे कोई गुर्राते हुए कुत्तों के सामने माँस का एक टुकड़ा फेंकता है! तुम दूसरों का ख़ून भेंट चढ़ाकर, दूसरों के प्राणों की बलि देकर दयालु और धर्मात्मा बने बैठे हो!

ज़खार : तुम यह कह क्या रही हो!

याकोव (तत्याना से): तुम्हारे लिए तो यहाँ से चले जाना ही बेहतर होगा। **(यह बाहर जाता है)**

पोलीना : देखिये, सुनिये, श्रीमती जी! हम बाइज़्ज़त लोग हैं। हम यह हरगिज़ बरदाश्त नहीं करेंगे कि तुम्हारे जैसी नेकनाम औरत हमें डाँटे-डपटे...

ज़खार (चौंककर): पोलीना... भगवान् के लिए चुप रहो!

क्लेओपात्रा : तुम्हें यह वहम कैसे हुआ कि तुम बाइज़्ज़त लोग हो? इसलिए कि तुम राजनीति के बारे में थोड़ा-बहुत बक-बक कर लेते हो? जनता के दुख-दर्द का रोना रो लेते हो? प्रगति और मानवता का गाना गाया करते हो, क्या इसीलिए?

तत्याना : क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना!.. बस, अब काफ़ी हो चुका!

क्लेओपात्रा: मैं तुमसे बात नहीं कर रही हूँ! तुम्हारा क्या मतलब है बीच में टाँग अड़ाने का? तुमसे कोई सरोकार नहीं इस चीज़ का!.. मेरा पति एक ईमानदार आदमी था... साफ़गो और ईमानदार... तुम लोगों की अपेक्षा वह जनसाधारण को ज़्यादा अच्छी तरह जानता-समझता था... वह हर जगह अपना ढिंढोरा नहीं पीटता था... तुम लोगों ने उसे धोखा दिया है! तुम लोगों ने अपनी बेवक़ूफ़ी, अपनी जहालत के कारण उसकी हत्या कर डाली है!

तत्याना (पोलीना और ज़खार से): तुम दोनों यहाँ से चले जाओ!

क्लेओपात्रा : मै ही चली जाती हूँ!.. तुम नफ़रत के क़ाबिल हो... तुम सभी! **(बाहर जाती है)**

ज़खार: कैसी सिर-फिरी औरत है! ..

पोलीना (आँसू भरकर): हमें सब कुछ छोड़-छाड़कर यहाँ से चले जाना चाहिए... कौन सहन करेगा इस तरह की बेइज़्ज़ती! ..

ज़खार: जाने कौनसा कीड़ा घुस गया है इसके दिमाग़ में? ..अगर उसे अपने पति से प्यार होता या इनका सुख-सन्तोष का जीवन होता, तब भी कोई बात थी... मगर यह तो हर साल कम से कम दो नये प्रेमी बनाती थी...और इसपर बुरी तरह हंगामा भी मचा रही है!

पोलीना: कारख़ाना तो हमें ज़रूर ही बेच देना चाहिए।

ज़खार (घबराकर): यह क्या बे-सिर-पैर की बात कर रही हो!.. यह सही रास्ता नहीं है! हमें सोचना-समझना... अच्छी तरह सोचना-समझना होगा! .. मैं निकोलाई वसील्येविच से बात कर रहा था.. जब यह औरत आ धमकी और बातचीत का सिलसिला टूट गया...

पोलीना: निकोलाई वसील्येविच भी हमसे नफ़रत करता है... वह भी बड़ा भयानक आदमी है!

ज़खार (सन्तुलित होकर): उसे भारी धक्का लगा है और वह ग़ुस्से में भी है, मगर आदमी ख़ासा समझदार है। हम से नफ़रत करने का कोई कारण भी उसके पास नहीं है। मिख़ाईल की मौत के बाद कुछ व्यावहारिक कारणों से वह हमारे साथ एक सूत्र में बँध भी तो गया है!

पोलीना: मुझे उससे डर लगता है, दिल नहीं जमता मेरा उसपर... वह तुम्हें धोखा देगा!

ज़खार: यह बिल्कुल बकवास है, पोलीना! .. वह चीज़ों को ख़ूब समझता-पहचानता है... हाँ, ख़ूब समझता-पहचानता है! हक़ीक़त यह है कि मज़दूरों के मामले में मेरी स्थिति हो तो गयी है बड़ी गड़बड़... यह तो मुझे मानना ही होगा। अभी उस शाम को, जब मैंने उनसे बातचीत की, तो ... ख़ैर, तुम तो कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि वे लोग किस बुरी तरह मेरा विरोध कर रहे हैं, मेरे ख़िलाफ़ मोर्चा ले रहे हैं, पोलीना...

पोलीनाः सो तो मैं तुम्हें पहले ही बता चुकी हूँ... यही तो मैंने तुम्हें कहा था! ये लोग हमेशा ही हमारे दुश्मन रहेंगे! **(तत्याना धीरे से हँसकर बाहर चली जाती है। पोलीना उसकी तरफ़ देखती है और अपनी बात जारी रखते हुए जान-बूझकर अपनी आवाज़ ऊँची करके कहती है)** हर कोई तो हमारा दुश्मन है! सभी तो हमसे ईर्ष्या करते हैं.. इसीलिए हमसे दुश्मनी निकालते हैं!..

ज़खार (तेज़ी से इधर-उधर टहलते हुए): बेशक.... कुछ हद तक तो तुम्हारी बात ठीक ही है! निकोलाई वसील्येविच का कहना है कि यह संघर्ष वर्गों के बीच नहीं, नसलों के बीच है—कालों और गोरों के बीच! .. यह तो बात को बहुत ही भद्दे ढंग से पेश करना होगा—दूसरे शब्दों में, हम इसे अति की सीमा तक जाना भी कह सकते हैं... मगर जब हम थोड़ी देर रुककर सोचते हैं कि ये हम सभ्य लोग ही हैं, जिन्होंने विज्ञान, कला और दूसरी तरह तरह की चीज़ों की सृष्टि की है...तब बराबरी—शारीरिक बराबरी—हुँ...अ...अ...ख़ैर हटाओ, सब ठीक है। मगर ये लोग पहले इनसान तो बनें, सभ्य तो हों... और फिर हम बात करेंगे बराबरी की!..

पोलीना (कान खड़े करके): इस तरह की बातें करते तो मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं सुना...

ज़खारः मेरे विचार अभी कच्चे हैं, अभी मैंने इनपर अच्छी तरह सोच-विचार नहीं किया... अपना आप पहचानो—असली चीज़ तो यही है! ..

पोलीना (बाँह थामते हुए): बड़े ही नर्मदिल हो तुम, मेरे प्रियतम। इसीलिए तो तुम्हें इतनी परेशानी होती है!

ज़खार: हम लोगों की जानकारी ही बहुत थोड़ी है, इसीलिए तो हम अक्सर दंग से रह जाते हैं... उस सिन्त्सोव को ही ले लो—मैं उसे ही देख देखकर हैरान था, बहुत पसन्द भी करने लगा था... कितनी सादगी थी उसमें, कैसे सुलझे हुए ढंग से सोचता था!.. अब पता चला है कि

जनाब समाजवादी हैं —समाजवाद से ही सम्बन्ध रखती है उसकी सादगी और तर्क-शक्ति!..

पोलीना: उसमें तो ज़रा भी शक नहीं कि लोग उसकी तरफ़ खिंचते ख़ूब हैं... कैसी भद्दी सूरत है उसकी!.. मगर तुम्हें तो आराम करना चाहिए... तुम्हारा क्या ख़्याल है, क्या हमारे लिए यहाँ से चलना बेहतर नहीं होगा?

ज़खार (उसके पीछे जाते हुए): एक और मज़दूर है—ग्रेकोव... बड़ा ही गुस्ताख़ है! मैं और निकोलाई वसील्येविच अभी उसी के भाषण की चर्चा कर रहे थे... अभी छोकरा सा ही है... मगर इस बुरे ढंग से बात करता है कि...

(वे दोनों बाहर जाते हैं। निस्तब्धता। मंच के बाहर से एक गीत सुनाई देता है, फिर धीमी धीमी आवाज़ें। यागोदिन अन्दर आता है, और इसके साथ लेव्शिन तथा र्याब्त्सोव आते हैं। र्याब्त्सोव युवक है और बार बार अपने सिर को पीछे की तरफ़ झटकता है। उसका चेहरा गोल है, और वह खुशमिज़ाज है। तीनों वृक्षों के नीचे आते हैं।

लेव्शिन (धीरे और भेद भरे ढंग से): यह सभी की भलाई का सवाल है, पावेल।

र्याब्त्सोव: मैं समझता हूँ...

लेव्शिन: यह सब की भलाई का सवाल है, इनसान की बेहतरी का सवाल है... महान् आत्माओं की आजकल बड़ी सख़्त ज़रूरत है। लोग अपना पूरा जोर लगाकर अपने को ऊँचा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। वे बड़े ध्यान से दूसरों की बातें सुनते हैं, पढ़ते हैं और सोचते-समझते हैं... और जो लोग कुछ समझ गये हैं, वे तो हमारे लिए अमूल्य निधि के समान हैं...

यागोदिन: यह बिल्कुल सच है, पावेल..

र्याब्त्सोवः मैं यह जानता हूँ . . . इन बातों की चर्चा करने की ज़रूरत ही क्या है? तुम लोग जैसा चाहते हो, मैं वैसा करने को तैयार हूँ।

लेव्शिनः लेकिन केवल इसलिए नही कि करना ही है, –तुम्हें इसकी तह तक पहुँचना चाहिए . . . तुम अभी जवान हो और यह काम करने का मतलब है कालापानी . . .

र्याब्त्सोवः तो ठीक है, मैं भाग जाऊँगा . . .

यागोदिनः हो सकता है कि तुम्हें कालेपानी की सज़ा दी भी न जाये! . . अभी तुम्हारी उम्र बहुत छोटी है। तुम्हारे ख़िलाफ़ ऐसी कड़ी क़ानूनी कार्यवाही होनी मुश्किल है . . .

लेव्शिनः हमें तो यही मानना चाहिए कि ऐसी कड़ी क़ानूनी कार्यवाही की ही जायेगी! हमें तो अधिक से अधिक बुराई की बात सोच लेनी चाहिए। अगर कोई इनसान बड़ी से बड़ी तकलीफ़ बरदाश्त करने को तैयार है, तो इसका मतलव यह है कि उसने एक बार ही अपना इरादा पक्का कर लिया है!

र्याब्त्सोवः मैं पक्का इरादा कर चुका हूँ।

यागोदिनः जल्दी मत करो। अच्छी तरह सोच-समझ लो . . .

र्याब्त्सोवः सोचने-समझने के लिए इसमें रखा ही क्या है? उसकी हत्या हो चुकी है और अब किसी को तो उसके ख़ून की क़ीमत चुकानी ही होगी . . .

लेव्शिनः हाँ! वह तो मारा ही जा चुका है, और अगर अब कोई आगे आकर अपने को उसके हत्यारे के रूप में पेश नहीं करता है, तो समझ लो कि बहुतों की ख़बर ली जायेगी। वे हमारे सब से अच्छे लोगों को अपने जाल में फँसाने की कोशिश करेंगे, पावेल, –हमारे उन लोगों पर उनका नजला गिरेगा, जो हमारे उद्देश्य की पूर्ति के लिए तुमसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

र्याब्त्सोवः मैं इस सुझाव का विरोध ही कब कर रहा हूँ? या किया है मैंने कोई विरोध? उम्र बेशक मेरी छोटी है, लेकिन समझता सब कुछ हूँ। हमें एक दूसरे को मज़बती से थामना है . . . ज़ंजीर की कड़ियों की भाँति . . .

लेव्शिन (निःश्वास छोड़कर): यह बिल्कुल सही है।

यागोदिन (मुस्कराते हुए): हम हाथ में हाथ लेकर उनके गिर्द घेरा डाल देंगे, घेरा धीरे धीरे तंग होता जायेगा—और बस, यही तो हम चाहते हैं।

र्याब्त्सोवः मैं अपना फ़ैसला कर चुका हूँ। मेरा न कोई आगे है, न पीछे। इसलिए मैं ही यह काम करूँगा। अफ़सोस है तो सिर्फ़ इस बात का कि ऐसे गन्दे और गले-सड़े ख़ून के लिए इतनी क़ीमत अदा करनी होगी...

लेव्शिनः उसके ख़ून के लिए नही, बल्कि अपने साथियों के लिए।

र्याब्त्सोवः हाँ, मगर मेरा मतलब यह है कि वह तो बिल्कुल जंगली और वहशी था... गन्दगी का कीड़ा ही तो था...

लेव्शिनः इसीलिए तो जहन्नुम रसीद कर दिया गया। भले लोग तभी मरते हैं, जब उनकी आती है। कोई उनसे छुटकारा पाना नहीं चाहता।

र्याब्त्सोवः अच्छा, तो बात ख़त्म?

यागोदिनः बात तो ख़त्म है, पावेल! तो कल सुबह तुम उन्हें बता दोगे न?

र्याब्त्सोवः कल तक भला किसलिए इन्तजार किया जाये?

लेव्शिनः इन्तज़ार कर लेना अच्छा ही है! रात की गोद माँ की गोद की तरह होती है। अच्छी तरह सोच-समझ लेना...

र्याब्त्सोवः बहुत बेहतर! .. मैं अब जा सकता हूँ न?

लेव्शिनः भगवान् तुम्हारा सहायक हो!

यागोदिनः पीठ मत दिखाना, भाई... अपने फ़ैसले पर डटे रहना...

(र्याब्त्सोव धीरे धीरे बाहर जाता है। यागोदिन ध्यान से उस छड़ी को देखता है, जिससे वह खिलवाड़ सा कर रहा है। लेव्शिन आकाश की ओर देखता है)

लेव्शिन (धीरे से): आजकल तो बहुत से भले भले लोग सामने आ रहे हैं, तिमोफ़ेई!

यागोदिन: मौसम अच्छा है... इसलिए फ़सल भी अच्छी हो रही है!

लेव्शिन: लगता है कि इस मुसीबत से छुटकारा मिल ही जायेगा।

यागोदिन (दुखी होते हुए): इस लड़के का ख़्याल करके बहुत दुख होता है...

लेव्शिन (धीरे से): हाँ, सो तो है ही! बेचारा जेल की हवा खायेगा—और सो भी इतना बड़ा जुर्म क़बूल करके। तसल्ली है तो सिर्फ़ इतनी कि वह अपने साथियों के लिए सब कुछ कर रहा है।

यागोदिन: हाँ...

लेव्शिन: मगर... तुम अपने होंठ सिये रहना! च-च!.. जाने क्यों पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया अकीमोव ने! ख़ून-ख़राबे से क्या मिलता है? बिल्कुल बेकार है! एक कुत्ते को मारो कि मालिक झट से दूसरा ख़रीदकर सामने ला खड़ा करते हैं... बात वहीं की वहीं रह जाती है!

यागोदिन (दुखी होकर): कितनी बड़ी संख्या में हम जैसे लोगों को अपने प्राण गँवाकर इसका मूल्य चुकाना पड़ता है...

लेव्शिन: चलो, चौकीदार! हमें तो मालिकों की मिल्कियत की निगरानी करनी है! **(वे दोनों जाते हैं)** भाड़ में जाये यह सब कुछ!..

यागोदिन: यह तुम क्या कह रहे हो?

लेव्शिन: भाड़ में जाये यह मुसीबत की मारी जिन्दगी! काश कि हम जल्दी जल्दी इसे बना सकते, सँवार सकते!

परदा गिरता है

अंक तीसरा

बार्दिन के मकान का एक बड़ा कमरा। पीछे की दीवार में चार खिड़कियाँ हैं और एक दरवाज़ा, जो कि बरामदे में खुलता है। शीशे की खिड़कियों के पीछे बहुत से सिपाही, फ़ौजी पुलिसवाले और मज़दूर दिखाई देते हैं। लेव्शिन और ग्रेकोव भी इन्हीं मज़दूरों में हैं। कमरा ऐसा लगता है, मानो वहाँ कोई भी रहता न हो। इसमें थोड़ा सा फ़र्नीचर है और वह भी टूटा-फूटा और बेढंगा। दीवारों का काग़ज़ जहाँ-तहाँ फटा हुआ है। दायीं ओर एक बड़ी मेज़ टिका दी गयी है। जब परदा उठता है, उस समय कोन बड़े ग़ुस्से में कुर्सियाँ खींच खींचकर मेज़ के गिर्द इकट्ठी करता दिखाई देता है और अग्राफ़ेना फ़र्श पर झाड़ू लगा रही है। बायीं और दायीं तरफ़ की दीवारों में बड़े बड़े दोहरे दरवाज़े।

अग्राफ़ेनाः हाँ, तो मुझपर बिगड़ने की कोई ज़रूरत नहीं है...

कोनः बिगड़ नहीं रहा हूँ। मेरी बला से। ये चाहें, तो सब के सब जहन्नुम में जा सकते हैं... शुक्र है भगवान् का कि मैं भी जल्द ही क़ब्र में पहुँचनेवाला हूँ... मेरा दिल डूबा सा जा रहा है।

अग्राफ़ेनाः बहुत डींग मत हाँका करो अपने क़ब्र में जाने की... आख़िर हम सभी को वहीं जाना है...

कोनः बहुत ज़हर पी चुका... अब और नहीं पी सकता! पैंसठ साल की उम्र होने लगी... मैं अब और अधिक नहीं पचा सकता झूठी और बेकार

की बातें... ज़रा ग़ौर तो करो, कैसे उन सब लोगों को इकट्ठा करके बरसात में भीगने के लिए खड़ा कर दिया गया है...

(बायीं ओर के दरवाज़े में से कप्तान बोबोयेदोव और निकोलाई प्रवेश करते हैं)

बोबोयेदोव (ख़ुश होकर): तो यह कमरा अदालत का काम देगा? बहुत ख़ूब! मेरे ख़्याल में यहाँ भी तुम सरकारी वकील के तौर पर काम कर रहे हो।

निकोलाई: सो तो है ही! कौन, कारपोरल को बुलाओ!

बोबोयेदोव: हाँ, तो अब इस तरह से सजायेंगे हम यह गुलदस्ता – बीच में होगा... अ... अ... क्या नाम है उसका?

निकोलाई: सिन्त्सोव।

बोबोयेदोव: सिन्त्सोव... बड़ा दुख होता है उसके लिए! और उसके चारों तरफ़ होंगे एक होनेवाले दुनिया भर के मेहनतकश, – क्यों?.. तबीअत ख़ुश हो जायेगी इन्हें देखकर... इस जगह का मालिक बड़ा प्यारा सा आदमी है... बहुत ही प्यारा सा! हमारी तो उसके बारे में बिल्कुल दूसरी ही राय थी। मैं इसकी भाभी को तब से जानता हूँ, जब वह वोरोनेज के थियेटर में काम करती थी... कमाल की अभिनेत्री है। **(बरामदे की तरफ़ से क्वाच अन्दर आता है)** क्या ख़बर है, क्वाच?

क्वाच: सभी की तलाशी ली जा चुकी है, सरकार!

बोबोयेदोव: और तलाशी में कुछ मिला?

क्वाच: कुछ भी नहीं... सब कुछ छिपाया जा चुका था! मैं आपको यह बताना चाहता हूँ, हुज़ूर, कि पुलिस-अध्यक्ष बहुत उतावली मचा रहा था – अच्छी तरह से तलाशी नहीं ली जा सकी।

बोबोयेदोव: इसकी तो मुझे पहले से ही उम्मीद थी! पुलिसवाले हमेशा ऐसा ही करते हैं! घरों में से तुम्हें कुछ मिला?

क्वाचः लेव्शिन के घर से कुछ चीज़ें मिली हैं। देव-प्रतिमा के पीछे पड़ी थीं, हुज़ूर।

बोबोयेदोवः सब कुछ मेरे कमरे में पहुँचा दो।

क्वाचः जो हुक्म, हुज़ूर! पल्टन से अभी अभी जो युवा सिपाही आया है...

बोबोयेदोवः तो फिर?

क्वाचः वह भी लापरवाही से काम कर रहा है।

बोबोयेदोवः इसकी फ़िक्र तुम ख़ुद करो। अच्छा, तो अब चलते-फिरते नज़र आओ! **(क्वाच चला जाता है)** बड़ा तेज़ आदमी है यह क्वाच! देखने में तो कुछ बहुत जँचता नहीं, थोड़ा बेवक़ूफ़ भी लगता है, मगर सुराग़ लगाने में एक नम्बर है! शिकारी कुत्ते की तरह तेज़ नाक है इसकी!

निकोलाईः बोग्दान देनीसोविच, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि उस क्लर्क की तरफ़ ख़ास ध्यान देना...

बोबोयेदोवः अरे हाँ! तुम बिल्कुल ठीक कहते हो! हम ख़ूब अच्छी तरह से उसके कान ऐंठेंगे, तुम कोई फ़िक्र मत करो।

निकोलाईः मैं सिन्त्सोव का नहीं, पोलोगी का ज़िक्र कर रहा हूँ। मेरे ख़्याल में उससे हमारा ख़ासा काम निकल सकता है।

बोबोयेदोवः हम जिससे अभी अभी बात कर रहे थे, उसी की चर्चा कर रहे हो न तुम? हाँ, हाँ, बेशक! हम उसे भी बीच में घसीट लेंगे...

(निकोलाई मेज़ के पास जाकर सावधानी से काग़ज़ात को ठीक-ठाक करता है)

क्लेओपात्रा (दायीं तरफ़ के दरवाज़े में से बाहर निकलकर): चाय का एक और गिलास लगे, कप्तान?

बोबोयेदोवः हाँ, धन्यवाद! अगर तकलीफ़ न हो, तो! देहात का यह इलाक़ा तो बड़ा ही प्यारा है... बड़ी सुन्दर जगह है!.. यह तो मुझे

यहीं आकर पता चला कि मदाम लुगोवाया से मेरा पुराना परिचय है! वह वोरोनेज के थियेटर में अभिनय करती थी न?

क्लेओपात्राः मेरे ख़्याल में करती थी... तलाशी में कुछ मिला आपको?

बोबोयेदोव (शान के साथ): सब कुछ मिला है! हर चीज़ मिल गयी है! हमें तो हमेशा ही हर चीज़ मिलती रहेगी! तुम कुछ चिन्ता मत करो! तलाश करने के लिए जब कुछ भी नहीं होता, तब भी सब कुछ मिल जाता है।

क्लेओपात्राः मेरे स्वर्गीय पति इन इश्तिहारों को कुछ विशेष महत्व नहीं देते थे... वह तो हमेशा यही कहते थे कि काग़ज़ी घोड़े दौड़ाने से कभी इनक़लाब नहीं हो सकता...

बोबोयेदोवः हुँ... वह बिल्कुल सही कहते थे, ऐसा तो नहीं माना जा सकता!

क्लेओपात्राः वह कहा करते थे कि इन पुर्ज़ों के ज़रिये मूर्ख लोग ही महामूर्खों को बहकाते हैं।

बोबोयेदोव (हँसते हुए): बात मजेदार है... मगर है ग़लत!

क्लेओपात्राः और अब आप देख रहे हैं कि उनके हौसले कितने बढ़ गये हैं। पहले तो वे केवल इश्तिहार ही बाँटते थे और अब गोलियाँ भी चलाने लगे हैं...

बोबोयेदोवः आप यक़ीन रखें, हम उन्हें कड़ी सज़ा देंगे—बहुत कड़ी सज़ा देंगे!

क्लेओपात्राः आपकी बात सुनकर दिल को बहुत तसल्ली होती है। आपके यहाँ पहुँचते ही मेरे दिल का बोझ हल्का हो गया है!

बोबोयेदोवः लोगों की हिम्मत बनाये रखना तो हमारा कर्तव्य है...

क्लेओपात्राः मैं आपको यह बता नहीं सकती कि ऐसे लोगों से मिलकर कितनी ख़ुशी होती है, जो ज़िन्दगी से बहुत काफ़ी सन्तुष्ट हों... ऐसे लोग तो आजकल चिराग़ लेकर ढूँढने पड़ते हैं!

बोबोयेदोवः ओह, हमारी पल्टन के तमाम फ़ौजी चुने हुए हैं!

क्लेओपात्राः तो चलिये, मेज़ की तरफ़ चलें!

बोबोयेदोव (जाते हुए): ख़ुशी से! इस साल मदाम लुगोवाया किस थियेटर में अभिनय करनेवाली हैं?

क्लेओपात्राः अफ़सोस है, मुझे इसके बारे में कुछ मालूम नहीं है।

(बरामदे की तरफ़ से तत्याना और नाद्या आती हैं)

नाद्या (उत्तेजित सी): तुमने ख़्याल किया, वह बूढ़ा लेश्चिन हमें किस तरह घूर रहा था?

तत्यानाः हाँ...

नाद्याः कारण तो मैं नही जानती, मगर न जाने क्यों मुझे यह सभी कुछ वहुत घिनौना... बहुत लज्जाजनक लग रहा है! निकोलाई वसील्येविच, यह सब बखेड़ा किसलिए खड़ा कर रखा है? किसलिए गिरफ़्तार किया गया है इन लोगों को?

निकोलाई (रूखेपन से): इन्हें गिरफ़्तार करने के लिए काफ़ी से ज़्यादा कारण हैं... और मुझे आप लोगों से यह प्रार्थना करनी ही होगी कि उस वक़्त तक बरामदे में आना-जाना बन्द कर दें, जब तक कि वे लोग वहाँ...

नाद्याः ओह... तो हम नहीं आयें-जायेंगी...

तत्याना (निकोलाई की तरफ़ देखते हुए): सिन्त्सोव को भी गिरफ़्तार कर लिया गया है?

निकोलाईः हाँ, उसे भी गिरफ़्तार कर लिया गया है।

नाद्या (कमरे में इधर-उधर टहलते हुए): सत्रह लोगों को गिरफ़्तार किया गया है! उनकी बीवियाँ फाटकों के बाहर खड़ी रो-धी रही हैं... और फ़ौजी उन्हें इधर-उधर धकेलते हुए उनकी खिल्ली उड़ा रहे हैं! फ़ौजियों से इतना तो कह दो कि उनके साथ क़ायदे से पेश आयें!

निकोलाईः मेरा इससे कोई सरोकार नहीं है। फ़ौजियों का इन्चार्ज है लेफ़्टीनेन्ट स्त्रेपेतोव।

नाद्याः मैं ख़ुद जाकर उससे कहती हूँ...

(दायीं तरफ़ से बाहर चली जाती है। तत्याना मुस्कराकर मेज़ के पास आती है)

तत्यानाः सुनो तो, क़ानूनी क़ब्र, – यही कहता है न जनरल तुम्हें?..

निकोलाईः जनरल की बातें कुछ ख़ास दिलचस्प नहीं होतीं। उसके मज़ाक़ दोहराने में कुछ मज़ा नहीं है।

तत्यानाः ओह, नहीं। मुझसे ग़लती हो गयी। क़ानूनी क़ब्र नहीं, तुम तो क़ानूनी कफ़न हो – जनरल ने तो तुम्हें यही उपाधि दे रखी है। पसन्द है न?

निकोलाईः इस वक़्त मैं मज़ाक़ के मूड में नहीं हूँ।

तत्यानाः तो मुझे यह विश्वास दिलाना चाहते हो कि तुम बहुत ही गम्भीर हो?..

निकोलाईः मैं तुम्हें यह याद दिलाना चाहता हूँ कि अभी कल ही मेरे भाई की हत्या की गयी है।

तत्यानाः तो तुम्हें इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है?

निकोलाईः मैं माफ़ी चाहता हूँ, मगर...

तत्याना (व्यंग्यपूर्ण ढंग से हँसते हुए): पाखण्ड मत करो! भाई की मौत का तुम्हें ज़रा भी अफ़सोस नहीं है... तुम्हें कभी और किसी के लिए अफ़सोस नहीं होता है... तुम मुझे ही ले लो। मुझे भी कभी किसी बात का अफ़सोस नहीं होता। रही मौत की बात – और सो भी अगर अकस्मात ही हो जाये – तो उससे एक धक्का सा ज़रूर लगता है... मगर मैं तुम्हें यह विश्वास दिला सकती हूँ कि सही मानों में, सच्चे दिल से तुम्हें

अपने भाई के लिए घड़ी भर भी अफ़सोस नहीं हुआ... तुम उस मिट्टी के बने ही नहीं हो!

निकोलाई (अपने पर संयम करते हुए) : यह भी ख़ूब रही। आख़िर तुम मुझसे चाहती क्या हो?

तत्याना: तुमने क्या कभी यह महसूस नहीं किया कि हम दोनों की आत्मायें एक जैसी हैं, उनमें बहुत नज़दीकी रिश्ता है? नहीं महसूस किया, न? बड़े दुख की बात है! मैं अभिनेत्री हूँ, मुझमें एहसास नाम की कोई चीज़ नहीं, मेरी आत्मा मर चुकी है, मेरे अन्दर सिर्फ़ एक ही चाह बनी रहती है—जैसे भी हो, बढ़िया अभिनय करने का मौक़ा पाने की चाह। मेरी तरह तुम भी संगदिल हो, बढ़िया सा अभिनय करने का मौक़ा ढूँढने के लिए परेशान रहते हो। मुझे सच-सच बताओ, क्या तुम सही मानी में सरकारी वकील हुआ चाहते हो?

निकोलाई (धीरे से): मैं चाहता हूँ कि तुम इस बात की चर्चा बन्द कर दो...

तत्याना (थोड़ा रुककर हँसते हुए): मुझे नीति बिल्कुल नहीं आती। मैं आयी तो थी... तुम्हें लुभाने के लिए, ख़ुश करने के लिए... मगर सामने आते ही शुरू हो गयी खरी-खोटी सुनाने... तुम हमेशा ही मुझे उलटी तरफ़ चलने के लिए मजबूर कर देते हो, हमेशा ही मैं तुम्हें चोट पहुँचाने लगती हूँ... मैं चाहे तुम्हें बैठे देखती हूँ या खड़े, किसी से बातचीत करने पाती हूँ या लोगों के बारे में राय ज़ाहिर करते, मगर मैं हमेशा ही ऐसा करने के लिए मजबूर हो जाती हूँ... मैं तुमसे यह पूछना चाहती थी...

निकोलाई (ज़रा हँसकर): तुम क्या पूछना चाहती थीं, मैं इसका अनुमान लगा सकता हूँ!

तत्याना: शायद। मगर मेरे ख़्याल में अब काफ़ी देर हो चुकी है।

निकोलाई: तुम चाहे जब भी पूछतीं, नतीजा तो एक ही निकलता। बात यह है कि मिस्टर सिन्त्सोव इस मामले में बुरी तरह फँसा हुआ है।

तत्याना: मैं समझती हूँ कि मुझे यह बताकर तुम अपने कलेजे में ठण्ड महसूस कर रहे होगे?

निकोलाई: सो तो ज़ाहिर ही है... मैं छिपाना नहीं चाहता।

तत्याना (निःश्वास छोड़कर): इसी से तो यह पता चलता है कि किस तरह हम एक ही डाल के पंछी हैं। मैं भी बहुत कमीनी और नीच हूँ... अच्छा, यह तो बताओ कि सिन्त्सोव पूरी तरह तुम्हारे क़ब्ज़े में है?.. मेरा मतलब ख़ास तुम्हारे क़ब्ज़े से है...

निकोलाई: हाँ, मेरे क़ब्ज़े में है!

तत्याना: और अगर मैं उसे छोड़ देने के लिए तुमसे कहूँ तो?

निकोलाई: कुछ भी फ़ायदा नहीं होगा।

तत्याना: अगर मैं सच्चे दिल से, बहुत ज़ोरदार कहूँ, तो भी?

निकोलाई: कुछ भी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा इससे... तुम तो मुझे हैरान किये दे रही हो।

तत्याना: क्या सचमुच तुम्हें हैरानी हो रही है? भला वह क्यों?

निकोलाई: तुम एक ख़ूबसूरत औरत हो... और काफ़ी सूझ-बूझ भी रखती हो। तुम्हारा अपना अच्छा-ख़ासा व्यक्तित्व है... तुम्हारे लिए तो अनगिनत मौक़े हैं बड़े आराम की और मज़े की ज़िन्दगी गुज़ारने के... फिर भी तुम इस जैसे दो कौड़ी के आदमी के चक्कर में पड़ी हुई हो! जनून एक बीमारी है। और हर सभ्य आदमी तुम्हारी इस हरकत पर नाराज़गी ज़ाहिर करेगा... रूप का परवाना और औरतों का दीवाना कोई भी आदमी तुम्हें ऐसा करने के लिए माफ़ नहीं करेगा!

तत्याना (जिज्ञासा से उसे देखते हुए): तो मुझे यह फ़तवा दे ही दिया तुमने... बड़े अफ़सोस की बात है! और सिन्त्सोव के बारे में तुम्हें क्या कहना है?

निकोलाई : वह भला आदमी आज रात तक सीकचों के पीछे पहुँच जायेगा।

तत्याना: तो यह तय है?

निकोलाई: हाँ।

तत्याना: एक औरत के लिए भी कोई रियायत नहीं? मुझे इसपर विश्वास नहीं होता! अगर मै चाहती ही, तो तुम सिन्त्सोव को ज़रूर छोड़ देते।

निकोलाई (विक्षुब्ध होकर): देख लो चाहकर... कोशिश करके।

तत्याना: सो तो मै कर ही नही सकती। ऐसा तो मैं करना ही नहीं जानती.... मगर मुझे एक बात सच सच बताओ, – ज़िन्दगी में एक बार सच बोलना तो मुश्किल न होना चाहिए, – तुम उसे छोड़ दोगे न?

निकोलाई (ज़रा रुककर): मैं नही जानता...

तत्याना: मै जानती हूँ! **(विराम, वह एक निःश्वास छोड़ती है)** कैसे घटिया इनसान हैं हम दोनों...

निकोलाई: कुछ तो ऐसी बातें हैं ही, जिन्हें औरत में भी माफ़ नहीं किया जा सकता!

तत्याना (लापरवाही से): ओह, तो कौनसा आसमान गिर पड़ा है? यहाँ सिर्फ़ हम दोनों ही तो हैं... कोई हमारी बात नहीं सुन सकता। मुझे अपने आपसे और तुमसे यह कहने का अधिकार प्राप्त है कि हम दोनों...

निकोलाई: कृपया चुप रहो... मैं और सुनना नहीं चाहता...

तत्याना (शान्त भाव से और अपनी बात पर जोर देते हुए): ख़ैर, यह तो हक़ीक़त ही है कि तुम अपने असूलों के मुक़ाबले में किसी औरत के चुम्बन को अधिक महत्व देते हो!

निकोलाई: मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि तुम्हारी और बातें सुनना नहीं चाहता।

तत्याना (शान्त भाव से): तो फिर चलते बनो। यक़ीनन मैं भी तुम्हें रोकना नहीं चाहती।

(वह तेज़ी से बाहर चला जाता है। तत्याना अपने चारों ओर शाल लपेटती है, शाल लपेटकर कमरे के बीचोंबीच आ खड़ी होती है और बाहर बरामदे को देखने लगती है। दायीं ओर से नाद्या और लेफ़्टीनेन्ट अन्दर आते हैं)

लेफ़्टीनेन्ट: मैं आपको वचन देता हूँ कि कोई फ़ौजी कभी भी किसी नारी का अपमान नहीं करेगा! फ़ौजी तो नारी को देवी का रूप मानता है...

नाद्या: ख़ैर, तुम अपनी आँखों से देख लोगे...

लेफ़्टीनेन्ट: असम्भव! सिर्फ़ फ़ौजी ही औरतों के साथ पुराने समय के सूरमाओं जैसा बर्ताव करते हैं...

(वे बायीं ओर के दरवाज़े की तरफ़ चले जाते हैं। पोलीना, ज़ख़ार और याकोव अन्दर आते हैं)

ज़ख़ार: बात यह है, याकोव...

पोलीना: मगर इसके सिवा और हो ही क्या सकता था?

ज़ख़ार: हम लोग सच्चाई से मुँह मोड़ लेना चाहते हैं—जो होना अनिवार्य है, उससे आँखें चुराते हैं...

तत्याना: क्या चर्चा चल रही है?

याकोव: ये लोग मेरा मरसिया पढ़ रहे हैं...

पोलीना: ओह, कितना ज़ुल्म, कैसी बेरहमी है! सभी हमारे मुँह पर कालिख पोत रहे हैं! औरों की बात तो एक तरफ़, याकोव इवानोविच, जो हमेशा ढंग से पेश आता है... आज वह भी हमारे ही माथे पर कलंक का टीका लगा रहा है। जैसे कि सिपाहियों के आने के लिए भी हम ही ज़िम्मेदार हैं! और इस फ़ौजी पुलिस को तो किसी ने भी नहीं बुलाया था—ये तो हमेशा अपने ही आप आ धमकते हैं।

ज़ख़ार: इन गिरफ़्तारियों के लिए भी तुम मुझे ही दोषी ठहरा रहे हो...

याकोवः मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहरा रहा हूँ...

ज़खारः खुले तौर पर नही, मगर मैं यह महसूस करता हूँ कि...

याकोव (तत्याना से): मै वहाँ बैठा था, जब इसने मेरे पास ग्राकर कहा – "क्या हाल है, भाई?" ग्रौर मैंने जवाब दिया – "बुरा हाल है, भाई!" बस, इतनी ही तो बात हुई है!

ज़खारः मगर क्या तुम इतना भी नहीं समझते कि जिस रूप में समाजवाद का यहाँ प्रचार किया जा रहा है, किसी दूसरी जगह ऐसा करना ग्रसम्भव है। ऐसा किया ही नही जा सकता है...

पोलीनाः राजनीति में तो सभी की दिलचस्पी होनी चाहिए, मगर समाजवाद का राजनीति से क्या सरोकार है? ज़खार के कहने का यह मतलब है ग्रौर उसका सवाल है भी ठीक!

याकोव (उदास होकर): वह बूढ़ा लेव्शिन कहाँ का समाजवादी है? वह तो ज़्यादा काम कर करके... थकान के कारण... झक्की हो गया है...

ज़खारः ये सभी झक्की हैं!

पोलीनाः भले लोगो, कुछ तो रहम करना चाहिए तुम्हें हमपर! हम लोगों ने कितनी मुसीबतें उठायी हैं!

ज़खारः तुम क्या समझते हो, मुझे दुख नहीं हुग्रा ग्रपने घर को ग्रदालत में बदला देखकर? यह सारी कारस्तानी उस निकोलाई वसील्येविच की है... मगर ऐसी दुखद घटना के बाद उससे भला बहस कौन कर सकता है!

क्लेग्रोपात्रा (तेज़ी से ग्राते हुए): सुना तुमने? हत्यारा मिल गया है... वे उसे यहाँ ला रहे हैं।

याकोव (बड़बड़ाते हुए): ग्रोह, भगवान् के लिए...

तत्यानाः कौन है वह?

क्लेग्रोपात्राः एक छोकरा है... मै बहुत ख़ुश हूँ... शायद लगेगा तो यह वहशीपन, मगर मैं ख़ुश हूँ! ग्रौर ग्रगर वह छोकरा ही है, तो मैं

तो यह भी चाहूँगी कि मुक़दमा शुरू होने से पहले उसकी हर सुबह ख़ूब-अच्छी पिटाई की जाये... निकोलाई वसील्येविच कहाँ है?.. तुमने देखा है? **(बायीं ओर के दरवाज़े की तरफ़ जाती है। वहाँ उसे जनरल मिलता है)**

जनरल (उदासी से): तो यहाँ घेरा डाले खड़े हो तुम सब लोग... अण्डे सेनेवाली मुर्ग़ियों की तरह!

ज़खार: बड़ी ही बदमज़गी हो रही है, मामा जी...

जनरल: फ़ौजी पुलिसवाले? हाँ... वह कप्तान बड़ा ही सनकी है! मैं तो चाहता हूँ कि उससे कोई मज़ाक़ करूँ... क्या वे रात को यहीं ठहर रहे हैं?

पोलीना: मेरे ख़्याल में तो नहीं... वे यहाँ रहेंगे भी तो किसलिए?

जनरल: यह तो बड़े अफ़सोस की बात है! अगर वे ठहरते, तो बड़ा सज़ा रहता... जब वह रात के वक़्त बिस्तरे में घुसता, तो मैं उसपर ठण्डे पानी की बालटी डलवाकर उसे पानी से तर-ब-तर करवा देता! मैं अपनी पलटन के कमज़ोर-दिल फ़ौजियों का यही इलाज करवाता था... पानी से तर-ब-तर किसी नंगे आदमी को इधर-उधर नाचते-टापते और चीख़ते-चिल्लाते देखने से और अधिक मज़ेदार नज़ारा क्या हो सकता है?

क्लेओपात्रा (दरवाज़े के बीच खड़ी खड़ी रहकर): ऐसी बात क्यों कह रहे हो, जनरल? कप्तान एक बाइज़्ज़त आदमी है और बड़ा मेहनती भी... यहाँ पहुँचते ही उसने क़ानून तोड़नेवालों की पकड़-धकड़ शुरू कर दी है! हमें इस बात की तारीफ़ करनी चाहिए! **(बाहर जाती है)**

जनरल: हुँ... इसके लिए तो बड़ी बड़ी मूँछों वाला हर आदमी बाइज़्ज़त है। मगर लोगों को अपनी असलियत ज़रूर जाननी चाहिए... असल बात तो यही है! यही है रहस्य आदर-सम्मान का! **(बायीं ओर के दरवाज़े से बाहर जाता है)** कोन!

पोलीना (धीरे से): ऐसे जमाती, फिरती है, जैसे कि वही सब चीज़ों की इन्चार्ज हो। ज़रा इसका बर्ताव तो देखा करो!.. कैसे अक्खड़ और बुरे ढंग से पेश आती है...

ज़खार: काश वे जल्दी जल्दी यह सारा बखेड़ा ख़त्म कर डालें! मै बुरी तरह शान्ति और चैन चाहता हूँ!

नाद्या (भागकर अन्दर आते हुए): मौसी तत्याना, वह लेफ़्टीनेन्ट तो ऐसा गधा है कि बयान भी नहीं किया जा सकता!.. मेरे ख़्याल में तो वह अपने फ़ौजियों की अच्छी मरम्मत करता है... तुम ज़रा उसे देखो तो सही, कैसे इधर-उधर दौड़ता-भागता, चीख़ता-चिल्लाता और भद्दी भद्दी सूरतें बनाता फिरता है... मौसा जी, जो हिरासत में ले लिये गये हैं, उन्हें अपनी बीवियों से मिलन की इजाज़त तो होनी ही चाहिए... गिरफ़्तार किये लोगों में से पाँच शादीशुदा है! .. बाहर जाकर उस फ़ौजी पुलिसवाले से कहिये ... वह इन्चार्ज है!

ज़खार: मगर बात यह है, नाद्या...

नाद्या: देखती हूँ कि आप तो हिल ही नहीं रहे हैं! .. जाइये, जाइये, जाकर उससे कहिये! .. उनकी बीवियाँ चीख़-चिल्ला रही हैं... जाइये तो, मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ!

ज़खार (जाते हुए): मेरे ख़्याल में तो इससे कुछ लाभ नहीं होगा...

पोलीना: तुम तो हर वक़्त सभी को परेशान करती रहती हो, नाद्या!

नाद्या: मैं नहीं, आप लोग ही सभी को परेशान करते रहते हैं...

पोलीना: हम? हम परेशान करते रहते हैं? ज़रा सोचो तो तुम...

नाद्या (भावावेश में): हाँ, हम, हम सब – मैं, तुम और मौसा जी... हम ही हैं, जो लोगों को परेशान करते रहते हैं! हम कुछ भी तो नहीं करते, मगर फिर भी हमारे कारण ही ये सिपाही आये हैं, फ़ौजी पुलिसवाले आये हैं और यह सारा बखेड़ा खड़ा हुआ है! वे लोग गिरफ़्तार कर लिये गये हैं... उनकी बीवियाँ चीख़-चिल्ला रही हैं... हम ही ज़िम्मेदार हैं इन सब पचड़ों के लिए!

तत्याना: इधर आओ, नाद्या।

नाद्या (उसके पास जाकर) : लो, आ गयी... क्या बात है?

तत्याना : बैठ जाओ और अपने को शान्त करो... तुम न तो कुछ समझती हो और न कुछ कर ही सकती हो...

नाद्या : तुम भी तो और कुछ नहीं कह सकतीं! नहीं करना चाहती मैं अपने को शान्त! नहीं करना चाहती!

पोलीना : तुम्हारी बेचारी माँ ने ठीक ही कहा था कि तुम अच्छी-ख़ासी सिरदर्दी हो।

नाद्या : हाँ, उसने जो कुछ कहा था, वह तो ठीक ही था... वह ख़ुद कमाकर अपनी रोटी खाती थी। मगर तुम... तुम क्या करती हो? किसकी कमायी रोटी खाती हो?

पोलीना : लो, फिर बहक चलीं! नाद्या, तुम मुझे यह कहने के लिए मजबूर कर रही हो कि तुम्हें अपना तौर-तरीका बदलना चाहिए... अपने बड़ों से बातचीत करते समय तुम्हे गुस्ताख़ी से पेश आने की हिम्मत ही कैसे होती है?

नाद्या : तुम लोग मुझसे बड़े नहीं हो!.. उम्र में बड़े हो—बस, इतना ही तो!

पोलीना : तत्याना, यह तुम्हारा ही किया हुआ जादू-टोना है, जो इसके सिर चढ़कर बोल रहा है! तुम्हें इसे बताना चाहिए कि यह काफ़ी बेवक़ूफ़ छोकरी है...

तत्याना : सुना तुमने? तुम बेवक़ूफ़ छोकरी हो... **(उसका कन्धा थपथपाती है)**

नाद्या : और कुछ नहीं कह सकतीं तुम!.. नहीं, और कुछ नहीं तुम्हारे पास कहने के लिए! कुछ भी नहीं! तुम तो अपने पक्ष का भी समर्थन नही कर सकतीं... कैसे लोग हो तुम! तुम कर ही क्या सकते हो? कुछ भी नहीं! बाहर तो क्या करोगे, अपने घर में भी कुछ नहीं कर सकते! कुछ भी तो नहीं कर सकते!

पोलीना (डाँटकर) : तुम जो कुछ कह रही हो, उसका मतलब भी समझती हो? . . .

नाद्या : यह सभी तरह के लोग यहाँ आकर जमा हो गये हैं– फ़ौजी पुलिसवाले, सिपाही, बड़ी बड़ी मूँछों वाले घनचक्कर। ये करते ही क्या हैं? हुक्म देते हैं, चाय पीते है, तलवारें टनटनाते हैं, एड़ियाँ बजाते हैं, क़हक़हे लगाते हुए इधर-उधर आवारागर्दी करते हैं . . . लोगों को पकड़कर डाँटते-डपटते और धमकाते हैं, औरतों को चीख़ने-चिल्लाने के लिए मजबूर करते हैं . . . और तुम? तुम्हारी यहाँ ज़रूरत ही क्या है? तुम्हें तो उन्होंने ताक़ पर उठा रखा है . . .

पोलीना : मगर तुम तो बिल्कुल बकवास किये जा रही हो! ये लोग हमारी सुरक्षा के लिए आये हैं।

नाद्या (खीझकर) : ओह, मौसी पोलीना! फ़ौजी किसी को बेवक़ूफ़ी करने से नहीं रोक सकते! सच कहती हूँ, वे नहीं रोक सकते!

पोलीना (ग़ुस्से में) : क्य-आ?

नाद्या (हाथ झटकाकर) : बिगड़ो नहीं! मेरा मतलब सभी से है! **(पोलीना तेज़ी से बाहर चली जाती है)** ओह, प्यारी मौसी तत्याना . . . लो, वह भाग खड़ी हुई! अब वह मौसा से जाकर शिकायत करेगी कि मैं बड़ी अक्खड़ हूँ, क़ाबू से बाहर हूँ . . . फिर मौसा मुझे ऐसा लम्बा-चौड़ा लेक्चर पिलायेंगे कि ऊब के मारे मक्खियाँ भी दम तोड़कर ज़मीन पर जा गिरेंगी!

तत्याना (सोचते हुए) : तुम्हारा कैसे गुज़ारा होगा इस दुनिया में, मेरी समझ में तो यही नहीं आता!

नाद्या (हाथों से जैसे सब कुछ समेटने का अभिनय करते हुए) : इस तरह नाक रगड़ रगड़कर नहीं! इस तरह तो मैं किसी क़ीमत पर भी जीना पसन्द नहीं करूँगी! मैं क्या करूँगी, यह मैं नहीं जानती . . . मगर जिस ढंग से तुम लोग निबाह रहे हो, मैं निबाह करने को तैयार नहीं हूँ!

अभी अभी मैं उस अफ़सर के साथ बरामदे में से आ रही थी... ग्रेकोव वहाँ खड़ा सिगरेट पी रहा था। वह हमें देखता रहा... उसकी आँखें तो जैसे मुस्करा रही थी। और वह यह जानता भी है कि वे लोग... उसे जेल भेजनेवाले हैं। देखा तुमने? जो लोग अपने ढंग से जीना चाहते हैं, उन्हें किसी से डर नहीं लगता... उनके होंठों पर हमेशा ख़ुशी नाचती रहती है! लेव्शिन और ग्रेकोव की तरफ़ देखकर मेरी आँखें शर्म से झुक जाती हैं... दूसरों को तो मैं जानती नहीं हूँ, मगर इन दोनों को तो मै कभी न भूल सकूँगी!.. ओह, लो, वह मूँछों वाला उल्लू इधर चला आ रहा है... घर-र-र!..

बोबोयेदोव (अन्दर आते हुए): ओह, कैसी भयानक आवाज़ है! किसे डराने की कोशिश कर रही हो?

नाद्या: डर तो मुझे लगता है तुमसे... तुम औरतों को उनके घरवालों से मिलने दोगे या नही?

बोबोयेदोव: नहीं, मैं नहीं मिलने दूँगा। मैं बड़ा दुष्ट हूँ!

नाद्या: अगर फ़ौजी पुलिसवाले हो, तो बेशक तुम दुष्ट हो। तुम औरतों को उनके घरवालों से मिलने की इजाजत क्यों नही देते?

बोबोयेदोव (नम्रता से): फ़िलहाल यह असम्भव है! बाद में, जब उन्हें जेलख़ाने भेजा जायेगा, तो मैं बीवियों को अलविदा कहने की इजाज़त दे दूँगा।

नाद्या: मगर यह असम्भव क्यों है? यह सब तुम्हीं पर तो निर्भर है,–है न?

बोबोयेदोव: मुझपर... यानी क़ानून पर।

नाद्या: क़ानून का क्या सरोकार है इससे! दे दो उन्हें इजाज़त... कृपया दे दो!

बोबोयेदोव: क्या कहा, क़ानून का क्या सरोकार है इससे? तुम भी क़ानून के ख़िलाफ़ चल रही हो? च-च!

नाद्या : इस तरह की बातें मत करो मुझसे! मैं बच्ची नहीं हूँ...

बोबोयेदोव : तो तुम अब बच्ची नहीं रहीं? सिर्फ़ बच्चे और इनक़लाबी ही तो क़ानून की ख़िलाफ़वर्ज़ी करते हैं।

नाद्या : तो मैं इनक़लाबी हूँ।

बोबोयेदोव (हँसते हुए): ओहो! तुम इनक़लाबी हो!.. तब तो मुझे तुम्हें जेल भेजना होगा... गिरफ़्तार करना होगा, जेल की सैर करवानी होगी...

नाद्या (दुखी होते हुए) : मज़ाक़ में मत उड़ाओ मेरी बात! उन्हें अपने घरवालों से मिलने दो!

बोबोयेदोव : सो तो मैं नहीं कर सकता... यह क़ानून का मामला है!

नाद्या : निरा सिर-फिरा है तुम्हारा क़ानून भी!

बोबोयेदोव (गम्भीर होकर): हुँ... ऐसे न कहना चाहिए तुम्हें! तुम तो बच्ची न होने का दावा कर रही हो न? तुम्हें यह समझना चाहिए कि क़ानून वही बनाते हैं, जिनके हाथों में हुकूमत की बागडोर होती है। और बिना क़ानूनों के कभी कोई देश क़ायम नहीं रह सकता।

नाद्या (गुस्से में आकर) : क़ानून, हुकूमत की बागडोर, देश!.. मगर भगवान् के लिए यह तो बताओ कि क्या ये सभी चीज़ें लोगों के लिए, जनता के लिए नहीं बनायी जातीं?

बोबोयेदोव : ख़ैर, हाँ... हाँ... बेशक! यानी सब से पहले व्यवस्था बनाये रखने के लिए!

नाद्या : जहाँ लोग चीख़ते-चिल्लाते हैं, वह व्यवस्था ज़रूर ही बेढंगी है। अगर लोग शिकवा-शिकायत करने के लिए मजबूर होते हैं, तो न तो हमें हुकूमत की ज़रूरत है और न राष्ट्र ही की! राष्ट्र... क्या हिमाकत है! हमें क्या अचार डालना है राष्ट्र का? **(दरवाज़े की तरफ़ जाती है)**

राष्ट्र! जिन बातों की लोगों को जानकारी नहीं होती, जाने वे उनकी चर्चा ही क्यों करते हैं?

(बाहर जाती है। बोबोयेदोव हतप्रभ सा रह जाता है)

बोबोयेदोव (तत्याना से): ग़ज़ब की लड़की है! मगर सोचने का ढंग ज़रा ख़तरनाक है... लगता है कि इसके मौसा ज़रा आज़ाद ख़्यालों के आदमी हैं। ठीक कहता हूँ न मैं?

तत्याना: यह तो तुम्हें मुझसे बेहतर मालूम होना चाहिए। आज़ाद ख़्याल होना किसे कहते हैं, मैं तो यह भी नहीं जानती।

बोबोयेदोव: अच्छा, आप यह भी नहीं जानतीं? यह तो सभी जानते हैं!.. जिनके हाथ में हुकूमत की बागडोर हो, उनसे नफ़रत करना इसे ही तो कहते हैं आज़ाद ख़्याल होना!.. पर ख़ैर, हटाइये इस विषय को! मैंने आपको वोरोनेज में देखा है, मदाम लुगोवाया.. हाँ, सच कहता हूँ, मैं तो लट्टू था आपके अभिनय पर! अभिनग क्या करती हैं आप, बस कमाल करती हैं! हो सकता है कि आपने मुझे देखा भी हो—मैं तो हमेशा उप-राज्यपाल के पास वाली सीट पर बैठता था। उन दिनों मैं प्रशासन में सहायक अधिकारी के रूप में काम कर रहा था।

तत्याना: तो यह बात है... मगर मुझे कुछ याद नहीं आ रहा... मेरे ख़्याल में फ़ौजी पुलिसवाले तो सभी शहरों में रहते हैं।

बोबोयेदोव: ओह, हाँ! सभी शहरों में! कोई भी तो शहर इसका प्रतिवाद नहीं है! और मैं आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि हम अधिकारी लोग ही कला के सच्चे उपासक हैं। हाँ, शायद सौदागर भी। उदाहरण के रूप में उपहार-अभिनय दिवस की ही बात ले लीजिये... अपनी मनपसन्द अभिनेत्री के लिए उपहार ख़रीदनेवालों के नामों की सूची में फ़ौजी पुलिस के अफ़सरों के नाम तो ज़रूर ही होते हैं। या यों कहा

जा सकता है कि हम लोगों के साथ तो यह परम्परा सी बन गयी है! अगर हर्ज न हो, तो इतना बता दीजिये कि इस साल आप किस जगह अभिनय करने की सोच रही हैं?

तत्याना : मैंने अभी तक फ़ैसला नहीं किया... मगर ख़ैर, इतना निश्चित ही है कि यह अभिनय होगा किसी शहर में ही, जहाँ कला के सच्चे उपासक रहते हैं!.. मुझे लगता है कि इसके सिवा तो कोई चारा ही नहीं है।

बोबोयेदोव (बात न समझते हुए): ओह, हाँ, बिल्कुल ठीक! वे तो आपको हर शहर में ही मिल जायेंगे! आख़िर लोग अधिक कलाप्रेमी भी तो होते जा रहे हैं...

क्वाच (बरामदे में से): हुज़ूर! वे उस आदमी को ला रहे हैं... उसे, जिसने गोली चलायी थी! किस जगह आप उसे पेश करने का हुक्म देते हैं?

बोबोयेदोव : यहाँ, अन्दर... उन सभी को यहाँ अन्दर ले आओ! सरकारी वकील को भी बुलाओ। **(तत्याना से)** मैं माफ़ी चाहता हूँ! कुछ देर तो मुझे अपना काम-काज देखना ही होगा।

तत्याना : क्या तुम उनसे कुछ सवाल पूछोगे?

बोबोयेदोव (नम्रता से): यूँ ही, बस कम से कम, और सो भी दिखावे के लिए—जरा जान-पहचान करने के लिए ... बस, एक तरह से उनकी हाज़िरी ही लूँगा!

तत्याना : मै खड़ी रह सकती हूँ?

बोबोयेदोव : हुँ... ऐसा अक्सर होता तो नहीं... राजनैतिक मुक़दमों में तो ऐसा बिल्कुल नहीं किया जाता। मगर क्योंकि यह फ़ौजदारी का मुक़दमा है, दूसरे यह कि हम अपने स्थान पर नहीं हैं और फिर मैं यह भी चाहता हूँ कि आप इसका मज़ा ले सकें, इसलिए कोई हर्ज नहीं है...

तत्याना : किसी की मुझपर नज़र न पड़ सकेगी... मैं यहाँ से ही देखती रहूँगी।

बोबोयेदोव: बहुत ठीक! आपके अभिनय से जो सुख मिलता रहा है, मुझे ख़ुशी है कि मैं कुछ तो बदला चुका पा रहा हूँ उसका। मुझे अभी जाकर कुछ काग़ज़ात लाने होंगे।

(वह बाहर जाता है। दो अधेड़ उम्र के मज़दूर र्याब्त्सोव को बरामदे में से अन्दर लाते हैं। उनके साथ साथ कोन है, वह चोरी चोरी क़ैदी की आँखों में आँखें डालकर देखता है। उनके पीछे पीछे लेव्शिन, यागोदिन, ग्रेकोव और दूसरे मज़दूर हैं। फिर फ़ौजी पुलिसवाले आते हैं।)

र्याब्त्सोव (ग़ुस्से से): तुम लोगों ने मेरे हाथ क्यों बाँध दिये हैं? खोल दो इन्हें... सुनते हो?

लेव्शिन: खोल भी दो इसके हाथ, भले लोगो!.. किसलिए इसका अपमान कर रहे हो?

यागोदिन: यह कहीं भागकर जाने से तो रहा!

मज़दूरों में से एक: हम मजबूर हैं! क़ानून इस बात की माँग करता है कि हम इसके हाथ बाँधे रखें...

र्याब्त्सोव: मैं यह बरदाश्त नहीं कर सकता! खोल दो मेरे हाथ!

दूसरा मज़दूर (क्वाच से): क्या, खोल दें, सरकार? बेचारा है तो बड़ा चुपचाप सा... हमें तो विश्वास भी नहीं होता कि यह हत्यारा...

क्वाच: बहुत अच्छा! खोल दो इसके हाथ!

कोन (अचानक ही): अरे, यह तो तुम ग़लत आदमी को पकड़ लाये हो!.. जब गोली चली थी, उस वक़्त यह तो नदी पर था... मैंने इसे अपनी आँखों से देखा था और जनरल ने भी! **(र्याब्त्सोव से)** अरे, मुँह से तो बोलो, मिट्टी के माधो! बताओ इन्हें कि तुम हत्यारे नहीं हो... बोलते क्यों नहीं?

र्याब्त्सोव (दृढ़ता से): मैंने ही चलायी थी वह गोली।

लेव्शिन: फ़ौजी, तुम्हारी अपेक्षा यह बात वह ख़ुद बेहतर जानता है...

र्याब्त्सोव: मैं ही हूँ गोली चलानेवाला।

कोन (चिल्लाते हुए): यह झूठ है! कुत्ते का पिल्ला... **(बोबोयेदोव और निकोलाई स्क्रोबोतोव प्रवेश करते हैं)** जिस वक़्त गोली चली थी, तब तुम नदी में नाव चला रहे थे और गा रहे थे... करो, अगर तुम इससे इन्कार कर सकते हो!

र्याब्त्सोव (शान्त भाव से): यह... बाद की बात है।

बोबोयेदोव: यह आदमी है?

क्वाच: जी, सरकार!

कोन: नहीं, यह नहीं है!

बोबोयेदोव: क्या? क्वाच, इस बूढ़े को बाहर ले जाओ! इसे किसने यहाँ आने दिया।

क्वाच: जनाब, यह जनरल की देख-भाल करता है!

निकोलाई (र्याब्त्सोव को ग़ौर से देखकर): ज़रा रुक जाओ, बोग्दान देनीसोविच... इसे छोड़ दो, क्वाच!

कोन: ख़बरदार, जो मुझे हाथ लगाया! मैं ख़ुद भी फ़ौजी हूँ!

बोबोयेदोव: ठीक है, छोड़ दो इसे, क्वाच!

निकोलाई (र्याब्त्सोव से): मेरे भाई की हत्या तुमने की?

र्याब्त्सोव: हाँ, मैंने।

निकोलाई: किसलिए तुमने ऐसा किया?

र्याब्त्सोव: इसलिए कि वह हमसे बुरी तरह पेश आता था।

निकोलाई: तुम्हारा नाम क्या है?

र्याब्त्सोव: पावेल र्याब्त्सोव!

निकोलाई: तो यह बात है!.. तुम क्या कह रहे थे, कोन?

कोन (परेशान होते हुए): इसने उसकी हत्या नहीं की है! जिस समय यह घटना घटी, यह नदी पर था!.. मैं क़सम खाने को तैयार हूँ!.. जनरल ने और मैंने इसे अपनी आँखों से देखा था... जनरल ने तो यह भी कहा था—"अगर हम इसकी नाव उलट दें, तो ख़ूब मज़ा

रहे न? इसे पानी में डुबकियाँ दें?".. बिल्कुल यही कहा था जनरल ने! सुनते हो न मेरी बात, अरे ओ गड़बड़ घुटाले? आख़िर तुम किया क्या चाहते हो?

निकोलाई: तुम्हें यह विश्वास कैसे है, कोन, कि हत्या के समय यह नदी पर था?

कोन: इसलिए कि जहाँ यह उस समय था, वह जगह कारख़ाने से काफ़ी दूर है। कुछ नहीं, तो कम से कम एक घण्टा तो लगता ही है वहाँ तक पहुँचने में।

र्याब्त्सोव: मैं धीरे धीरे नहीं, सिर पर पाँव रखकर भागा था।

कोन: यह नाव चला रहा था और गा रहा था। किसी आदमी का ख़ून करने के फ़ौरन बाद कभी किसी को गाते नहीं देखा गया!

निकोलाई (र्याब्त्सोव से): तुम यह तो समझते हो न कि झुठी गवाही देनेवालों या मुजरिमों को बचाने की कोशिश करनेवालों के प्रति क़ानून बड़ी सख़्ती से पेश आता है?.. यह बात अच्छी तरह समझ ली है न?

र्याब्त्सोव: मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं है।

निकोलाई: बहुत अच्छा। तो तुम्हीं ने ख़ून किया था डायेक्टर का?

र्याब्त्सोव: हाँ, मैंने ही।

बोबोयेदोव: वहशी!..

कोन: यह झूठ बोल रहा है!

लेव्शिन: तुम्हारा यहाँ कोई मतलब नहीं है, फ़ौजी!

निकोलाई: क्या कहा?

लेव्शिन: मैंने कहा कि इस आदमी की यहाँ कोई ज़रूरत नहीं है। यह यों ही टाँग अड़ाये जा रहा है...

निकोलाई: तुम्हें यह वहम कैसे हुआ कि तुम्हारी यहाँ ज़रूरत है? शायद इस ख़ून में तुम्हारा भी हाथ है?

लेव्शिन (हँसता है): मेरा हाथ है? मैं तो एक बार लाठी से एक ख़रगोश मार बैठा था—बस, बाद में हफ़्ता भर उसी के ग़म में घुलता रहा...

निकोलाई : तो अपने मुँह में ताला लगाये रहो! **(र्याब्त्सोव से)** जो पिस्तौल तुमने इस्तेमाल की थी, वह कहाँ है?

र्याब्त्सोव : मुझे मालूम नहीं।

निकोलाई : वह किस क़िस्म की थी? बयान करो!

र्याब्त्सोव (ज़रा घबराकर): किस क़िस्म की थी?.. वैसी ही, जैसी आम होती है!

कोन (ख़ुश होते हुए): कुत्ते का पिल्ला! इसने तो पिस्तौल कभी देखी ही नहीं!

निकोलाई : कितनी बड़ी थी वह? **(हाथों से आध गज़ का इशारा करता है)** इतनी लम्बी थी न?

र्याब्त्सोव : हाँ... ओह नहीं, इससे कम थी...

निकोलाई : बोग्दान देनीसोविच, ज़रा इधर आना। **(बोबोयेदोव को एक तरफ़ ले जाता है और धीमी आवाज़ में कहता है)** दाल में ज़रूर कुछ काला है। कोई बदमाशी की जा रही है। हमें इस लड़के से ज़रा ज़्यादा कड़ाई बरतनी होगी... जाँच-अफ़सर के आने तक हमें इसे कुछ न कहना चाहिए।

बोबोयेदोव : वह भला क्यों?.. वह अपने जुर्म का इक़बाल तो कर ही रहा है।

निकोलाई (समझाते हुए): इसलिए कि हम दोनों को इस बात के सही होने पर शक है। यह असली मुजरिम को बचाने की कोशिश हो रही है, चाल चली जा रही है, समझे?

(याकोव शराब के नशे में झूमता हुआ अन्दर आता है और तत्याना के नज़दीक आकर खड़ा हो जाता है। वह चुपचाप खड़ा देखता रहता है। कभी कभी उसका सिर लटक जाता है, जैसे ऊँघ रहा हो; फिर चौंककर झटके के साथ सिर ऊपर उठाता है। डरी डरी सी सूरत बनाये वह इधर-उधर देखता है)

बोबोयेदोव (बात समझे बिना ही): आह-ह-ह... हूँ... हाँ, हाँ! ज़रा ग़ौर करो!..

निकोलाई: यह एक षड्यन्त्र है, चालाकी है! सभी ने मिल-जुलकर यह जुर्म किया है...

बोबोयेदोव: बदमाश न हों तो!

निकोलाई: कारपोरल से कहो कि अब इसे बाहर ले जाये। यह हिदायत कर दो कि इसे बिल्कुल अकेली कोठरी में अलग ही रखा जाये! मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ... कोन, मेरे साथ चलो! जनरल कहाँ है?

कोन: यही कहीं मक्खियाँ मार रहा होगा...

(दोनों बाहर जाते हैं)

बोबोयेदोव: क्वाच, इसे बाहर ले जाओ और इसपर कड़ी नज़र रखना! बहुत ही कड़ी नज़र रखना, समझे!

क्वाच: जी, सरकार! चल रे, छोकरे!

लेव्शिन (बड़े स्नेह से): नमस्ते, पावेल! नमस्ते, मेरे दोस्त!..

यागोदिन (दुखी होकर): नमस्ते, पावेल!..

र्याब्त्सोव: नमस्ते... जो है, सो ठीक है!..

(वे र्याब्त्सोव को बाहर ले जाते हैं)

बोबोयेदोव (लेव्शिन से): तुम इसे जानते हो, बूढ़े मियाँ?

लेव्शिन: बेशक जानता हूँ। हम इकट्ठे काम करते हैं।

बोबोयेदोव: तुम्हारा नाम क्या है?

लेव्शिन: येफ़ीम येफ़ीमोव लेव्शिन।

बोबोयेदोव (धीरे से तत्याना से): अब ज़रा बात का रुख़ देखा जाइयेगा! **(लेव्शिन से)** लेव्शिन, तुम तो बुज़ुर्ग और सयाने आदमी हो। जो बात है, मुझे सच सच बता दो। अपने से बड़ों को तुम्हें हमेशा सच ही बताना चाहिए...

लेव्शिन: हाँ, सो तो करना ही चाहिये। मैं भला झूठ क्यों बोलने लगा?..

बोबोयेदोव (ख़ुशी से): शाबाश! अच्छा, तो मुझे ईमानदारी से यह बताओ कि तुम्हारे घर में देव-प्रतिमाओं के पीछे क्या छिपा हुआ है? याद रखना, तुम्हें सिर्फ़ सच बोलना है!

लेव्शिन (शान्त भाव से): कुछ भी नहीं।

बोबोयेदोव: क्या यही सच है?

लेव्शिन: हाँ, यही...

बोबोयेदोव: शर्म करो, लेव्शिन! तुम्हारे बाल पक गये हैं, चाँद गंजी हुई जा रही है और फिर भी तुम एक छोटे से छोकरे की तरह झूठ बोल रहे हो!.. तुम्हारी करतूतों की बात तो एक तरफ़, अफ़सर तो तुम्हारे दिल की बात भी जानते हैं। रत्ती भर तो शर्म करो, लेव्शिन! मेरे हाथ में क्या चीज़ें हैं?

लेव्शिन: मैं देख नहीं सकता... मेरी नज़र कमज़ोर है।

बोबोयेदोव: मैं तुम्हें बताता हूँ, ये क्या हैं। ये ग़ैरक़ानूनी क़रार दी गयी किताबें हैं। इनमें लोगों को अपने ज़ार के ख़िलाफ़ विद्रोह करने को उकसाया गया है। ये किताबें तुम्हारे घर से मिली हैं, देव-प्रतिमाओं के पीछे से... अब कहो, तुम्हें क्या कहना है?

लेव्शिन (शान्त भाव से): कुछ भी नहीं।

बोबोयेदोव: तो तुम यह मानते हो कि ये तुम्हारी ही हैं?

लेव्शिन: हो सकता है, मेरी ही हों... किताबें तो सभी एक जैसी होती हैं...

बोबोयेदोव: तुम बुढ़ापे में किसलिए झूठ बोल रहे हो?

लेव्शिन: मैंने तो बिल्कुल ईमानदारी से सब कुछ सच सच कह दिया है, जनाब। आपने पूछा था कि मेरे घर में देव-प्रतिमाओं के पीछे क्या है, और जैसे ही आपने यह सवाल पूछा कि मैं फ़ौरन समझ गया कि अब वहाँ कुछ भी नहीं हो सकता—जो कुछ भी था, ज़रूर आपके हाथ लग गया है। इसीलिए मैंने यह जवाब दिया था कि "कुछ भी नहीं है।"

आप मुझे शर्मिन्दा होने के लिए क्यों मजबूर कर रहे हैं? मैंने एसा तो कोई काम नहीं किया कि शर्म से आँखें नीची करूं।

बोबोयेदोव (संकोच से): तो यह है इस बारे में तुम्हारा सोचने का ढंग? मगर यह तो मुझे कहना ही होगा कि तुम बहुत चख-चख न किया करो... जो तुम्हारे हाथों उल्लू बन सकते हों, मैं उनमें से नहीं हूँ! किसने दीं तुम्हें ये किताबें?

लेव्शिन: आपको क्या लेना है यह जानकर? यह मैं नहीं बता सकता, क्योंकि मैं तो यह भी भूल चुका हूँ कि मुझे ये कहाँ से मिली थीं... आप इस छोटी सी बात के लिए बेकार ही परेशान न हों।

बोबोयेदोव: क्य-आ?... बहुत बेहतर... अलेक्सेई ग्रेकोव! तुममें से ग्रेकोव कौन है?

ग्रेकोव: मैं हूँ।

बोबोयेदोव: क्या तुम्हें स्मोलेन्स्क के कारीगरों में इनक़लाबी प्रचार के सिलसिले में गिरफ़्तार किया गया था?

ग्रेकोव: हाँ, किया गया था।

बोबोयेदोव: वाह, वाह, क्या बाँके जवान हो! और हो भी बड़े प्रतिभाशाली! तुमसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई!.. फ़ौजियो, इन लोगों को बाहर बरामदे में ले जाओ... यहाँ बड़ी घुटन हो रही है। याकोव वीरीपायेव? बहुत ख़ूब... आन्द्रेई स्विस्तोव?

(फ़ौजी पुलिसवाले इन्हें बरामदे में ले जाते हैं और बोबोयेदोव हाथ में सूची लिये वहाँ आता है)

याकोव (धीरे से): मुझे ये लोग पसन्द हैं!

तत्याना: यह मैं समझती हूँ। मगर ये लोग हर चीज़ को बहुत साधारण, बहुत मामूली क्यों समझते हैं?.. ये ढीली-ढाली आवाज़ में क्यों बोलते हैं, बझी बूझी आँखों से क्यों देखते हैं? भला क्यों? क्या इनमें जोश नाम की कोई चीज़ नहीं? अपनी मर्दानगी क्यों नहीं दिखाते?

याकोव : इसलिए कि वे अपने उद्देश्य को न्यायोचित समझते हैं और इसमें उनका सहज विश्वास है...

तत्याना : यह तो हो नहीं सकता कि उनमें जोश न हो या वे बहादुरी न दिखाना चाहते हों!.. मैं यह साफ़ तौर पर महसूस करती हूँ कि वे हममें से किसी को भी ख़ातिर में नहीं लाते हैं!

याकोव : वह लेव्शिन ख़ूब कमाल का आदमी है!.. उसकी आँखें कैसी उदास उदास, स्नेहमयी और सयानी हैं। वह तो यह कहता लगता है—"मियाँ, इन बातों में क्या रखा है? क्या ही अच्छा हो कि तुम हमारे रास्ते से हट जाओ... हमें हमारी आज़ादी दे दो... काश तुम हमारे मार्ग में रोड़ा बनना छोड़ दो!"

ज़ख़ार (दरवाज़े में से झाँकते हुए): ये भले लोग, जो क़ानून के ठेकेदार बने फिरते हैं, कमाल के बेवक़ूफ़ हैं! ख़ूब बढ़िया मुक़दमे का ढोंग रच डाला है इन्होंने... निकोलाई वसील्येविच तो विश्व-विजेता बना फिरता है...

याकोव : तुम्हें तो सिर्फ़ इतना ही एतराज़ है न, ज़ख़ार, कि यह सारा क़िस्सा तुम्हारी आँखों के सामने हो रहा है?

ज़ख़ार : हाँ, अगर ये लोग मुझे इस ख़ुशी के काम में हिस्सा लेने से बख़्श देते, तो अच्छा रहता!.. नाद्या का दिमाग़ तो बिल्कुल चल निकला है... वह पोलीना और मेरे साथ गुस्ताख़ी से पेश आयी, क्लेओपात्रा को उसने 'काटखानी बिल्ली' कहा और अब मेरे कमरे में सोफ़े पर पड़ी हुई रो रोकर बुरा हाल किये जा रही है... सिर्फ़ भगवान् ही जानता है कि यह सब क्या हो रहा है!..

याकोव (सोचते हुए): मैं तो हर घड़ी अधिक से अधिक हताश होता जा रहा हूँ, ज़ख़ार।

ज़ख़ार : मुझे तुमसे हमदर्दी है... मगर हमारे सामने दूसरा रास्ता ही कौनसा था? जब एक आदमी पर हमला किया जाता है, तो उसे

अपना बचाव करना ही पड़ता है। घर का एक भी कोना अब ऐसा नहीं रहा, जिसे घर कहा जा सके... हर जगह गड़बड़ मची हुई है! और बरसात ने तो और भी तबीअत झख कर दी है—सब कुछ सीला सीला और ठण्डा ठण्डा लग रहा है!.. पतझड़ का मौसम भी कितनी जल्दी शुरू हो गया है!

(निकोलाई और क्लेओपात्रा बड़े उत्तेजित से अन्दर आते हैं)

निकोलाई : अब मुझे पक्का यक़ीन हो गया है कि उन मज़दूरों ने उसे रिश्वत देकर साथ मिला लिया है...

क्लेओपात्रा : यह बात ख़ुद उन्हें न सूझ सकती थी... इनके पीछे ज़रूर कोई सुलझा हुआ दिमाग़ काम कर रहा है।

निकोलाई : सिन्त्सोव पर शक है न तुम्हें?

क्लेओपात्रा : उसके सिवा और हो ही कौन सकता है? आह, कप्तान बोबोयेदोव...

बोबोयेदोव (बरामदे में से दाख़िल होते हुए): हाज़िर हूँ आपकी सेवा में!

निकोलाई : मुझे पक्का यक़ीन हो चुका है कि उस लड़के को रिश्वत देकर साथ मिलाया गया है... **(फुसफुसाकर बात करता है)**

बोबोयेदोव (धीरे से) : ओह-ह! हुँ, हुँ...

क्लेओपात्रा (बोबोयेदोव से): बात समझ गये न?

बोबोयेदोव : हुँ... ज़रा ख़्याल करो! बदमाश न हों कहीं के!

(निकोलाई और कप्तान ऊँचे ऊँचे बातचीत करते हुए दोहरे दरवाज़ों से बाहर जाकर ग़ायब हो जाते हैं। क्लेओपात्रा इधर-उधर देखती है और उसे तत्याना दिखाई देती है)

क्लेओपात्रा : ओह... तो तुम यहाँ हो!

तत्याना : क्यों, क्या कोई और बात हो गयी?

क्लेओपात्रा : मेरे ख़्याल में तुम्हें तो किसी बात से कुछ फ़र्क़ ही नहीं पड़ता... सिन्त्सोव के बारे में तुमने कुछ सुना?

तत्याना : हाँ, सुना।

क्लेओपात्रा (चुनौती सी देती हुई): उसे गिरफ़्तार कर लिया गया है! मैं ख़ुश हूँ कि आख़िर उन्होंने कारख़ाने का सारा कूड़ा-करकट साफ़ कर डाला है... तुम भी ख़ुश हो न?

तत्याना : मैं क्या महसूस करती हूँ, मेरे ख़्याल में तुम्हें तो इसमें कोई दिलचस्पी है नहीं...

क्लेओपात्रा (ईर्ष्या-युक्त ख़ुशी से): तुम्हें तो उस सिन्त्सोव से हमदर्दी थी न! **(तत्याना की तरफ़ देखकर उसके चेहरे पर नर्मी का भाव आ जाता है)** यह तुम आज कैसी अजीब सी सूरत बनाये हो... चेहरा उतरा उतरा लग रहा है... भला यह क्यों?

तत्याना : मौसम का असर लगता है।

क्लेओपात्रा (उसके पास जाकर): सुनो... शायद ऐसा करना है तो मूर्खता... मगर मैं तो हमेशा अपने दिल की बात कह ही डालती हूँ!.. मैंने बहुत ज़िन्दगी देखी-भाली है! मुसीबतों की चक्की में भी बहुत पिसी हूँ... और इसीलिए बहुत चिड़चिड़ी हो गयी हूँ! मैं यह जानती हूँ कि सिर्फ़ औरत ही औरत की दोस्त हो सकती है...

तत्याना : मुझसे कुछ पूछना चाहती हो क्या?

क्लेओपात्रा : पूछना नहीं, बताना चाहती हूँ! मैं तुम्हें पसन्द करती हू... तुम लोगों से मिलती-जुलती हो खुलकर, बिना लज्जा-संकोच के। लिबास पहनती हो, तो वह ढंग से... और मर्दों से मिलती हो, तो बिना किसी झिझक के। मुझे तुम्हारी चाल और तुम्हारे बातचीत के अन्दाज़ से ईर्ष्या होती रहती है... मगर कभी कभी तुम मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगतीं... इतना ही नहीं, नफ़रत भी होने लगती है मुझे तुमसे!

तत्याना : यह ख़ूब दिलचस्प बात है। नफ़रत क्यों होने लगती है?

क्लेओपात्रा (अजीब सी आवाज़ में): तुम हो कौन?

तत्याना: यानी?

क्लेओपात्रा: मैं यह ही समझ नहीं पाती कि तुम हो कौन? मैं लोगों की सही सही तसवीरें देखता चाहती हूँ और साफ़ तौर पर यह जानना चाहती हूँ कि वे चाहते क्या हैं? मुझे लगता है कि जो लोग अपने उद्देश्य को साफ़ तौर पर नहीं जानते, वे ख़तरनाक होते हैं! उनपर विश्वास नहीं किया जा सकता!

तत्याना: यह बड़ी अटपटी बात कही तुमने! मुझे अपनी राय बताने की तुम्हें क्या ज़रूरत पड़ी थी?

क्लेओपात्रा (घबराकर और तेज़ी से): लोगों को घी-खिचड़ी होकर रहना चाहिए, ताकि वे एक दूसरे पर विश्वास कर सकें! इतना भी नहीं देख सकतीं कि हो क्या रहा है? वे हमें ख़त्म किये दे रहे है! वे हमें लूट लेना चाहते हैं! जो लोग गिरफ़्तार किये गये हैं, उनके चेहरों पर क्या तुमने चोरों के से आसार नहीं देखे? ओह, वे जानते हैं कि उनकी मंज़िल कहाँ है! वे घुल-मिलकर रहते हैं, एक दूसरे पर भरोसा करते हैं... मैं उनसे नफ़रत करती हूँ और मुझे उनसे डर लगता है! इधर हम हैं कि एक दूसरे का गला काटने पर तुले रहते हैं, किसी चीज़ में विश्वास नहीं करते, किसी बन्धन, किसी सूत्र में बँधना नहीं जानते, सभी अपने अपने लिये जीते हैं... हम फ़ौजी पुलिसवालों और सिपाहियों के आसरे जीते हैं—वे अपने बाज़ुओं के बल पर... वे लोग हमसे अधिक शक्तिशाली हैं!

तत्याना: मैं भी तुमसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ... तुम अपने पति के साथ रहकर ख़ुश थीं?

क्लेओपात्रा: तुम यह किसलिए पूछ रही हो?

तत्याना: यों ही। जिज्ञासावश!

क्लेओपात्रा (घड़ी भर सोचकर): नहीं। वह दूसरे ही झंझटों में बुरी तरह उलझा रहता था। मेरी सुध लेने का उसके पास समय ही नहीं था...

पोलीना (अन्दर आते हुए) : सुना तुमने? अब पता चला है कि वह क्लर्क सिन्त्सोव एक समाजवादी है! और ज़ख़ार तो उसे सब कुछ बता देता था। वह तो उसे सहायक मुनीम भी बनाना चाहता था! पर ख़ैर, यह तो कोई ख़ास बड़ी बात नहीं है, मगर ज़रा सोचो तो कि ज़िन्दगी कितनी उलझ-उलझा गयी है! हमारे जन्मजात शत्रु हर घड़ी हमारे साथ साथ लगे रहते हैं और हमें कभी भूलकर उनपर सन्देह तक भी नहीं हो पाता!

तत्याना : शुक्र है भगवान् का कि मैं अमीर नहीं हूँ!

पोलीना : जब बुढ़ापे से कमर झुक जायेगी, तब तुम ऐसा नहीं कहोगी! **(धीरे से)** क्लेओपात्रा पेत्रोव्ना, वे नाप लेने का इन्तज़ार कर रहे हैं... उन्होंने क्रेप भेज दी है...

क्लेओपात्रा : बहुत अच्छा... मेरा दिल तो ज़ोरों से धक-धक कर रहा है... कुछ भी तो सहन नहीं होता मुझसे!

पोलीना : अगर चाहो, तो मैं तुम्हें तुम्हारे दिल के लिए थोड़ी सी दवाई दे सकती हूँ। ज़रूर ही तुम्हें उससे फ़ायदा होगा।

क्लेओपात्रा (बाहर जाते हुए): बड़ी मेहरबानी तुम्हारी!..

पोलीना : मैं अभी पल भर में तुम्हारे पास आ रही हूँ। **(तत्याना से)** हमें और भी अधिक प्यार से पेश आना चाहिए इसके साथ—प्यार का तो मरहम जैसा असर होता है दिल के घावों पर! मैं बहुत ख़ुश हू कि तुमने इससे बातचीत की... मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है, तत्याना... तुम्हें ख़ूब बढ़िया ढंग आता है बीच का रास्ता अपनाने का! तुम हमेशा ही मज़े में रहती हो!.. मैं अभी जाकर उसे थोड़ी सी दवाई देती हूँ।

(अकेली रह जाने पर तत्याना बरामदे की तरफ़ देखती है, जहाँ फ़ौजियों ने गिरफ़्तार किये गये लोगों को एक क़तार में खड़ा किया है। याकोव दरवाज़े में से झाँकता है)

याकोव (खिसियाते हुए): मैं बहुत देर से यहाँ खड़ा खड़ा जासूसी कर रहा हूँ।

तत्याना (अनमने मन से): लोग कहते हैं कि जासूसी करना भला काम नहीं है...

याकोव: आम तौर पर भी लोगों की बातें सुनना बहुत ही ग़ैर-दिलचस्प काम है। इनसान को तरस आने लगता है उन लोगों पर... अच्छा, तत्याना! मैं जा रहा हूँ...

तत्याना: कहाँ जा रहे हो?

याकोव: फ़िलहाल तो यह नहीं जानता... नमस्ते!

तत्याना (स्नेह से): नमस्ते!.. मुझे ख़त लिखना!

याकोव: इस जगह तो अब दम घुटने लगा है!

तत्याना: कब जा रहे हो तुम?

याकोव (अजीब ढंग से मुस्कराते हुए): आज... शायद तुम भी चली जाओगी?

तत्याना: हाँ, मेरा भी यही इरादा है। तुम मुस्करा क्यों रहे हो?

याकोव: कोई ख़ास बात तो नहीं... हो सकता है कि अब हम कभी न मिलें...

तत्याना: यह कैसी फ़ज़ूल की बात कह रहे हो!

याकोव: माफ़ी चाहता हूँ! **(तत्याना उसका माथा चूमती है। उसे दूर हटाते हुए धीरे से हँसता है)** तुमने मुझे इस तरह से चूमा है, जैसे कि मैं ज़िन्दा इनसान नहीं लाश हूँ...

(वह धीरे धीरे बाहर चला जाता है। तत्याना उसे देखती है, उसका मन होता है कि उसके पीछे पीछे जाये, मगर वह अपने पर क़ाबू पा लेती है और हाथ से हल्का सा एक संकेत करके रह जाती है। नाद्या अन्दर आती है। उसके हाथ में छाता है)

नाद्या : मेरे साथ ज़रा बगीचे तक चली चलो, बड़ी मेहरबानी होगी... रो रोकर मेरा तो सिर फटने लगा है... बिल्कुल सिरफिरों की तरह रोती रही हूँ! अकेली रहने पर तो मैं फिर से रोना शुरू कर दूँगी।

तत्याना : तुम रोती किसलिए हो, गुड़िया? रोने की तो कोई बात ही नहीं है!

नाद्या : सभी कुछ गड़बड़ हुआ पड़ा है। कुछ सिर-पैर समझ में नहीं आता। जाने ठीक कौन है? मौसा कहते हैं कि वह ठीक हैं.. मगर मुझे उनपर विश्वास नहीं होता! मौसा क्या रहमदिल आदमी हैं? पहले तो मुझे विश्वास था कि वे रहमदिल हैं, मगर अब नहीं जानती... जब वह मुझसे बात करते हैं, तो मुझे लगता है कि मैं ख़ुद दुष्टा और बुद्धू हूँ, और जब मैं उनके बारे में कुछ सोचती हूँ और अपने आपसे तरह तरह के सवाल पूछती हूँ तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता!

तत्याना (उदास होकर): अगर तुम अपने आपसे सवाल पूछने लगोगी, तो क्रान्तिकारी हो जाओगी... तुम उस तूफ़ान की कभी ताब न ला सकोगी, मेरी रानी!..

नाद्या : ख़ैर, कुछ तो बनना ही है मुझे—या कि नहीं? **(तत्याना धीरे से हँसती है)** तुम हँस किसलिए रही हो? बेशक मुझे कुछ तो बनना ही है! यह तो हो नहीं सकता कि कोई आदमी उम्र भर बुद्धू बना रहे, मुँह बाये बाये घूमता रहे!

तत्याना : मैं इसलिए हँस रही हूँ कि आज सभी लोग कुछ न कुछ बनने की बात करने लगे हैं... सभी लोग अचानक ही!

(वे बाहर जाती हैं और रास्ते में उन्हें जनरल और लेफ़्टीनेन्ट मिलते हैं। लेफ़्टीनेन्ट आदर के साथ उनके रास्ते से हट जाता है)

जनरल : लड़ाई की तैयारी करना बहुत ज़रूरी चीज़ है! इससे दो मसले हल होते हैं... **(नाद्या और तत्याना से)** और तुम लोगों की सवारी किधर चली?

तत्याना : बगीचे की तरफ़।

जनरल : अगर तुम्हें रास्ते में कहीं वह क्लर्क मिल जाये... अ...अ...अ...क्या नाम है उसका? लेफ़्टीनेन्ट, क्या नाम है उस आदमी का, जिससे थोड़ी देर पहले मैंने तुम्हारा परिचय कराया था?

लेफ़्टीनेन्ट : पोलोगी, जनाब!

जनरल (तत्याना से) : उसे मेरे पास भेज देना। मैं खाने के कमरे में कोगनाक और लेफ़्टीनेन्ट के साथ चाय पीने जा रहा हूँ...हा-हा-हा! **(अपने मुँह पर हाथ रखकर एक अपराधी की भाँति इधर-उधर देखता है)** धन्यवाद लेफ़्टीनेन्ट। ख़ूब है तुम्हारी याददाश्त! ख़ूब! बहुत ख़ूब! अफ़सर को तो अपनी पलटन के हर सिपाही का नाम और सूरत याद होनी चाहिए। फ़ौजी जब नया नया भर्ती होकर आता है, तो अच्छा-ख़ासा मक्कार और वहशी होता है—मक्कार, मूर्ख और सुस्त। अफ़सर उसकी चमड़ी के अन्दर घुसकर उसे नयी शक्ल देता है। उसे वहशी से इनसान बनाता है—अपना कर्तव्य समझनेवाला एक समझदार आदमी बनाता है...

(ज़ख़ार परेशान सा अन्दर आता है)

ज़ख़ार : मामा जी, आपने कहीं याकोव को देखा?

जनरल : नहीं, मैंने तो नहीं देखा...क्या अन्दर चाय तैयार है?

ज़ख़ार : हाँ! **(जनरल और लेफ़्टीनेन्ट बाहर चले जाते हैं। कोन खीझा और ग़ुस्से से भरा हुआ बरामदे की तरफ़ से अन्दर आता है)** कोन, तुमने मेरा भाई देखा है?

कोन (उदास होकर) : नहीं। आज से मैंने अपने मुँह में ताला लगा लिया है। अगर मैंने देखा भी है, तो भी मैं हामी नहीं भरूँगा... मुझे जो कुछ कहना-सुनना था, कह-सुन चुका... धन्यवाद!..

पोलीना (अन्दर आकर) : वे किसान फिर आये हैं। कहते हैं कि उनका लगान स्थगित कर दिया जाये।

ज़ख़ार : ख़ूब वक़्त चुना है उन्होंने भी!..

पोलीना : वे शिकायत कर रहे हैं कि फ़सल अच्छी नहीं हुई है। इसलिए उनके पास लगान अदा करने के लिए कुछ भी नहीं है।

ज़खार : रोते रहना तो उनकी आदत ही है! .. तुमने कहीं याकोव को तो नही देखा?

पोलीना : नहीं। उनसे क्या कहूँ मैं?

ज़खार : किसानों से? उन्हें दफ़्तर में भेज दो... मैं उनसे बात नहीं करना चाहता!

पोलीना : मगर दफ़्तर में तो कोई है ही नही! आप तो जानते ही हैं कि हर चीज़ गड़बड़ हुई पड़ी है। लगभग दोपहर के खाने का वक़्त होने लगा है, मगर वह कप्तान है कि चाय पर चाय माँगता जा रहा है... समोवर सुबह से अब तक खाने के कमरे में ही उबल रहा है। हम तो अच्छे-ख़ासे पागलख़ाने में रह रहे है!

ज़खार : तुम्हें मालूम है कि याकोव के दिमाग़ में अचानक ही यहाँ से चले जाने की धुन सवार हो गयी है?

पोलीना : मुझे कहना तो नहीं चाहिए, पर हुआ यह अच्छा ही है...

ज़खार : वैसे तो ख़ैर, तुम ठीक ही कहती हो। पिछले कुछ अरसे से वह हमें बहुत ही तंग करने लगा था—हर वक़्त उल्टी-सीधी बातें करता था... अभी थोड़ी ही देर पहले वह मुझसे ज़ोर दे देकर पूछ रहा था कि क्या मेरी पिस्तौल से एक कौआ भी मर सकता है या नहीं? बहुत ही बदतमीज़ी से पेश आ रहा था। फिर वह अचानक ही चला गया और पिस्तौल भी अपने साथ ले गया... वह तो चौबीसों घण्टे नशे में धुत्त रहता है...

(सिन्त्सोव दो फ़ौजियों और क्वाच की निगरानी में बरामदे की तरफ़ से अन्दर आता है। पोलीना लोर्नेट्टे में से उसे देखकर बाहर चली जाती है। ज़खार घबराकर अपनी ऐनक के शीशे ठीक करता है और बात करते हुए पीछे की ओर हट जाता है)

ज़खार (तिरस्कार करते हुए): बड़े दुख की बात है, मिस्टर सिन्त्सोव!.. बहुत अफ़सोस है मुझे... बेहद ही!

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए): आप बिल्कुल परेशान न हों... ऐसी कोई बात नहीं है।

ज़खार: ख़ैर, बात है तो! लोगों को एक दूसरे से हमदर्दी होनी चाहिए... चाहे मेरे विश्वासपात्र ने मुझसे विश्वासघात ही क्यों न किया हो, बुरे दिनों का शिकार होने पर उससे हमदर्दी करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ... कम से कम मेरा तो यही दृष्टिकोण है! अच्छा, नमस्ते, श्रीमान सिन्त्सोव!

सिन्त्सोव: नमस्ते।

ज़खार: तुम्हें मुझसे तो कोई शिकायत नहीं है, न?

सिन्त्सोव: बिल्कुल कोई शिकायत नहीं है।

ज़खार (घबराकर): बहुत ठीक। अच्छा, नमस्ते! तुम्हारी तनख़्वाह तुम्हें भेज दी जायेगी... **(बाहर जाते हुए)** नाक में दम हो गया है! मेरा घर तो घर ही नही रहा, फ़ौजी पुलिस का अड्डा बन गया है!

(सिन्त्सोव चटखारा भरता है। क्वाच बड़े ध्यान से उसे घूरता रहता है, विशेष रूप से उसके हाथ की तरफ़। सिन्त्सोव उलटे उसे घूरता है। क्वाच सहसा मुस्कराता है।)

सिन्त्सोव: हाँ तो, ऐसी क्या दिलचस्प बात है?

क्वाच (खुश होकर): कुछ नहीं... बिल्कुल कुछ नहीं!

बोबोयेदोव (अन्दर आकर): श्रीमान सिन्त्सोव, तुम्हें शहर भेजा जा रहा है।

क्वाच (खुश होकर): हुज़ूर, यह तो श्रीमान सिन्त्सोव है ही नहीं! यह तो बिल्कुल दूसरा ही आदमी है!..

बोबोयेदोव : क्या कहा? साफ़ साफ़ बात करो!

क्वाच : मैं इसे जानता हूँ। यह ब्र्यान्स्क कारख़ाने में काम करता था। वहाँ इसका नाम मक्सिम मार्कोव था!.. जनाब, दो बरस पहले हमने इसे वहाँ गिरफ़्तार किया था!.. इसके बायें अंगूठे का नाखून ग़ायब है! अब अगर यह कोई दूसरा नाम रखे फिर रहा है, तो ज़रूर ही जेल से भाग आया है!

बोबोयेदोव (आश्चर्यचकित होकर, ख़ुशी से): क्या यह सच है, श्रीमान सिन्त्सोव?

क्वाच : बिल्कुल सच है, सरकार!

बोबोयेदोव : तो तुम सिन्त्सोव हो ही नही! ख़ूब, ख़ूब, बहुत ख़ूब...

सिन्त्सोव : मैं कोई भी क्यों न होऊँ, तुम्हें तो मुझसे शराफ़त का बर्ताव करना ही होगा... यह याद रखना!

बोबोयेदोव : ओहो! यह तो ज़ाहिर ही है कि तुम्हारा उल्लू बनाना आसान नहीं है। क्वाच, तुम ही इसे अपनी निगरानी में रखना!.. ख़ूब चौकन्ने रहना!

क्वाच : आप बिल्कुल इत्मीनान रखें, सरकार!

बोबोयेदोव (ख़ुश होकर): हाँ तो, श्रीमान सिन्त्सोव, या ख़ैर कुछ भी हुआ तुम्हारा नाम, हम तुम्हें शहर भेज रहे हैं। **(क्वाच से)** शहर पहुँचते ही अफ़सरों को इसके बारे में जो कुछ जानते हो, सब कुछ बता देना। फ़ौरन ही इसका पुलिस-रिकार्ड तलब करना... मगर मेरे ख़्याल में मेरा ख़ुद जाना ही बेहतर होगा! तुम यहीं ठहरो, क्वाच... **(जल्दी से बाहर जाता है)**

क्वाच (ख़ुशी से): तो यहाँ फिर मुलाक़ात हो गयी!

सिन्त्सोव (मुस्कराते हुए): तुम्हें ख़ुशी हो रही है न?

क्वाच : ख़ुशी क्यों न होगी? पुरानी जान-पहचान जो ठहरी!

सिन्त्सोव (नफ़रत से): मैं तो सोचता था कि अब तक तुम्हारा जी भर चुका होगा। तुम्हारे बाल पक गये हैं, मगर तुम अभी तक एक कुत्ते की तरह लोगों का पीछा करते रहते हो... क्या तुम्हें यह बहुत घटिया काम नहीं लगता?

क्वाच (अपनत्व से): ओह, मुझे इसकी आदत हो चुकी है! तेईस बरस से इसी रास्ते पर चलता जा रहा हूँ... और सो भी एक कुत्ते की तरह बिल्कुल नहीं! बड़े बड़े अधिकारी मेरा लोहा मानते हैं, बड़ी इज़्ज़त करते हैं—सम्मान-पदक देने का वचन दे रखा है उन्होंने मुझे! अब तो वे निश्चित ही मुझे वह पदक दे डालेंगे!

सिन्त्सोव: मेरे पकड़े जाने की ख़ुशी में?

क्वाच: हाँ! तुम भागे किस जगह से थे?

सिन्त्सोव: वक़्त आने पर तुम्हें पता लग जायेगा।

क्वाच: वह तो ख़ैर हम पता लगा ही लेंगे! वह आदमी याद है तुम्हें—ऐनक और काले बालों वाला, ब्रयान्स्क कारख़ाने में काम करता था? वह—सावीत्स्की? मेरे ख़्याल में वह अध्यापक था। उसे भी हमने दोबारा गिरफ़्तार कर लिया था। अभी कुछ ही समय पहले की बात है... मगर वह जेल में दम तोड़ गया... बहुत बीमार था वह! आख़िर गिने-गिनाये मुट्ठी भर लोग ही तो हो तुम!

सिन्त्सोव (सोचते हुए): चन्द दिन और सब्र करो... बहुत वक़्त न लगेगा इस आग के फैलने में!

क्वाच: सुनकर बहुत ख़ुशी हुई! जितने अधिक राजनैतिक क़ैदी होंगे, हमारा तो उतना ही अधिक भला होगा!

सिन्त्सोव: उतने ही अधिक इनाम मिलेंगे, क्यों?

(दरवाज़े के बीचोंबीच बोबोयेदोव, जनरल, लेफ़्टीनेन्ट, क्लेओपात्रा और निकोलाई दिखाई देते है)

निकोलाई (सिन्त्सोव की तरफ़ देखते हुए): न जाने क्यों, पर मुझे तो इसकी आशा ही थी... **(ग़ायब हो जाता है)**

जनरल: ख़ूब कमाल का आदमी निकला यह तो!

क्लेओपात्रा: अब तो बिल्कुल ज़ाहिर हो गया है कि लोगों को उकसाने-भड़कानेवाला कौन था!

सिन्त्सोव (व्यंग्य करते हुए): कप्तान, यह तुम जो कुछ कर रहे हो, क्या बहुत भद्दा नहीं है?

बोबोयेदोव: अपने से ऊँचों को सिखाने-पढ़ाने के फेर में मत पड़ो!

सिन्त्सोव (ज़ोर देकर): मगर यह तो मैं करूँगा ही! बन्द करो यह वाहियात नाटक!

जनरल: सुना तुमने?

बोबोयेदोव (चिल्लाते हुए): क्वाच! ले जाओ इसे यहाँ से!

क्वाच: जी, सरकार! **(सिन्त्सोव को वहाँ से ले जाता है)**

जनरल: है तो शेर का बच्चा ही!.. दहाड़ता भी है!

क्लेओपात्रा: मुझे पक्का यक़ीन है कि यह सारी आग इसी की लगायी हुई है!

बोबोयेदोव: यह मुमकिन है... बहुत मुमकिन है!

लेफ़्टीनेन्ट: मुक़दमा चलाया जायेगा क्या?

बोबोयेदोव (मुस्कराते हुए): ओह, नहीं! हम तो इन्हें नमक-मिर्च लगाये बिना ही डकार जायेंगे... ऐसे ही काफ़ी मज़ेदार हैं ये तो!

जनरल: मज़ेदर मछली की तरह!

बोबोयेदोव: हम जल्द ही शिकार पर हाथ साफ़ करके आपको इस बक-झक से निजात दिला देंगे! निकोलाई वसील्येविच, तुम कहाँ हो?

(सभी बाहर जाते हैं। बरामदे की तरफ़ से पुलिस-अध्यक्ष दाख़िल होता है)

पुलिस-अध्यक्ष (कोन से): क्या शनाख़्त यहाँ अन्दर होगी?

कोन (मरी आवाज़ में) मुझे मालूम नहीं... मुझे कुछ भी मालूम नहीं!

पुलिस-अध्यक्षः मेज़, काग़ज़ात . . . ज़ाहिर है कि शनाख़्त यहीं अन्दर ही होगी! **(बरामदे में किसी को पुकारता है)** इन सब को यहाँ अन्दर ले आओ! **(कोन से)** मरनेवाले से ग़लती हुई – उसने तो यह बताया था कि किसी लाल सिर वाले ने गोली चलायी है, मगर मुजरिम निकला काले सिर वाला!

कोन (बड़बड़ाते हुए): ग़लतियाँ तो जिन्दा रहनेवालों से भी होती हैं . . .

(वे फिर से गिरफ़्तार किये हुए लोगों को अन्दर लाते हैं)

पुलिस-अध्यक्ष: वहाँ खड़ा कर दो इन्हें . . . क़तार बनाकर! बुड्ढे, तुम क़तार के आख़िर में खड़े हो जाओ! तुम्हें क्या अपना आप देखकर शर्म नहीं आती, शैतान बुड्ढे?

ग्रेकोव: तुम इस क़िस्म की गन्दी ज़बान का इस्तेमाल क्यों कर रहे हो?

लेव्शिन: तुम इसकी कुछ परवाह मत करो, अलेक्सेई! वह इस क़ाबिल ही कहाँ है कि इसकी परवाह की जाये?..

पुलिस-अध्यक्ष (धमकाते हुए): पता लग जायेगा तुम्हें!

लेव्शिन: इसी बात की तो वह तनख़्वाह पाता है . . . लोगों की बेइज़्ज़ती करने की।

(निकोलाई और बोबोयेदोव अन्दर आते हैं और मेज़ के गिर्द बैठे जाते हैं। जनरल कोने में पड़ी हुई एक आरामकुर्सी में जम जाता है और लेफ़्टीनेन्ट उसके पास खड़ा हो जाता है। क्लेओपात्रा और पोलीना दरवाज़े के बीच खड़ी हो जाती है। बाद में तत्याना और नाद्या भी वहीं आ खड़ी होती हैं। ज़ख़ार दुखी होकर उनके कन्धों के ऊपर से देखता है। पोलीना हिचकिचाता हुआ और सम्भल सम्भलकर अन्दर आता है, मेज़ के गिर्द बैठे लोगों को नमस्कार करता है और घबराहट में कमरे के बीच ही जाता है। जनरल उसे इशारा करता है। वह पंजों के खड़ा हो बल चलता हुआ जनरल की आरामकुर्सी के पास चला जाता है और वहीं खड़ा हो जाता है। वे र्याब्त्सोव को अन्दर लाते हैं)

निकोलाई : सावधान ! कार्यवाही शुरू होती है ! पावेल र्याब्त्सोव !

र्याब्त्सोव : कहिये ?

बोबोयेदोव : " कहिये " नहीं, गधे, बल्कि यह कहो – " जी, सरकार ! "

निकोलाई : क्या तुम अब भी अपनी बात पर अड़े हो कि डायरेक्टर के क़ातिल तुम्हीं हो ?

र्याब्त्सोव (ग़ुस्से से): वह तो मैं पहले ही कह चुका हूँ... और अब क्या चाहते हो तुम मुझसे ?

निकोलाई : अलेक्सेई ग्रेकोव को तुम जानते हो ?

र्याब्त्सोव : वह कौन है ?

निकोलाई : वह, जो तुम्हारे साथ खड़ा है !

र्याब्त्सोव : वह हमारे साथ काम करता है।

निकोलाई : तुम्हारी इससे जान-पहचान है न ?

र्याब्त्सोव : जानते-पहचानते तो हम सभी एक दूसरे को हैं।

निकोलाई : यह तो मैं समझता हूँ। मगर क्या तुम उसके घर आते-जाते हो ? फ़ालतू समय होने पर क्या तुम उसके साथ बैठते-उठते हो ?.. दूसरे शब्दों में क्या तुम उससे काफ़ी घुले-मिले हो ? क्या तुम्हारी अच्छी दोस्ती है इससे ?

र्याब्त्सोव: समय होने पर मैं इसके साथ ही नहीं, इन सभी के साथ रहता हूँ। हम सभी दोस्त हैं।

निकोलाई : सच कह रहे हो ? मेरे ख़्याल में तो तुम झूठ बोल रहे हो ! मिस्टर पोलोगी, मेहरबानी करके हमें इतना बताओ कि र्याब्त्सोव और ग्रेकोव के बीच किस क़िस्म के सम्बन्ध हैं ?

पोलोगी : इन दोनों के बीच काफ़ी पक्की दोस्ती है... इस जगह दो दल हाज़िर हैं। जवान लोगों के दल का मुखिया है ग्रेकोव। यह आदमी अपने अफ़सरों के प्रति काफ़ी गुस्ताख़ी भरा रवैया रखता है। बड़ी उम्र

के लोगों के दल का नेता येफ़ीम लेव्शिन है... यह शख़्स लोमड़ी की तरह मक्कार है और बड़ी ऊटपटाँग बातें करता है...

नाद्या (धीरे से): शैतान न हो तो!

(पोलोगी घूमकर नाद्या की तरफ़ देखता है और फिर निकोलाई पर प्रश्नसूचक दृष्टि डालता है। निकोलाई भी नाद्या की तरफ़ देखता है)

निकोलाई: बयान जारी रखो!

पोलोगी (उसाँस लेकर): इन दोनों दलों के बीच की कड़ी है मिस्टर सिन्त्सोव। सिन्त्सोव का इन सभी से बहुत अच्छा सम्बन्ध है। मिस्टर सिन्त्सोव औसत दर्जे का दिमाग़ रखनेवाला साधारण आदमी नही है। वह तरह तरह की किताबें पढ़ता है और हर चीज के बारे में अपना दृष्टिकोण रखता है। यहाँ मैं यह भी कहना चाहूँगा कि इसका फ़्लैट मेरे फ़्लैट से सटा हुआ है और उसमें तीन कमरे हैं...

निकोलाई: ये छोटी-मोटी बातें तुम छोड़ सकते हो...

पोलोगी: मैं माफ़ी चाहता हूँ... मगर बात की तह तक पहुँचने के लिए इन बातों का ज़िक्र ज़रूरी है! सभी तरह के लोग इसके फ़्लैट में आते-जाते हैं। उनमें से कुछ लोग यहाँ भी हाजिर हैं, जैसे कि ग्रेकोव...

निकोलाई: ग्रेकोव, क्या यह सच है?

ग्रेकोव (शान्त भाव से): मुझसे कोई सवाल न पूछा जाये – मैं जवाब देने को तैयार नहीं हूँ।

निकोलाई: कुछ फ़ायदा नहीं होगा इससे!

नाद्या (ऊँची आवाज़ में) शाबाश, ग्रेकोव!

क्लेओपात्रा: यह क्या हो रहा है?

ज़ख़ार : नाद्या, मेरी प्यारी बेटी!..

बोबोयेदोव : शी...

(बाहर बरामदे में गड़बड़ मच जाती है)

निकोलाई : जिन लोगों का यहाँ कोई काम नहीं, उनके यहाँ ठहरने की क्या ज़रूरत है, यह मेरी समझ में नहीं आता...

जनरल : हुँ... "जिन लोगों का यहाँ कोई काम नही" – इससे क्या मतलब है तुम्हारा?

बोबोयेदोव: क्वाच, जाओ, जाकर देखो, यह शोर कैसा है?

क्वाच : हुज़ूर, कोई ज़बरदस्ती अन्दर आने की कोशिश कर रहा है! वह तरह तरह की क़समें खा रहा है और जैसे-तैसे अन्दर घुसना चाहता है!

निकोलाई : वह चाहता क्या है? है कौन?

बोबोयेदोव : जाओ, जाकर मालूम करो!

पोलोगी : मैं अपना बयान जारी रखूँ या बन्द कर दूँ?

नाद्या : नीच कही का!

निकोलाई : तुम थोड़ी देर के लिए अपना बयान बन्द कर दो... जिन लोगों का यहाँ कोई सरोकार नहीं, मुझे उन्हें बाहर जाने के लिए कहना होगा!

जनरल : मुझे इसका मतलब क्या समझना चाहिए!..

नाद्या (ज़ोर से चिल्लाते हुए): यह सिर्फ़ तुम्हीं हो, जिसका यहाँ कोई सरोकार नहीं है! मैं नहीं, तुम ही हो! तुम्हारी कहीं भी किसी को जरूरत नहीं... यह मेरा घर है! मुझे इस बात का हक़ हासिल है कि तुम्हें यहाँ से बाहर निकल जाने का हुक्म दूँ...

ज़ख़ार (उत्तेजित होकर): तुम फ़ौरन यहाँ से बाहर चली जाओ!.. सुनती हो मेरी बात, फ़ौरन से पेशतर चली जाओ!

नाद्या : आप सच कह रहे हैं? अच्छा, तो मैं चली जाती हूँ!.. हाँ, तब तो सचमुच ही मेरी यहाँ ज़रूरत नहीं है! मैं चली जाऊँगी, मगर जाने से पहले यह बताना चाहती हूँ...

पोलीना: इसे मना कीजिये... वरना यह ज़रूर ही कोई भयानक बात कह डालेगी!

निकोलाई (बोबोयेदोव से): फ़ौजियों से कह दो कि दरवाज़े बन्द कर दें!

नाद्या: तुम लोगों के पास न आत्मा है, न दिल है... तुम सब नफ़रत के लायक़ हो... कमीने हो...

क्वाच (ख़ुश ख़ुश अन्दर आता है): हुज़ूर! एक और अपने जुर्म का इक़बाल करना चाहता है!

बोबोयेदोव : क्या?

क्वाच : एक और क़ातिल अपने आपको पेश करना चाहता है!

(लम्बी मूँछों और लाल बालों वाला लड़का सा अकीमोव धीरे धीरे मेज़ की तरफ़ बढ़ता है)

निकोलाई (सहसा चौंककर): क्या चाहते हो?

अकीमोव : डायरेक्टर का क़ातिल मैं हूँ।

निकोलाई: तुम?

अकीमोव : हाँ, मैं।

क्लेओपात्रा (धीरे से): ओ... कमीने! तो तुम्हारे पास आत्मा भी है!..

पोलीना : हे भगवान्! ये कैसे भयानक लोग हैं!

तत्याना (शान्त भाव से) आख़िर जीत इन्हीं लोगों की होगी!

अकीमोव (उदास होकर): हाँ, तो मैं हाज़िर हूँ! ख़ुश हो अब तो तुम लोग?

(सभी लोग हतप्रभ हो जाते हैं। निकोलाई बोबोयेदोव के कान में कुछ फुसफुसाता है। बोबोयेदोव घबराया सा मुस्कराता है। गिरफ़्तार किये हुए लोग चुपचाप और निश्चल खड़े रहते हैं। नाद्या दरवाज़े में खड़ी खड़ी अकीमोव को देखती है और ज़ोर ज़ोर से रोती है। पोलीना और ज़खार कुछ खुसुर-फुसुर करते हैं। सन्नाटे में तत्याना की धीमी सी आवाज़ साफ़ सुनाई देती है)

तत्याना (नाद्या से): रोओ नहीं—आख़िर जीत इन्हीं लोगों की होगी!

लेव्शिन: च-च, अकीमोव! तुम्हें यह न करना चाहिए था...

बोबोयेदोव: ख़ामोश!

नाद्या (अकीमोव से): तुमने ऐसा क्यों किया? क्यों किया तुमने ऐसा?

लेव्शिन: चिल्लाइये नहीं, हुज़ूर। मैं आपसे उम्र में बड़ा हूँ।

अकीमोव (नाद्या से): तुम कुछ नहीं समझतीं,—बेहतर यही है कि बाहर चली जाओ...

क्लेओपात्रा: और यह शैतान बूढ़ा कैसा महात्मा बना फिर रहा था!

बोबोयेदोव: क्वाच!

लेव्शिन: अब तुम इन्तज़ार किस बात का कर रहे हो, अकीमोव? सब कुछ कह क्यों नहीं देते? बताते क्यों नहीं कि कैसे डायरेक्टर ने तुम्हारी छाती पर पिस्तौल रख दी थी, और इसीलिए तुमने...

बोबोयेदोव (निकोलाई से): सुना तुमने, यह बूढ़ा फ़रेबी इसे क्या पट्टियाँ पढ़ा रहा है?

लेव्शिन: मैं फ़रेबी नहीं हूँ...

निकोलाई: हाँ तो, र्याब्त्सोव, क्या हाल-चाल है अब तुम्हारा?

र्याब्त्सोव: बिल्कुल ठीक-ठाक है...

लेव्शिन : मुँह् से एक शब्द भी मत निकालो ! मुँह् में ताला लगा लो। ये बहुत चालाक लोग हैं। शब्दों का ये लोग हमसे कहीं अधिक अच्छा इस्तेमाल करना जानते हैं...

निकोलाई (बोबोयेदोव से): निकाल बाह्र करो इसे !

लेव्शिन : ओह्, नहीं। अब तुम यह न कर सकोगे ! धक्के देकर हमें बाह्र न निकाल सकोगे ! लद गये अब वे ज़माने—तुम्हारी गुण्डागर्दी के ! बहुत अरसे तक अन्धेरे में रख लिया हमें हमसे हमारे अधिकार छीनकर ! अब तो हमारे दिलों में एक ज्वाला धधक चुकी है ! तुम्हारी धमकियाँ इस ज्वाला को कभी नहीं बुझा सकेंगी ! कभी कभी न बुझा सकेंगी इस ज्वाला को तुम्हारी धमकियाँ, तुम्हारी ये गीदड़भभकियाँ !

परदा गिरता है

१९०६